उत्तर प्रदेश सरकार

Transform Rural India

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान

उम्मीद से उद्यम तक

सफलता की कहानियां

KBR
MEN FOOTWEAR
Payments Bank
BHIM UPI

भूपेन्द्र सिंह चौधरी
मंत्री
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम
उत्तर प्रदेश

कार्यालय, मुख्य भवन
उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ
कक्ष संख्या-82ए/बी प्रथम तल
दूरभाष : (का.) 0522 2213307
(आ.) 0522 2238917
E-mail : cab.minister.msme@gmail.com

दिनांक 28/07/2026

संदेश

उत्तर प्रदेश आज उद्यमिता, नवाचार और आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रदेश सरकार के नेतृत्व में युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के साथ-साथ उन्हें रोजगार सृजक (Job Creator) बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (CM YUVA) प्रारंभ किया गया है। यह अभियान युवाओं के सपनों को साकार करने का एक व्यापक प्रयास है।

मेरा विश्वास है कि प्रदेश का प्रत्येक युवा अपनी प्रतिभा, मेहनत और नवाचार की क्षमता के बल पर एक सफल उद्यमी बन सकता है, आवश्यकता केवल उचित मार्गदर्शन, समय पर वित्तीय सहयोग और अनुकूल वातावरण की होती है। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान इन्हीं आवश्यकताओं को पूरा करते हुए युवाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर रहा है। इस अभियान के माध्यम से प्रदेश के हजारों युवाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने उद्यम स्थापित किए हैं। इन उद्यमों ने न केवल लाभार्थियों को आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी सृजित किए हैं।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस पुस्तक में ऐसे प्रेरणादायी युवा उद्यमियों की सफलता गाथाओं का संकलन किया गया है, जिन्होंने चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए अपने परिश्रम और दृढ़ संकल्प से नई पहचान बनाई है। ये कहानियाँ यह संदेश देती हैं कि यदि सही अवसर और उचित सहयोग मिले तो उत्तर प्रदेश का युवा किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है।

मुझे विश्वास है कि यह संकलन प्रदेश के युवाओं, विद्यार्थियों, नवोदित उद्यमियों तथा समाज के सभी वर्गों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। यह पुस्तक अनेक युवाओं को अपने सपनों को साकार करने तथा आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करेगी।मैं मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान से जुड़े सभी विभागों, बैंकों, तथा सहयोगी संस्थाओं के प्रयासों की सराहना करता हूँ और इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भूपेन्द्र सिंह

लाभ

शशि भूषण लाल सुशील
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव

अर्द्धशा0प0सं0: 06/एम0एस0एम0ई0/2026-27
सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्यम एवं
निर्यात प्रोत्साहन विभाग,
उत्तर प्रदेश शासन।
फोन नं0 0522-2226115, 222116
ई-मेल – psmsmeup@gmail.com
दिनांकः: 31 जुलाई, 2026

संदेश

उत्तर प्रदेश के युवाओं के सपनों को नई उड़ान दे रहा है मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान। उत्तर प्रदेश देश का सबसे युवा राज्य है। यहाँ की युवा शक्ति केवल रोजगार की आकांक्षा नहीं रखती, बल्कि रोजगार सृजित करने की क्षमता भी रखती है। इसी सोच को साकार करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार ने **मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (CM YUVA)** की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य युवाओं को स्वरोजगार एवं उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है।यह अभियान केवल वित्तीय सहायता प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं को प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, तकनीकी सहयोग, बाजार से जुड़ाव तथा विभिन्न विभागों एवं संस्थानों के अभिसरण (Convergence) के माध्यम से एक समग्र उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र उपलब्ध कराता है। बिना ब्याज ऋण सुविधा एवं उद्यम स्थापना में सहयोग ने हजारों युवाओं के लिए अपने व्यवसाय की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त किया है।

CM YUVA ने प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में युवाओं, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों, पारंपरिक कारीगरों तथा नवाचार आधारित उद्यमियों को अपने सपनों को साकार करने का अवसर दिया है। इस अभियान के माध्यम से अनेक युवा न केवल आत्मनिर्भर बने हैं, बल्कि अपने साथ अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न कर रहे हैं। यह बुकलेट ऐसे ही प्रेरणादायी उद्यमियों की वास्तविक सफलता गाथाओं का संकलन है। इन कहानियों में संघर्ष, नवाचार, आत्मविश्वास और सफलता की वह यात्रा समाहित है, जो यह सिद्ध करती है कि सही मार्गदर्शन, समय पर वित्तीय सहयोग और दृढ़ संकल्प के साथ कोई भी युवा अपने सपनों को साकार कर सकता है।

हमें विश्वास है कि इन सफलता कथाओं से प्रदेश के लाखों युवा प्रेरणा प्राप्त करेंगे, उद्यमिता को अपने करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे तथा "रोजगार मांगने वाले" से "रोजगार देने वाले" बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान इसी परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनकर उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर, समृद्ध एवं उद्यमशील राज्य बनाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

आइए, इन प्रेरक कहानियों के माध्यम से उस नए उत्तर प्रदेश की झलक देखें, जहाँ हर युवा का सपना अवसर से जुड़ता है और हर उद्यम विकास की नई कहानी लिखता है।

शशि भूषण लाल सुशील

कार्यालय– कमरा नं0–107/108, प्रथम तल, सी ब्लाक, लोक भवन, उ0प्र0 सचिवालय।

लेबलिंग
ARISTO
EXTRA STRON
Besan
Besan

के. विजयेन्द्र पांडियन
आई. ए. एस.
आयुक्त एवं निदेशक उद्योग, उ.प्र.

उद्योग निदेशालय, उ.प्र.
जी.टी. रोड, कानपुर - 208 002
दूरभाष : (का.) 0512-2218401
: (नि.) 0512-2562120
फैक्स : 0512-2234956
ई-मेल : dikanpur@up.nic.in

प्रस्तावना

कभी-कभी एक सही अवसर किसी युवा के जीवन की दिशा बदल देता है। उत्तर प्रदेश सरकार ने इसी विश्वास के साथ मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (CM YUVA) की शुरुआत की, ताकि प्रदेश का प्रत्येक युवा केवल रोजगार की तलाश करने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला उद्यमी बन सके।उत्तर प्रदेश देश की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला राज्य है। यहाँ के युवाओं में प्रतिभा, नवाचार और परिश्रम की कोई कमी नहीं है। आवश्यकता केवल ऐसे सशक्त मंच की थी, जो उन्हें वित्तीय सहायता, मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोग उपलब्ध करा सके। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने इसी आवश्यकता को पूरा करते हुए युवाओं के सपनों को नई दिशा देने का कार्य किया है।

इस अभियान के माध्यम से हजारों युवाओं ने अपने स्वयं के उद्यम स्थापित किए हैं। कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, विनिर्माण, सेवा, व्यापार, डिजिटल सेवाएँ, महिला उद्यमिता, फ्रेंचाईजी विजनेस तथा स्थानीय संसाधनों पर आधारित अनेक क्षेत्रों में नए उद्यम विकसित हुए हैं। इन उद्यमों ने न केवल लाभार्थियों को आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी सृजित किए हैं। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की सबसे बड़ी विशेषता इसका (Convergence) दृष्टिकोण है, जिसके अंतर्गत विभिन्न विभागों, वित्तीय संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थाओं तथा उद्योग जगत के सहयोग से युवाओं को उद्यम स्थापना की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सहायता प्रदान की जा रही है। यह अभियान केवल ऋण उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं को एक सफल उद्यमी बनने तक निरंतर सहयोग प्रदान करता है।

इस किताब में संकलित सफलता की कहानियाँ इसी परिवर्तन की सशक्त मिसाल हैं। ये केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों का विवरण नहीं हैं, बल्कि आत्मविश्वास, नवाचार, संघर्ष और दृढ़ संकल्प की प्रेरक यात्राएँ हैं। प्रत्येक कहानी यह संदेश देती है कि यदि अवसर, मार्गदर्शन और संकल्प एक साथ मिल जाएँ, तो कोई भी युवा अपने सपनों को साकार कर सकता है।मुझे विश्वास है कि यह संकलन प्रदेश के लाखों युवाओं को उद्यमिता के लिए प्रेरित करेगा तथा उन्हें आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करेगा। यही मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की सबसे बड़ी सफलता है और यही इस पुस्तक का उद्देश्य भी है।

हर कदम उद्यमिता की ओर, हर युवा आत्मनिर्भरता की ओर

(के. विजयेन्द्र पांडियन)

संपादकीय दृष्टि

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान उत्तर प्रदेश के युवाओं की उद्यमशील क्षमता को पहचानने, उसे प्रोत्साहित करने और स्वरोज़गार के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण पहल है। इस अभियान का उद्देश्य केवल नए उद्यम स्थापित करना नहीं, बल्कि ऐसे सक्षम युवा उद्यमियों का निर्माण करना है, जो स्थानीय स्तर पर नवाचार, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास के वाहक बन सकें।

इस अभियान के क्रियान्वयन के दौरान प्रदेश के विभिन्न जनपदों में अनेक ऐसे प्रेरणादायक युवा उद्यमियों से मिलने का अवसर मिला, जिन्होंने सीमित संसाधनों, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों तथा अनेक बाधाओं के बावजूद अपने परिश्रम, साहस और दृढ़ संकल्प से सफलता की नई मिसाल स्थापित की है। उनकी यात्राएँ यह सिद्ध करती हैं कि जब समाज का विश्वास, सरकार का सक्षम सहयोग और बाज़ार के अवसर एक साथ मिलते हैं, तब उद्यमिता केवल एक व्यवसाय नहीं रहती, बल्कि आत्मनिर्भरता, स्थानीय रोजगार सृजन और समावेशी विकास का सशक्त माध्यम बन जाती है। समय पर मार्गदर्शन, वित्तीय सहयोग, कौशल विकास, संस्थागत समर्थन और बाज़ार से जुड़ाव युवाओं की आकांक्षाओं को सफल एवं सतत उद्यमों में परिवर्तित करने की आधारशिला सिद्ध होते हैं।

यह संकलन उन्हीं प्रेरक यात्राओं का सजीव दस्तावेज़ है। इसमें सम्मिलित कहानियों का चयन इस दृष्टि से किया गया है कि प्रदेश के विभिन्न जनपदों, विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों तथा विभिन्न प्रकार के उद्यमों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो। प्रत्येक कहानी अपने आप में विशिष्ट है, किन्तु सभी में एक समान संदेश निहित है—आत्मविश्वास, नवाचार, सतत सीखने की प्रतिबद्धता और कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस। यही गुण इन उद्यमियों को अपने समुदाय में परिवर्तन के प्रेरक बनाते हैं।

इस संकलन के माध्यम से हमारा प्रयास केवल सफल उद्यमियों का परिचय कराना नहीं है, बल्कि ऐसी प्रेरक मिसालों को समाज के समक्ष लाना है, जो अन्य युवाओं को भी उद्यमिता के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। हमें विश्वास है कि इन अनुभवों से नीति-निर्माताओं, जिला प्रशासन, बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानों, प्रशिक्षण एजेंसियों तथा अभियान से जुड़े सभी हितधारकों को भी महत्वपूर्ण सीख प्राप्त होगी, जिससे अभियान को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

मैं इस संकलन को संभव बनाने वाले सभी युवा उद्यमियों, जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्रों, जिला प्रशासन, बैंकिंग संस्थाओं, प्रशिक्षण सहयोगियों, Transform Rural India (TRI) तथा मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान से जुडे सभी अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। विशेष रूप से उन उद्यमियों को बधाई, जिन्होंने अपने अनुभव साझा कर इस संकलन को प्रेरणा और विश्वास का दस्तावेज़ बनाया।

आशा है कि यह पुस्तक प्रदेश के लाखों युवाओं के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोलेगी, उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करेगी और *विकसित उत्तर प्रदेश* के निर्माण में उनकी सक्रिय भागीदारी को और सशक्त बनाएगी।

(सर्वेश्वर शुक्ल)
राज्य नोडल अधिकारी
मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान

अनुक्रमणिका

रायबरेली... रसोई के स्वाद से आत्मनिर्भरता की मिसाल	12
अलीगढ़... उज्ज्वल दृष्टि, नया विश्वास	13
अम्बेडकर नगर... स्याही से लिखी सफलता की इबारत	14
गाज़ियाबाद... रचनात्मकता को मिला नया विस्तार	15
बरेली... सपनों के स्वाद को मिला अपना ठिकाना	16
कन्नौज... मीठे सपनों को मिली नई पहचान	17
बहराइच... ज़रूरत को अवसर में बदलने की प्रेरक कहानी	18
चित्रकूट... हुनर को मिली नई उड़ान	19
बस्ती... संघर्ष से सेवा तक	20
सहारनपुर... ड्रोन तकनीक से बदल रहे खेती के तौर-तरीके	21
आगरा... आत्मनिर्भरता की नई मिसाल	22
अयोध्या... छोटी शुरुआत, बड़ा विश्वास	23
आज़मगढ़... पारंपरिक कौशल को आधुनिक विस्तार	24
बलिया... रचनात्मक सोच, सफल सफर	25
बलरामपुर... छपाई व्यवसाय से मिली नई पहचान	26
बांदा... छोटे गाँव से बड़ी उद्यमिता की ओर	27
बाराबंकी... स्वच्छ जल से स्वरोजगार तक	28
भदोही... मेहनत को मिला नया आयाम	29
बुलंदशहर... परंपरा और तकनीक का संगम	30
एटा... सपनों को मिला स्थानीय आधार	31
इटावा... पारंपरिक जरी कला को मिला विस्तार	32
फर्रुखाबाद... पारंपरिक जरी कला को मिला विस्तार	33
फतेहपुर... सौंदर्य से आत्मनिर्भरता	34
कौशाम्बी... सपनों के स्वाद को मिली नई पहचान	35
अमरोहा... सुई-धागे से बुनी आत्मनिर्भरता की कहानी	36
बागपत... कर्मचारी से उद्यमी बनने तक का प्रेरक सफर	37
श्रावस्ती... हर बूंद में आत्मनिर्भरता का विश्वास	38
अमेठी... दूध से सपनों तक का सफर	39
बिजनौर... मेहनत को मिला स्वाद और सफलता	40
चंदौली... नौकरी से आगे बढ़कर उद्यमिता की नई राह	41
संभल... मसालों से महकी सफलता की कहानी	42
हरदोई... सुई-धागे से बुना आत्मनिर्भरता का सपना	43
बदायूं... कौशल को बनाया सेवा और सफलता का माध्यम	44
सोनभद्र... सौंदर्य के हुनर से आत्मनिर्भरता की पहचान	45
औरैया... स्वास्थ्य सेवा से आत्मनिर्भरता तक	46
लखनऊ... हौसले ने बदली जिंदगी की तस्वीर	47
फिरोजाबाद... रचनात्मक सोच को मिला कारोबार का नया विस्तार	48
गौतम बुद्ध नगर... उजाले से उज्ज्वल भविष्य तक	49

अनुक्रमणिका

गोंडा... हुनर का स्वाद, आत्मनिर्भरता का विश्वास	50
गोरखपुर... सुगंध से महक उठी सफलता की राह	51
हमीरपुर... स्वरोजगार की सशक्त मिसाल	52
हापुड़... डिजिटल कनेक्टिविटी से आत्मनिर्भरता तक	53
जौनपुर... सौर ऊर्जा से रोशन सफलता का सफर	54
झांसी... कला को बनाया आजीविका का सशक्त माध्यम	55
कानपुर देहात... छोटे कारोबार से बड़ी सफलता तक	56
कानपुर नगर... मिठास को बनाया आत्मनिर्भरता का नया स्वाद	57
कुशीनगर... हरित ऊर्जा से आत्मनिर्भरता तक	58
लखीमपुर खीरी... हुनर बना आत्मनिर्भरता की पहचान	59
महोबा... डिजिटल सेवाओं से बदली जीवन की दिशा	60
मैनपुरी... नवाचार के स्वाद को मिला उद्यमिता का साथ	61
मथुरा... धागों से बुनी आत्मनिर्भरता की कहानी	62
मेरठ... सौर ऊर्जा नवाचार से मिली सफलता की नई रोशनी	63
मिर्जापुर... अनुभव से उद्यम तक	64
मुरादाबाद... डिजिटल सेवाओं से बदली जिंदगी	65
मुजफ्फरनगर... आत्मविश्वास ने बदली तक़दीर	66
पीलीभीत... एक ई-रिक्शा से बदली जीवन की दिशा	67
प्रतापगढ़... कंप्यूटर कौशल बना आत्मनिर्भरता की पहचान	68
प्रयागराज... हुनर को मिला उद्यमिता का नया आयाम	69
रामपुर... शिक्षा को बनाया परिवर्तन का माध्यम	70
संत कबीर नगर... स्वच्छता उत्पाद निर्माण से बदली जीवन की दिशा	71
शाहजहाँपुर... हौसलों ने दिव्यांगता को बनाया शक्ति	72
शामली... हुनर से आत्मनिर्भरता तक	73
सिद्धार्थनगर... सेवा की गुणवत्ता बनी सफलता की पहचान	74
सीतापुर... हरित ऊर्जा के लिए मजबूत आधार	75
उन्नाव... आत्मविश्वास ने बदली जिंदगी की तस्वीर	76
सुल्तानपुर... हरित ऊर्जा को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार	77
वाराणसी... वेलनेस से आत्मनिर्भरता	78
देवरिया... डिजिटल सेवाओं से आत्मनिर्भरता की नई पहचान	79
हाथरस... पर्यावरण संरक्षण को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार	80
जालौन... गृहिणी से सफल उद्यमी बनने तक का प्रेरक सफर	81
कासगंज... मोबाइल तकनीक से गढ़ी आत्मनिर्भरता की नई पहचान	82
ललितपुर... सफलता का खूबसूरत सफर	83
लखनऊ... पशु प्रेम को बनाया सफल उद्यम	84
महाराजगंज... ई-रिक्शा से आत्मनिर्भरता की नई राह	85
मऊ... तकनीकी कौशल से मिली आत्मनिर्भरता की नई ऊर्जा	86
गाज़ीपुर... डिजिटल शिक्षा से आत्मनिर्भरता की नई उड़ान	87

प्रज्ञा सिंह रायबरेली, उत्तर प्रदेश

रसोई के स्वाद से आत्मनिर्भरता की मिसाल

प्रज्ञा ने अचार और मसाला उद्योग से महिलाओं के लिए खोले नए अवसर

घर से शुरू हुआ अचार बनाने का छोटा-सा प्रयास आज एक सफल उद्यम बन चुका है। इस पहल ने न केवल मुझे नई पहचान दी, बल्कि अनेक ग्रामीण महिलाओं को भी रोजगार और आत्मनिर्भरता का अवसर प्रदान किया।

जीवन में एक समय ऐसा भी था जब मैं नौकरी कर रही थी, लेकिन मन में हमेशा यह इच्छा रहती थी कि कुछ ऐसा करूँ, जिससे अपने परिवार के साथ-साथ अपने गांव की महिलाओं के लिए भी नए अवसर पैदा कर सकूँ। इसी सोच के साथ मैंने स्वयं सहायता समूह से जुड़कर घर से अचार बनाने का छोटा-सा काम शुरू किया।

हमारे उत्पादों की गुणवत्ता लोगों को पसंद आने लगी और मांग लगातार बढ़ने लगी। तभी मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद योजना के अंतर्गत ₹5 लाख का ब्याजमुक्त और बिना गारंटी का ऋण मिला। इस सहयोग ने मेरे छोटे प्रयास को संगठित उद्योग का रूप देने का आत्मविश्वास दिया।

वित्तीय सहायता मिलने के बाद उत्पादन का दायरा बढ़ाया। अचार के साथ मसालों की सफाई, पिसाई और पैकेजिंग का कार्य भी शुरू किया। आज 'आर्याभी एंटरप्राइजेज' के मसाले और 'शक्ति माता' ब्रांड के अचार बाजार में अपनी पहचान बना चुके हैं। मौसम के अनुसार पापड़ और चिप्स जैसे उत्पाद भी तैयार किए जाते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि केवल व्यवसाय का विस्तार नहीं, बल्कि गांव की अनेक महिलाओं का इस सफर से जुड़ना है। उनकी मेहनत और आत्मविश्वास ने इस उद्यम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। 'बेस्ट पिकल मेकर' सम्मान और नकद पुरस्कार ने मेरे प्रयासों को नई पहचान दी, लेकिन सबसे बड़ा सम्मान उन महिलाओं की मुस्कान है, जो आज अपने पैरों पर खड़ी हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** प्रज्ञा सिंह
- **जनपद:** रायबरेली
- **उद्यम:** आर्याभी एंटरप्राइजेज (अचार एवं मसाला उद्योग)
- **परियोजना लागत:** ₹5,70,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **रोजगार सृजन:** अनेक ग्रामीण महिलाओं को रोजगार

इस सफ़र से सीख...

एक छोटा-सा प्रयास भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकता है। जब महिलाएं आत्मविश्वास और अवसर के साथ आगे बढ़ती हैं, तो पूरा समाज सशक्त होता है।

पल्लवी कुमारी अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

उज्ज्वल दृष्टि, नया विश्वास

पल्लवी कुमारी का आई केयर सेंटर बना बेहतर नेत्र स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता की मिसाल

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने अलीगढ़ की पल्लवी कुमारी को अपना आई केयर सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका केंद्र गुणवत्तापूर्ण नेत्र सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

अलीगढ़ जनपद के तालिब नगर की निवासी पल्लवी कुमारी आत्मनिर्भर बनकर समाज की सेवा करना चाहती थीं। शिक्षा पूरी करने के बाद भी रोजगार के सीमित अवसरों के कारण उनका सपना अधूरा था। इसी दौरान उन्हें समाचार पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के बारे में विस्तार से जानने के लिए उन्होंने जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र से संपर्क किया, जहाँ उन्हें आवेदन प्रक्रिया और आवश्यक औपचारिकताओं की पूरी जानकारी एवं सहयोग प्राप्त हुआ। योजना के अंतर्गत उनका ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग से उन्होंने अलीगढ़ में आधुनिक सुविधाओं से युक्त आई केयर सेंटर की स्थापना की। आवश्यक उपकरणों और संसाधनों की व्यवस्था होने के बाद उन्होंने अपने केंद्र का संचालन शुरू किया, जहाँ लोगों को बेहतर नेत्र परीक्षण और संबंधित सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

आज पल्लवी कुमारी का आई केयर सेंटर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम के माध्यम से उन्होंने दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। सभी खर्चों के बाद उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹10,000 से ₹15,000 की शुद्ध आय प्राप्त हो रही है, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में अधिक मजबूत हुई है।

पल्लवी कुमारी का कहना है कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उन्हें केवल आर्थिक सहायता ही नहीं दी, बल्कि अपने सपनों को साकार करने का आत्मविश्वास भी प्रदान किया। वे इस योजना के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अन्य युवाओं, विशेषकर महिलाओं से अपील करती हैं कि वे सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाएँ।

एक नज़र में...

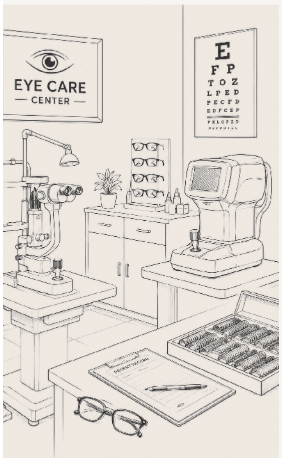

- **लाभार्थी:** पल्लवी कुमारी
- **जनपद:** अलीगढ़
- **उद्यम**: आई केयर सेंटर, लुहारा, तालिब नगर, अलीगढ़
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक**: पंजाब नेशनल बैंक, हरदुआगंज शाखा, अलीगढ़
- **रोजगार**: 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

सही जानकारी, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग जीवन की दिशा बदल सकता है। जब अवसर और मेहनत एक साथ मिलते हैं, तो आत्मनिर्भरता केवल सपना नहीं रहती, बल्कि समाज की सेवा और सम्मानजनक आजीविका का मजबूत आधार बन जाती है।

विकास चौधरी अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश

स्याही से लिखी सफलता की इबारत

विकास चौधरी ने प्रिंटिंग प्रेस उद्योग से आत्मनिर्भरता की मिसाल कायम की

रोजगार की तलाश में भटक रहे एक युवा ने अवसर को पहचानकर अपना प्रिंटिंग प्रेस शुरू किया। आज यह उद्यम नियमित आय के साथ स्थानीय युवाओं के लिए भी रोजगार का माध्यम बन चुका है।

बेरोजगारी का दौर मेरे लिए सबसे कठिन समय था। मन में अपना व्यवसाय शुरू करने की इच्छा तो थी, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण हर योजना अधूरी रह जाती थी। तभी विभाग के जन-जागरूकता अभियान के माध्यम से मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली और लगा कि अब मेरे सपनों को भी नई दिशा मिल सकती है।

मैंने प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने के लिए आवेदन किया। परियोजना स्वीकृत होने के बाद को-ऑपरेटिव बैंक, अम्बेडकर नगर से ₹5 लाख का ऋण मिला। इस सहयोग से मैंने आधुनिक मशीनों और आवश्यक उपकरणों के साथ अपना प्रिंटिंग प्रेस शुरू किया।

शुरुआत में ग्राहकों का भरोसा जीतना सबसे बड़ी चुनौती थी। मैंने समय पर गुणवत्तापूर्ण कार्य और बेहतर सेवा को अपनी पहचान बनाया। धीरे-धीरे ग्राहकों का विश्वास बढ़ता गया और आज मेरा प्रिंटिंग प्रेस सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इससे मुझे नियमित आय प्राप्त हो रही है और अपने परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ आत्मविश्वास के साथ निभा पा रहा हूँ।

सबसे अधिक खुशी इस बात की है कि मेरा यह उद्यम तीन स्थानीय लोगों के लिए भी रोजगार का माध्यम बना है। आज मुझे विश्वास है कि सही मार्गदर्शन, समय पर मिला सहयोग और निरंतर मेहनत किसी भी युवा को आत्मनिर्भर बना सकती है। भविष्य में मेरा लक्ष्य अपने व्यवसाय का विस्तार कर और अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** विकास चौधरी
- **जनपद:** अम्बेडकर नगर
- **परियोजना:** प्रिंटिंग प्रेस उद्योग
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** को-ऑपरेटिव बैंक, अम्बेडकर नगर
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

सपनों को हकीकत बनाने के लिए पहला कदम उठाना जरूरी है। सही अवसर और निरंतर मेहनत साधारण शुरुआत को भी बड़ी सफलता में बदल देती है।

आस्था जायसवाल गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

रचनात्मकता को मिला नया विस्तार

आस्था जायसवाल ने 'Nakhrahub' ब्रांड से बनाई अपनी अलग पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹3.80 लाख की वित्तीय सहायता ने गाज़ियाबाद की आस्था जायसवाल को अपने कस्टम गिफ्टिंग ब्रांड 'NAKHRAHUB' को नई पहचान देने का अवसर दिया। आज उनका तीन लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर महिला उद्यमिता की प्रेरक मिसाल प्रस्तुत कर रहा है।

गाज़ियाबाद की निवासी आस्था जायसवाल हमेशा से कुछ नया और रचनात्मक करने का सपना देखती थीं। शिक्षा पूरी करने के बाद उनके सामने रोजगार के कई विकल्प थे, लेकिन उनका लक्ष्य केवल नौकरी करना नहीं था। वे ऐसा स्वयं का ब्रांड स्थापित करना चाहती थीं, जो लोगों की पसंद के अनुरूप आकर्षक और व्यक्तिगत (कस्टमाइज्ड) उत्पाद तैयार करे। बदलते समय में कस्टम गिफ्टिंग की बढ़ती मांग को उन्होंने एक नए व्यवसायिक अवसर के रूप में पहचाना, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपने विचार को वास्तविक रूप नहीं दे पा रही थीं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र की हेल्प डेस्क के माध्यम से योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा से उन्हें ₹3.80 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई उड़ान दी और उन्होंने लक्षिका एंटरप्राइजेज के अंतर्गत अपना कस्टम गिफ्टिंग ब्रांड 'Nakhrahub' स्थापित किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आधुनिक उपकरणों और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की तथा कॉर्पोरेट गिफ्टिंग, ब्रांडेड टी-शर्ट्स, कस्टमाइज्ड गिफ्ट आइटम और पर्सनलाइज्ड उत्पादों का निर्माण प्रारंभ किया। गुणवत्ता, आकर्षक डिज़ाइन और समय पर आपूर्ति के कारण उनके उत्पादों को शुरुआती दिनों से ही ग्राहकों का अच्छा प्रतिसाद मिलने लगा। व्यवसाय शुरू होने के केवल दो महीनों में लगभग ₹2 लाख की बिक्री दर्ज होना उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित हुई और उन्हें लगातार नए ऑर्डर मिलने लगे।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** आस्था जायसवाल
- **जनपद:** गाज़ियाबाद
- **उद्यम:** लक्षिका एंटरप्राइजेज (कस्टम गिफ्टिंग ब्रांड – Nakhrahub)
- **परियोजना लागत:** ₹4,13,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,80,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

संसाधनों की कमी सफलता की राह नहीं रोक सकती। यदि दृढ़ संकल्प, निरंतर मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही सहयोग मिल जाए, तो एक छोटा प्रयास भी सफल उद्यम का रूप ले सकता है और दूसरों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकता है।

आरती गंगवार बरेली, उत्तर प्रदेश

सपनों के स्वाद को मिला अपना ठिकाना

आरती गंगवार ने रेस्टोरेंट व्यवसाय से बनाई आत्मनिर्भरता की नई पहचान

निजी नौकरी से आगे बढ़कर अपने सपनों का रेस्टोरेंट शुरू करने का निर्णय लिया। आज यह उद्यम सम्मानजनक आय का स्रोत होने के साथ पाँच लोगों के लिए रोजगार का भी माध्यम बन चुका है।

निजी कंपनी में नौकरी करते हुए मुझे हर महीने नियमित वेतन तो मिलता था, लेकिन मन हमेशा अपने सपनों को साकार करने के लिए बेचैन रहता था। मैं चाहती थी कि अपना ऐसा व्यवसाय शुरू करूँ, जो केवल आय का साधन ही नहीं, बल्कि मेरी पहचान भी बने। आर्थिक सीमाएँ इस सपने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा थीं।

इसी दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र से मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद मैंने आवेदन किया और भारतीय स्टेट बैंक के सहयोग से ₹4.25 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहायता से मैंने 'द नॉर्थ किचन' रेस्टोरेंट की शुरुआत की।

शुरुआती दिनों में हर ग्राहक का विश्वास जीतना मेरे लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता थी। स्वाद, स्वच्छता और बेहतर सेवा को आधार बनाकर मैंने अपने रेस्टोरेंट को आगे बढ़ाया। धीरे-धीरे स्थानीय लोगों के बीच इसकी पहचान बनने लगी और आज यह सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम ने मुझे सम्मानजनक आय के साथ आत्मविश्वास भी दिया है। सबसे बड़ी खुशी यह है कि मेरे इस प्रयास से पाँच लोगों को भी रोजगार मिला है।

आज मुझे विश्वास है कि यदि सपनों के साथ मेहनत और सही अवसर जुड़ जाएँ, तो हर महिला अपनी अलग पहचान बना सकती है। मेरा लक्ष्य भविष्य में अपने रेस्टोरेंट का विस्तार करना और अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

एक नज़र में...

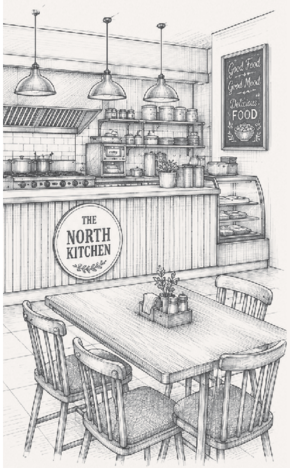

- **लाभार्थी:** आरती गंगवार
- **जनपद:** बरेली
- **उद्यम:** द नॉर्थ किचन रेस्टोरेंट
- **कार्यस्थल:** कर्मचारी नगर, मिनी बाईपास, बरेली
- **परियोजना लागत:** ₹4,25,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कर्मचारी नगर शाखा
- **रोजगार सृजन:** 5

इस सफ़र से सीख...

सपनों को सच करने के लिए पहला कदम सबसे महत्वपूर्ण होता है। आत्मविश्वास, मेहनत और सही अवसर मिल जाएँ, तो हर मंज़िल हासिल की जा सकती है।

अरीश रज़ा | कन्नौज, उत्तर प्रदेश

मीठे सपनों को मिली नई पहचान

अरीश रज़ा ने बेकरी उद्योग से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की

बेरोजगारी से जूझ रहे एक युवा ने अपने सपनों को हारने नहीं दिया। समय पर मिले वित्तीय सहयोग से शुरू हुई बेकरी इकाई आज सम्मानजनक आय के साथ चार लोगों के रोजगार का भी आधार बन चुकी है।

अपना व्यवसाय शुरू करना हमेशा से मेरा सपना था, लेकिन आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण यह सपना बार-बार अधूरा रह जाता था। बेरोजगारी के दौर में कई बार निराशा भी हुई, लेकिन मुझे विश्वास था कि यदि सही अवसर मिला तो मैं अपनी मेहनत के दम पर एक नई शुरुआत जरूर करूँगा।

इसी दौरान जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र के माध्यम से मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। मैंने बेकरी उद्योग स्थापित करने का निर्णय लिया और योजना के अंतर्गत आवेदन किया। उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त होने के बाद मैंने अपनी बेकरी इकाई की स्थापना की।

शुरुआत में ग्राहकों का भरोसा जीतने के लिए मैंने उत्पादों की गुणवत्ता, ताजगी और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया। धीरे-धीरे मेरी बेकरी के उत्पाद लोगों की पसंद बनने लगे और व्यवसाय लगातार आगे बढ़ता गया। आज मेरी बेकरी सफलतापूर्वक संचालित हो रही है, जिससे मुझे नियमित और सम्मानजनक आय प्राप्त हो रही है। सबसे बड़ी खुशी यह है कि मेरे इस उद्यम से चार स्थानीय लोगों को भी रोजगार मिला है और वे भी अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं।

आज मुझे गर्व है कि मैं केवल आत्मनिर्भर ही नहीं बना, बल्कि दूसरों के लिए भी अवसर सृजित कर पा रहा हूँ। मेरा लक्ष्य भविष्य में अपने व्यवसाय का विस्तार करना और गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के माध्यम से अपनी अलग पहचान स्थापित करना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** अरीश रज़ा
- **जनपद:** कन्नौज
- **उद्यम:** बेकरी यूनिट
- **कार्यस्थल:** गांधी नगर, गुरसहायगंज, कन्नौज
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, गुरसहायगंज शाखा
- **रोजगार सृजन:** 4

इस सफ़र से सीख...

सही अवसर और दृढ़ संकल्प मिल जाएँ, तो बेरोजगारी भी सफलता की नई शुरुआत बन सकती है। मेहनत का हर कदम आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है।

सरिता देवी बहराइच, उत्तर प्रदेश

जरूरत को अवसर में बदलने की प्रेरक कहानी

सरिता देवी ने टेंट हाउस व्यवसाय से परिवार और गांव दोनों को दी नई ताकत

परिवार की आर्थिक जरूरतों ने मुझे नया रास्ता चुनने की प्रेरणा दी। आज मेरा टेंट हाउस व्यवसाय न केवल सम्मानजनक आय का माध्यम है, बल्कि छह स्थानीय लोगों के रोजगार का भी आधार बन चुका है।

परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ रही थीं, लेकिन आय के सीमित साधनों से सभी जरूरतें पूरी करना आसान नहीं था। ऐसे में मैंने तय किया कि परिस्थितियों का इंतजार करने के बजाय उन्हें बदलने का प्रयास करूँ। अपने गांव और आसपास के क्षेत्र में टेंट हाउस की सुविधा का अभाव देखकर मुझे लगा कि यही एक ऐसा अवसर है, जो मेरे सपनों को नई दिशा दे सकता है।

मैंने उद्यमिता विकास कार्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जहाँ व्यवसाय संचालन और वित्तीय प्रबंधन की महत्वपूर्ण जानकारी मिली। इसके बाद मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत आवेदन किया और भारतीय स्टेट बैंक के माध्यम से ₹2.70 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। इस सहयोग से आवश्यक सामग्री और उपकरण खरीदकर मैंने अपना 'शक्ति टेंट हाउस' शुरू किया।

आज मेरा व्यवसाय केवल मेरे गांव तक सीमित नहीं है, बल्कि आसपास के अनेक गांवों में विवाह, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों के लिए नियमित सेवाएं दे रहा है। लगातार बढ़ते ऑर्डर से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है और सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे इस उद्यम से छह स्थानीय लोगों को भी रोजगार मिला है। आज मुझे गर्व है कि मैंने आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ दूसरों के लिए भी अवसरों के नए द्वार खोले हैं।

एक नज़र में...

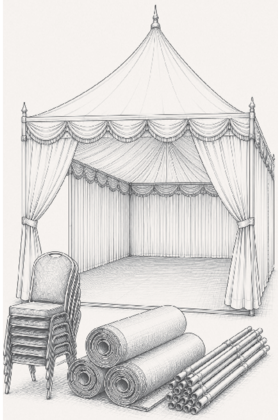

- **लाभार्थी:** सरिता देवी
- **जनपद:** बहराइच
- **उद्यम:** टेंट हाउस व्यवसाय
- **कार्यस्थल:** ग्राम सर्रा कला, विकास खंड मिहींपुरवा
- **परियोजना लागत:** ₹2,70,000
- **वितरित ऋण:** ₹2,70,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक
- **रोजगार सृजन:** 6

इस सफ़र से सीख...

जरूरत को अवसर में बदलने का साहस ही सफलता की शुरुआत है। आत्मविश्वास और सही मार्गदर्शन से हर महिला अपनी अलग पहचान बना सकती है।

खूबसूरत आदल्या चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

हुनर को मिली नई उड़ान

खूबसूरत आदल्या ने बुटीक और कढ़ाई-बुनाई से बनाई पहचान

सिलाई और कढ़ाई का हुनर पहले केवल कौशल था, लेकिन सही सहयोग मिलने के बाद वही आत्मनिर्भरता का आधार बन गया। आज मेरा बुटीक न केवल सम्मानजनक आय का स्रोत है, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी रोजगार का माध्यम बन रहा है।

बचपन से ही सिलाई, कढ़ाई और डिज़ाइनिंग में मेरी विशेष रुचि थी। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मेरा सपना था कि अपने हुनर को एक सफल व्यवसाय का रूप दूँ, लेकिन आवश्यक पूंजी के अभाव में यह सपना लंबे समय तक अधूरा रहा। तभी मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली, जिसने मेरे जीवन में नई उम्मीद जगाई।

योजना के अंतर्गत आवेदन स्वीकृत होने के बाद मैंने ओवरलॉक मशीन, लॉक स्टिच मशीन और अन्य आवश्यक उपकरण खरीदकर अपने बुटीक एवं कढ़ाई-बुनाई कार्य की शुरुआत की। शुरुआत छोटे स्तर से हुई, लेकिन गुणवत्ता, नए डिज़ाइन और ग्राहकों के भरोसे ने मेरे काम को लगातार आगे बढ़ाया।

आज मेरा बुटीक सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। पहले मेरी मासिक आय ₹8,000 से ₹12,000 के बीच थी, जो अब बढ़कर ₹25,000 से ₹30,000 प्रतिमाह हो गई है। इससे न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई, बल्कि तीन लोगों को भी रोजगार का अवसर मिला। मेरे द्वारा तैयार किए गए परिधान और कढ़ाई वाले उत्पाद स्थानीय बाजार में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं।

आज मुझे सबसे अधिक खुशी इस बात की है कि मेरा हुनर केवल मेरी पहचान नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता का आधार भी बन गया है। मेरा विश्वास है कि यदि किसी के पास कौशल और आगे बढ़ने का संकल्प हो, तो सही सहयोग उसके सपनों को नई उड़ान दे सकता है।

एक नज़र में...

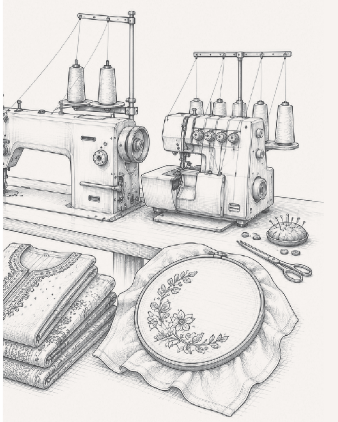

- **लाभार्थी:** खूबसूरत आदल्या
- **जनपद:** चित्रकूट
- **उद्यम:** बुटीक एवं कढ़ाई-बुनाई इकाई
- **कार्यस्थल:** कर्वी, चित्रकूट
- **वर्तमान मासिक आय** :लगभग ₹25,000–₹30,000
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

हुनर तभी सबसे अधिक चमकता है, जब उसे सही अवसर और आत्मविश्वास का साथ मिले। छोटे कदम भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन सकते हैं।

कमर आलम बस्ती, उत्तर प्रदेश

संघर्ष से सेवा तक

कमर आलम ने पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर स्थापित कर सपनों को दिया नया आकार

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने बस्ती के कमर आलम को अपना पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका केंद्र लोगों को विश्वसनीय स्वास्थ्य जाँच सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ चार लोगों को रोजगार देकर स्वास्थ्य सेवा और स्वरोजगार का प्रेरक उदाहरण बन गया है।

बस्ती के निवासी कमर आलम का जीवन संघर्ष और संकल्प का प्रेरक उदाहरण है। सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। पढ़ाई के साथ-साथ वे एक पैथोलॉजी प्रयोगशाला में कार्य करते रहे, जहाँ उन्हें चिकित्सा जाँच सेवाओं को करीब से समझने और सीखने का अवसर मिला। इसी अनुभव ने उनके भीतर स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अपना स्वयं का केंद्र स्थापित करने का सपना जगाया। अपने लक्ष्य को साकार करने के लिए उन्होंने लैब टेक्नीशियन का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में यह सपना अधूरा रह गया। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उद्योग विभाग के मार्गदर्शन में उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, बस्ती से ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके वर्षों पुराने सपने को साकार करने का मार्ग प्रशस्त किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से कमर आलम ने आधुनिक सुविधाओं से युक्त पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर की स्थापना की। यहाँ मरीजों को समयबद्ध, विश्वसनीय और गुणवत्तापूर्ण जाँच सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। बेहतर सेवा, आधुनिक उपकरणों और पेशेवर कार्यशैली के कारण उनके केंद्र ने कम समय में ही क्षेत्र के लोगों का विश्वास अर्जित कर लिया है।

आज उनका पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम के माध्यम से चार लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है, जिससे कई परिवारों की आजीविका को नई मजबूती मिली है। कमर आलम का मानना है कि यह उद्यम केवल उनकी आर्थिक प्रगति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भी है।

एक नज़र में...

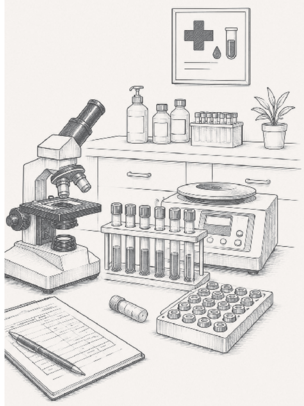

- **लाभार्थी:** कमर आलम
- **जनपद:** बस्ती
- **उद्यम:** पैथोलॉजी कलेक्शन सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:**बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, बस्ती
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

जब संघर्ष, सेवा का भाव और दृढ़ संकल्प एक साथ जुड़ जाते हैं, तो सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं रहती, बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी बन जाती है। सही मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं का सहयोग किसी भी सपने को साकार करने की शक्ति देता है।

अंकुर कुमार | सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

ड्रोन तकनीक से बदल रहे खेती के तौर-तरीके

अंकुर ने कृषि नवाचार को बनाया सफल उद्यम

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.37 लाख की वित्तीय सहायता ने सहारनपुर के अंकुर को कृषि ड्रोन सेवा शुरू करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम आधुनिक कृषि तकनीक को किसानों तक पहुँचाकर खेती को अधिक वैज्ञानिक, किफायती और प्रभावी बना रहा है।

सहारनपुर के निवासी अंकुर कुमार एक साधारण किसान परिवार से आते हैं। बचपन से उन्होंने खेती में आने वाली चुनौतियों—बढ़ती लागत, श्रमिकों की कमी और समय पर कृषि कार्य न हो पाने जैसी समस्याओं—को बहुत करीब से देखा। इसी अनुभव ने उनके मन में यह विचार जन्म दिया कि यदि आधुनिक तकनीक को खेती से जोड़ा जाए, तो किसानों का समय, श्रम और लागत तीनों कम किए जा सकते हैं।

इसी सोच के साथ उन्होंने कृषि ड्रोन सेवा शुरू करने का निर्णय लिया। लेकिन ड्रोन, तकनीकी उपकरण और आवश्यक संसाधनों के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध न होने के कारण उनका सपना अधूरा था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गागलहेड़ी शाखा से ₹4,37,500 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई उड़ान दी।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से अंकुर कुमार ने आधुनिक कृषि ड्रोन खरीदा, आवश्यक प्रशिक्षण एवं लाइसेंस प्राप्त किया और किसानों को फसल सर्वेक्षण, नैनो यूरिया एवं कीटनाशकों का ड्रोन द्वारा छिड़काव, फसल निगरानी तथा अन्य आधुनिक कृषि सेवाएँ उपलब्ध करानी शुरू कीं। ड्रोन तकनीक के उपयोग से कम समय में अधिक क्षेत्र में सटीक और सुरक्षित छिड़काव संभव हुआ, जिससे किसानों को बेहतर परिणाम मिलने लगे। उनकी सेवाओं की गुणवत्ता और विश्वसनीयता के कारण किसानों का विश्वास लगातार बढ़ता गया और उनकी मांग कई क्षेत्रों तक फैल गई।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** अंकुर कुमार
- **जनपद:** सहारनपुर
- **उद्यम**: कृषि ड्रोन सेवा (Drone Service for Agriculture)
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,37,500
- **बैंक**: यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, गागलहेड़ी शाखा
- **रोजगार**: 3 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय**: ₹50,000–₹60,000

इस सफ़र से सीख...

कृषि में तकनीकी नवाचार किसानों की लागत घटाकर रोजगार और ग्रामीण समृद्धि का मजबूत आधार बनता है ।

जेबा रानी | आगरा, उत्तर प्रदेश

आत्मनिर्भरता की नई मिसाल

जेबा रानी ने फुटवियर निर्माण से बदली अपनी पहचान

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का सपना मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से साकार हुआ। आज जेबा रानी न केवल सफल उद्यमी हैं, बल्कि पाँच लोगों को रोजगार देकर अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन रही हैं।

महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल उनके परिवार को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को नई दिशा देती है। आगरा जनपद की जेबा रानी भी अपने पैरों पर खड़े होकर कुछ अलग करने का सपना देखती थीं। उन्हें फुटवियर निर्माण कार्य में रुचि थी, लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में स्वयं का उद्यम शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था।

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उनके सपनों को साकार करने का अवसर दिया। योजना के अंतर्गत आवेदन करने पर भारतीय स्टेट बैंक, नेहरू नगर शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इसके अंतर्गत ₹50 हजार का अनुदान भी मिला, जिससे उद्यम की शुरुआत आसान हो गई।

वित्तीय सहायता मिलने के बाद उन्होंने फुटवियर निर्माण इकाई की स्थापना की। गुणवत्ता और समय पर आपूर्ति को प्राथमिकता बनाते हुए उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया। धीरे-धीरे उनके उत्पादों की मांग बढ़ने लगी और उनका उद्यम सफलता की राह पर आगे बढ़ता गया।

आज जेबा रानी का उद्योग सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। वे पाँच लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही हैं और प्रतिमाह लगभग ₹20 से ₹25 हजार की आय अर्जित कर रही हैं। उनकी सफलता ने यह साबित किया है कि अवसर मिलने पर महिलाएँ न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बन सकती हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित कर सकती हैं।

वे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान तथा उत्तर प्रदेश सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अन्य महिलाओं और युवाओं से भी इस योजना का लाभ उठाने का आग्रह करती हैं।

एक नज़र में...

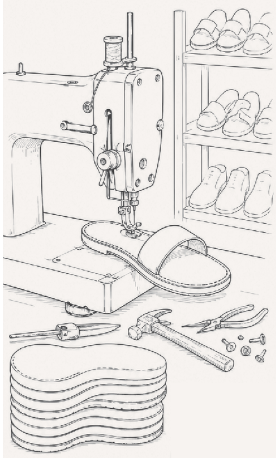

- **लाभार्थी:** जेबा रानी
- **जनपद:** आगरा
- **उद्यम:** फुटवियर मैन्युफैक्चरिंग
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **अनुदान:** ₹50,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, नेहरू नगर, आगरा
- **रोजगार:** 5 व्यक्ति
- **अनुमानित मासिक आय:** ₹20,000–25,000

इस सफ़र से सीख...

आत्मविश्वास, कौशल और सही सहयोग मिल जाए तो महिलाएँ केवल अपने सपनों को ही नहीं, बल्कि अनेक परिवारों के भविष्य को भी नई दिशा दे सकती हैं।

शिवम पांडेय अयोध्या, उत्तर प्रदेश

छोटी शुरुआत, बड़ा विश्वास

शिवम पांडेय ने प्लास्टिक कंटेनर निर्माण से आत्मनिर्भरता की नई राह बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता से अयोध्या के शिवम पांडेय ने प्लास्टिक कंटेनर निर्माण इकाई स्थापित की। आज चार लोगों को रोजगार देकर आत्मनिर्भरता का उदाहरण बने।

अयोध्या के निवासी शिवम पांडेय का सपना था कि वे नौकरी की तलाश करने के बजाय अपना स्वयं का उद्योग स्थापित करें। वे ऐसा उद्यम खड़ा करना चाहते थे, जो न केवल उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाए, बल्कि अन्य युवाओं के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित करे। हालांकि पर्याप्त पूंजी के अभाव में उनका यह सपना लंबे समय तक केवल एक इच्छा बनकर रह गया।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उनकी परियोजना स्वीकृत हुई और उन्हें ₹4.25 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने प्लास्टिक कंटेनर निर्माण इकाई की स्थापना की। ऋण की सहायता से उन्होंने आवश्यक मशीनरी, उपकरण और कच्चे माल की व्यवस्था की। शुरुआत से ही उन्होंने उत्पादों की गुणवत्ता, समय पर आपूर्ति और ग्राहकों के विश्वास को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाया। उनकी मेहनत और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम यह हुआ कि उनके उत्पादों की मांग लगातार बढ़ने लगी और उनका उद्यम तेजी से आगे बढ़ता गया।

आज शिवम पांडेय की प्लास्टिक कंटेनर निर्माण इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। इस उद्यम के माध्यम से वे चार लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहे हैं। उनका मानना है कि स्वरोजगार केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में नए अवसरों का सृजन करने की प्रभावी शक्ति भी है। वे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि यदि यह योजना न होती, तो अपना उद्योग स्थापित करना उनके लिए अत्यंत कठिन होता।

एक नज़र में...

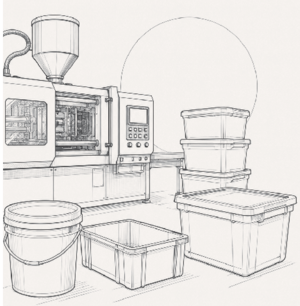

- **लाभार्थी:** शिवम पांडेय
- **जनपद:** अयोध्या
- **उद्यम:** प्लास्टिक कंटेनर निर्माण
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ इंडिया, फ़ैज़ाबाद शाखा
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

हर बड़ा उद्योग एक छोटे कदम से शुरू होता है। सही योजना, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का समय पर मिला सहयोग किसी भी युवा के सपनों को सफल उद्यम में बदल सकता है। आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ाया गया एक कदम न केवल स्वयं का भविष्य संवारता है, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार और विकास के नए अवसर पैदा करता है।

अभिषेक विश्वकर्मा आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश

पारंपरिक कौशल को आधुनिक विस्तार

अभिषेक विश्वकर्मा ने श्याम फर्नीचर उद्योग से बनाई आत्मनिर्भरता की मजबूत पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने आज़मगढ़ के अभिषेक विश्वकर्मा को अपने पारंपरिक कौशल को आधुनिक उद्योग का स्वरूप देने का अवसर दिया। आज उनका श्याम फर्नीचर उद्योग पाँच लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रहा है।

आज़मगढ़ के निवासी अभिषेक विश्वकर्मा बचपन से ही लकड़ी के काम और फर्नीचर निर्माण की पारंपरिक कला से जुड़े रहे हैं। वर्षों से अर्जित इस कौशल को वे आधुनिक तकनीक और बेहतर डिज़ाइन के साथ एक सफल उद्योग का रूप देना चाहते थे। उनके पास अनुभव और मेहनत की कमी नहीं थी, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपना उद्यम स्थापित करना संभव नहीं हो पा रहा था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सरायमीर शाखा से ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपने को नई दिशा दी और उन्होंने श्याम फर्नीचर उद्योग की स्थापना की।

ऋण की सहायता से अभिषेक ने आधुनिक मशीनों, उपकरणों और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की। उन्होंने पारंपरिक कारीगरी को आधुनिक डिज़ाइन और ग्राहकों की पसंद के अनुरूप ढालते हुए उच्च गुणवत्ता वाले फर्नीचर का निर्माण शुरू किया। उनके उत्पादों की गुणवत्ता, मजबूती और आकर्षक डिज़ाइन के कारण ग्राहकों का विश्वास लगातार बढ़ा और उनका व्यवसाय तेजी से आगे बढ़ने लगा।

आज श्याम फर्नीचर उद्योग स्थानीय स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बना चुका है। इस उद्यम के माध्यम से अभिषेक विश्वकर्मा पाँच लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहे हैं। इससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि क्षेत्र के अन्य युवाओं को भी रोजगार के अवसर मिले हैं। भविष्य में वे अपने उद्योग का विस्तार कर और अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

एक नज़र में...

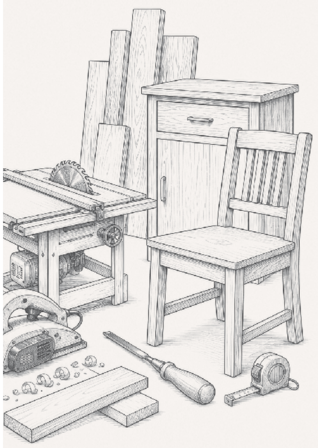

- **लाभार्थी:** अभिषेक विश्वकर्मा
- **जनपद:** आज़मगढ़
- **उद्यम:** श्याम फर्नीचर उद्योग
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सरायमीर शाखा
- **रोजगार:** 5 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

पारंपरिक कौशल जब आधुनिक सोच, गुणवत्तापूर्ण कार्य और सरकारी योजनाओं के सहयोग से जुड़ता है, तो वह केवल एक सफल व्यवसाय ही नहीं बनाता, बल्कि स्थानीय रोजगार, आर्थिक विकास और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव भी तैयार करता है।

अंकित बलिया, उत्तर प्रदेश

रचनात्मक सोच, सफल सफर

अंकित ने 'ए होम डेकोर' के माध्यम से इंटीरियर डिज़ाइन को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने बलिया के अंकित को अपने इंटीरियर एवं होम डेकोर व्यवसाय को नई पहचान देने का अवसर दिया। आज उनका 'ए होम डेकोर' उद्यम आधुनिक डिज़ाइन सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ सात लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

बलिया के युवा उद्यमी अंकित बचपन से ही सजावट, इंटीरियर डिज़ाइन और रचनात्मक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। वे अपने इस शौक को एक सफल व्यवसाय का रूप देना चाहते थे, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण उनका सपना साकार नहीं हो पा रहा था। वे मानते थे कि यदि उचित वित्तीय सहयोग मिले, तो वे आधुनिक डिज़ाइन सेवाओं के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना सकते हैं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उन्हें ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊर्जा दी और उन्होंने 'ए होम डेकोर' की स्थापना कर अपने व्यवसाय की शुरुआत की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आवश्यक उपकरण, आधुनिक मशीनें और संसाधन जुटाए तथा इंटीरियर एवं होम डेकोरेशन के क्षेत्र में पेशेवर सेवाएँ देना शुरू किया। आज उनका संस्थान घरों, दुकानों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए आकर्षक एवं आधुनिक इंटीरियर डिज़ाइन उपलब्ध करा रहा है। फॉल्स सीलिंग, मॉड्यूलर फर्नीचर, वॉल डेकोरेशन, इंटीरियर सज्जा और स्पेस मैनेजमेंट जैसे कार्यों में उनकी गुणवत्ता और रचनात्मकता ने ग्राहकों का विश्वास जीता है।

लगातार बेहतर कार्य और समयबद्ध सेवाओं के कारण 'ए होम डेकोर' ने कम समय में ही अपनी मजबूत पहचान बना ली है। आज अंकित का उद्यम सात लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है, जिससे कई परिवारों की आजीविका को भी संबल मिला है। उनका मानना है कि स्वरोजगार केवल स्वयं की सफलता का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में रोजगार सृजन का भी प्रभावी रास्ता है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** अंकित
- **जनपद:** बलिया
- **उद्यम:** M/s A Home Decor
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
- **रोजगार:** 7 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

रचनात्मक सोच, निरंतर सीखने की इच्छा और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किसी भी प्रतिभा को सफल उद्यम में बदल सकता है। जब हुनर को अवसर मिलता है, तो वह केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि समाज में रोजगार और विकास के नए द्वार भी खोलता है।

सौरभ विश्वकर्मा बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

छपाई व्यवसाय से मिली नई पहचान

सौरभ विश्वकर्मा ने प्रिंटिंग प्रेस स्थापित कर आत्मनिर्भरता की राह बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता ने बलरामपुर के सौरभ विश्वकर्मा को अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम दो लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है।

बलरामपुर के निवासी सौरभ विश्वकर्मा हमेशा से ऐसा व्यवसाय स्थापित करना चाहते थे, जो उनकी आजीविका का मजबूत आधार बने और समाज की आवश्यकताओं को भी पूरा करे। उन्होंने देखा कि शिक्षा, व्यापार और सरकारी कार्यों में गुणवत्तापूर्ण प्रिंटिंग सेवाओं की निरंतर आवश्यकता रहती है। इसी संभावना को अवसर में बदलने का संकल्प लेकर उन्होंने अपना स्वयं का प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने का निर्णय लिया, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण उनका सपना साकार नहीं हो पा रहा था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद इंडियन बैंक, विकास भवन शाखा, बलरामपुर से उन्हें ₹4.50 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। साथ ही सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई मार्जिन मनी और ब्याज सहायता ने व्यवसाय की शुरुआत को और अधिक सरल बना दिया। इस सहयोग ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊर्जा प्रदान की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से सौरभ विश्वकर्मा ने आधुनिक मशीनों और आवश्यक उपकरणों से युक्त प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। उन्होंने गुणवत्ता, समयबद्ध सेवा और ग्राहकों की संतुष्टि को अपनी कार्यशैली का आधार बनाया। परिणामस्वरूप कम समय में ही उनके कार्य की विश्वसनीयता बढ़ी और स्थानीय विद्यालयों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों तथा आम नागरिकों के बीच उनकी अच्छी पहचान बन गई।

आज उनका प्रिंटिंग प्रेस सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और दो लोगों को नियमित रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। इस उद्यम ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** सौरभ विश्वकर्मा
- **जनपद:** बलरामपुर
- **उद्यम:** प्रिंटिंग प्रेस
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक, विकास भवन शाखा, बलरामपुर
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

सही अवसर, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग किसी भी छोटे विचार को सफल उद्यम में बदल सकता है। जब मेहनत के साथ आधुनिक तकनीक और गुणवत्तापूर्ण सेवा जुड़ जाती है, तो आत्मनिर्भरता के साथ-साथ समाज के लिए रोजगार और विकास के नए अवसर भी पैदा होते हैं।

सुमन देवी बांदा, उत्तर प्रदेश

छोटे गाँव से बड़ी उद्यमिता की ओर

सुमन देवी ने प्रिंटिंग प्रेस स्थापित कर आत्मनिर्भरता का नया अध्याय लिखा

बांदा की सुमन देवी ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से ओजस प्रिंटिंग प्रेस स्थापित कर न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत की, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में आधुनिक प्रिंटिंग सेवाओं की उपलब्धता भी सुनिश्चित की।

बांदा जनपद की निवासी सुमन देवी पहले स्वयं सहायता समूह से जुड़कर एक छोटी दुकान चलाती थीं, लेकिन सीमित आय में परिवार की आवश्यकताएँ पूरी करना कठिन था और पूंजी के अभाव में व्यवसाय का विस्तार भी संभव नहीं था। इसी दौरान ग्राम संगठन और ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया फाउंडेशन (TRIF) के सहयोग से उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली, और आवेदन पर उन्हें ₹3.57 लाख का ऋण प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने 'ओजस प्रिंटिंग प्रेस' की स्थापना की।

ऋण की धनराशि से उन्होंने आधुनिक कंप्यूटर, प्रिंटिंग मशीनें तथा अन्य आवश्यक उपकरण खरीदे। आज उनके प्रिंटिंग प्रेस में विवाह कार्ड, विजिटिंग कार्ड, लेटरहेड, स्टिकर, फ्लेक्स प्रिंटिंग, कॉफी मग प्रिंटिंग, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी जैसी अनेक सेवाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं। गुणवत्तापूर्ण कार्य, समयबद्ध सेवा और ग्राहकों की संतुष्टि के कारण उद्यम क्षेत्र का भरोसेमंद केंद्र बन गया है।

आज ओजस प्रिंटिंग प्रेस सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इससे सुमन देवी को प्रतिमाह लगभग ₹15,000 से ₹20,000 की आय हो रही है और उन्होंने दो लोगों को रोजगार भी दिया है। वे नियमित रूप से ऋण की किश्तें जमा कर रही हैं और आत्मनिर्भर जीवन की ओर मजबूती से बढ़ रही हैं।

सुमन देवी का मानना है कि इस अभियान ने उन्हें आर्थिक सहायता के साथ आत्मनिर्भर बनने का आत्मविश्वास और सपनों को साकार करने का अवसर भी दिया। आज वे अपने गाँव की अन्य महिलाओं को भी स्वरोजगार अपनाने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** सुमन देवी
- **जनपद:** बांदा
- **उद्यम:** ओजस प्रिंटिंग प्रेस
- **परियोजना लागत:** ₹3,57,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,57,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति
- **मासिक आय:** ₹15,000–₹20,000

इस सफ़र से सीख...

ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक तकनीक आधारित छोटे उद्यम स्थानीय विकास और महिला सशक्तिकरण के प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। सही मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं का सहयोग और संकल्प किसी भी साधारण शुरुआत को सफल उद्यम में बदल सकता है।

प्रतिभा वर्मा बाराबंकी, उत्तर प्रदेश

स्वच्छ जल से स्वरोजगार तक

प्रतिभा वर्मा ने आर.ओ. वाटर प्लांट से आत्मनिर्भरता की मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने बाराबंकी की प्रतिभा वर्मा के जीवन को नई दिशा दी। आज उनका आर.ओ. वाटर प्लांट स्थानीय लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के साथ-साथ तीन लोगों को रोजगार देकर आत्मनिर्भर भारत की मिसाल बन गया है।

बाराबंकी की निवासी प्रतिभा वर्मा ने स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद सरकारी नौकरी पाने का सपना देखा था। उन्होंने कई प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की और लगातार प्रयास भी किए, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिली। परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण थीं, फिर भी उन्होंने हार मानने के बजाय नए अवसरों की तलाश जारी रखी। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली, जिसने उनके सोचने का नजरिया पूरी तरह बदल दिया।

उन्होंने जिला उद्योग केंद्र से संपर्क कर योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद आर्यावर्त बैंक, बाराबंकी से उन्हें ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके स्वरोजगार के सपने को साकार करने का मार्ग प्रशस्त किया और उन्होंने आधुनिक मशीनों से सुसज्जित आर.ओ. वाटर प्लांट की स्थापना की।

उद्यम शुरू होने के बाद प्रतिभा वर्मा ने गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने को अपनी प्राथमिकता बनाया। आधुनिक जल शुद्धिकरण प्रणाली के माध्यम से उनका प्लांट स्थानीय लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करा रहा है। बेहतर सेवा, गुणवत्ता और ग्राहकों के विश्वास के कारण उनका उद्यम लगातार प्रगति कर रहा है।

आज उनके आर.ओ. वाटर प्लांट से तीन लोगों को रोजगार मिला है। साथ ही उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹15,000 की आय प्राप्त हो रही है, जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में कहीं अधिक मजबूत हुई है। प्रतिभा का मानना है कि यह उद्यम केवल उनकी आय का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को आवश्यक सेवा प्रदान करने का भी एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

एक नज़र में...

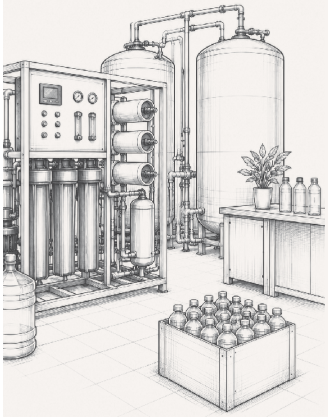

- **लाभार्थी:** प्रतिभा वर्मा
- **जनपद:** बाराबंकी
- **उद्यम:** आर.ओ. वाटर प्लांट
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:**आर्यावर्त बैंक, बाराबंकी
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति
- **मासिक आय:** लगभग ₹15,000

इस सफ़र से सीख...

सफलता का रास्ता हमेशा नौकरी से होकर नहीं गुजरता। सही अवसर की पहचान, सकारात्मक सोच और सरकारी योजनाओं का प्रभावी उपयोग किसी भी युवा को आत्मनिर्भर बना सकता है। मजबूत संकल्प से चुनौतियाँ भी नए अवसरों में बदल जाती हैं।

संजय सोनी भदोही (संत रविदास नगर), उत्तर प्रदेश

मेहनत को मिला नया आयाम

संजय सोनी ने ज्वेलरी व्यवसाय से आत्मनिर्भरता की मजबूत पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता ने भदोही के संजय सोनी को अपने ज्वेलरी व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर दिया। आज उनका प्रतिष्ठान तीन लोगों को रोजगार देकर स्थानीय व्यापार को भी नई मजबूती प्रदान कर रहा है।

भदोही (संत रविदास नगर) के घोसिया बाजार निवासी संजय सोनी लंबे समय से अपना ज्वेलरी व्यवसाय स्थापित कर उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का सपना देख रहे थे। उन्हें विश्वास था कि गुणवत्तापूर्ण आभूषण, ग्राहकों का भरोसा और ईमानदार व्यापार ही सफलता की सबसे बड़ी पूंजी है। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण वे अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रहे थे।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा से ₹4.50 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके व्यवसाय को नई गति दी और उन्होंने आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने ज्वेलरी प्रतिष्ठान का विस्तार किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने व्यवसाय के लिए आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की और ग्राहकों की पसंद के अनुरूप बेहतर गुणवत्ता वाले आभूषण उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया। पारदर्शी व्यवहार, गुणवत्ता और भरोसे के कारण उनका प्रतिष्ठान कम समय में ही क्षेत्र के ग्राहकों की पहली पसंद बन गया।

आज संजय सोनी का व्यवसाय सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम के माध्यम से वे तीन लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहे हैं। उनका मानना है कि व्यापार की वास्तविक सफलता केवल लाभ कमाने में नहीं, बल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने और ग्राहकों का विश्वास जीतने में भी निहित होती है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** संजय सोनी
- **जनपद:** भदोही (संत रविदास नगर)
- **उद्यम:** ज्वेलरी व्यवसाय, घोसिया बाजार
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

व्यापार में सफलता का आधार केवल पूंजी नहीं, बल्कि ईमानदारी, गुणवत्ता और ग्राहकों का विश्वास होता है। जब इन मूल्यों के साथ सरकारी योजनाओं का सहयोग जुड़ता है, तो एक छोटा व्यवसाय भी रोजगार सृजन और आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम बन जाता है।

मुकुल सक्सेना बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

परंपरा और तकनीक का संगम

मुकुल सक्सेना ने 3डी सिरेमिक प्रिंटिंग से खोले नवाचार के नए द्वार

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता ने मुकुल सक्सेना को पारंपरिक सिरेमिक कला को आधुनिक तकनीक से जोड़ने का अवसर दिया। आज उनका कॉन्ट्राइव सिरेमिक स्टूडियो 3डी सिरेमिक प्रिंटिंग के माध्यम से नवाचार की नई पहचान बना रहा है।

बुलंदशहर जनपद के खुर्जा की पहचान वर्षों से सिरेमिक उद्योग के लिए रही है। इसी परंपरा से प्रेरित होकर मुकुल सक्सेना ने यह संकल्प लिया कि वे पारंपरिक सिरेमिक कला को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर उसे नई पहचान देंगे। उनका उद्देश्य केवल उत्पाद तैयार करना नहीं था, बल्कि नवाचार के माध्यम से स्थानीय उद्योग को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करना था। हालांकि आधुनिक मशीनों और 3डी प्रिंटिंग तकनीक के लिए आवश्यक पूंजी जुटाना उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उन्हें ₹4.25 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने कॉन्ट्राइव सिरेमिक स्टूडियो की स्थापना की, जहाँ आधुनिक 3डी सिरेमिक प्रिंटिंग तकनीक के माध्यम से नवीन और आकर्षक उत्पाद तैयार किए जाने लगे। आज उनके स्टूडियो में सजावटी वस्तुएँ, उपहार सामग्री, कस्टमाइज्ड सिरेमिक उत्पाद तथा उपयोगी घरेलू सामग्री ग्राहकों की मांग के अनुरूप तैयार की जाती है। पारंपरिक कारीगरी और आधुनिक तकनीक के इस अनूठे संगम ने उनके उत्पादों को बाजार में अलग पहचान दिलाई है। गुणवत्ता, नवाचार और ग्राहकों की पसंद के अनुरूप डिज़ाइन तैयार करने की उनकी कार्यशैली ने उन्हें तेजी से सफलता दिलाई है।

वर्तमान में मुकुल सक्सेना को अपने उद्यम से प्रतिमाह लगभग ₹25,000 से ₹30,000 की आय प्राप्त हो रही है। वे अपने स्टूडियो की उत्पादन क्षमता बढ़ाने और आधुनिक तकनीकों को अपनाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने की दिशा में लगातार कार्य कर रहे हैं।

एक नज़र में...

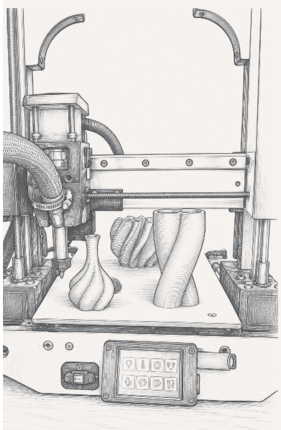

- **लाभार्थी:** मुकुल सक्सेना
- **जनपद:** बुलंदशहर
- **उद्यम:** कॉन्ट्राइव सिरेमिक स्टूडियो (3डी सिरेमिक प्रिंटिंग)
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** एचडीएफसी बैंक
- **मासिक आय:** लगभग ₹25,000–₹30,000

इस सफ़र से सीख...

परंपरा और नवाचार का संगम ही भविष्य के उद्योगों की सबसे बड़ी ताकत है। जब कौशल के साथ आधुनिक तकनीक और सरकारी योजनाओं का सहयोग जुड़ता है, तो स्थानीय उद्यम राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी नई पहचान बना सकते हैं।

सुमित कुमार एटा, उत्तर प्रदेश

सपनों को मिला स्थानीय आधार

सुमित कुमार ने सरसों तेल एवं खली निर्माण से आत्मनिर्भरता की नई कहानी लिखी

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹3.71 लाख की वित्तीय सहायता ने एटा के सुमित कुमार को स्थानीय स्तर पर अपना उद्योग स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनकी सरसों तेल एवं खली निर्माण इकाई तीन लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है।

एटा के निवासी सुमित कुमार का सपना उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद विदेश में अपना करियर बनाने का था। स्नातकोत्तर शिक्षा के साथ उन्होंने रूसी भाषा का भी अध्ययन किया और अपने भविष्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने की तैयारी शुरू कर दी थी। लेकिन पारिवारिक परिस्थितियों में आए अप्रत्याशित बदलाव ने उन्हें अपने परिवार के साथ रहकर नया रास्ता चुनने के लिए प्रेरित किया। यही चुनौती उनके जीवन में एक नए अवसर का आधार बनी।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, मारहरा शाखा से उन्हें ₹3,71,500 का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उन्हें स्थानीय स्तर पर अपना उद्योग स्थापित करने का आत्मविश्वास दिया।

ऋण की सहायता से सुमित कुमार ने सरसों तेल एवं खली निर्माण इकाई की स्थापना की। उन्होंने स्थानीय किसानों से सरसों की खरीद कर आधुनिक तकनीक से गुणवत्तापूर्ण खाद्य तेल का उत्पादन शुरू किया। तेल निष्कर्षण के साथ तैयार होने वाली खली का भी बेहतर उपयोग सुनिश्चित किया गया, जिससे उनके उद्यम की आय और उपयोगिता दोनों में वृद्धि हुई। गुणवत्ता और शुद्धता के कारण उनके उत्पादों को स्थानीय बाजार में अच्छी पहचान मिलने लगी। आज उनकी इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है और तीन लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही है। इस उद्यम से उन्हें प्रतिदिन लगभग ₹2,000 की आय प्राप्त हो रही है। भविष्य में वे अपने उत्पादों का स्वयं का ब्रांड विकसित कर बड़े बाजार तक पहुँचने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

एक नज़र में...

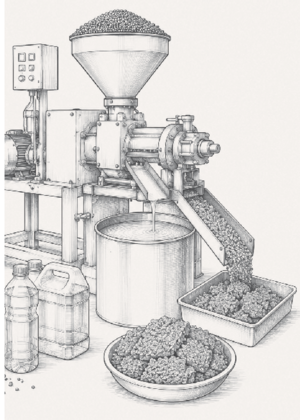

- **लाभार्थी:** सुमित कुमार
- **जनपद:** एटा
- **उद्यम:** सरसों तेल एवं खली निर्माण
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,71,500
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, मारहरा शाखा
- **मासिक आय:** लगभग ₹2,000 प्रतिदिन

इस सफ़र से सीख...

सफलता हमेशा पूर्व निर्धारित रास्तों से नहीं मिलती। कभी-कभी परिस्थितियाँ हमें नई दिशा दिखाती हैं और वही दिशा जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि बन जाती है। सही मार्गदर्शन, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग किसी भी युवा को आत्मनिर्भरता की नई पहचान दिला सकता है।

साधना इटावा, उत्तर प्रदेश

संघर्ष से सशक्त पहचान...

साधना ने जे.बी. वाटर सप्लाई के माध्यम से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.49 लाख की वित्तीय सहायता ने इटावा की साधना को अपना आर.ओ. जल शुद्धिकरण संयंत्र स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका जे.बी. वाटर सप्लाई न केवल क्षेत्र के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करा रहा है, बल्कि दस लोगों को रोजगार देकर महिला उद्यमिता की प्रेरक मिसाल भी बन गया है।

इटावा की निवासी साधना का जीवन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने कभी अपने सपनों को परिस्थितियों के सामने झुकने नहीं दिया। सीमित आय वाले परिवार में पली-बढ़ीं साधना हमेशा आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करना चाहती थीं। संसाधनों की कमी के कारण अपना व्यवसाय शुरू करना उनके लिए आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने अपने लक्ष्य से कभी समझौता नहीं किया।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, महेवा शाखा से ₹4,49,715 का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके वर्षों पुराने सपने को साकार करने का मार्ग प्रशस्त किया और उन्होंने जे.बी. वाटर सप्लाई के नाम से आधुनिक आर.ओ. जल शुद्धिकरण संयंत्र की स्थापना की।

उद्यम शुरू होने के बाद साधना ने गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाया। आधुनिक तकनीक और बेहतर सेवा के कारण कम समय में ही स्थानीय लोगों का विश्वास उनके उद्यम पर बढ़ने लगा। स्वच्छ पेयजल की बढ़ती मांग के साथ उनका व्यवसाय भी निरंतर विस्तार करता गया और क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान स्थापित हुई।

आज जे.बी. वाटर सप्लाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। इस उद्यम के माध्यम से साधना दस लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही हैं, जिससे कई परिवारों की आजीविका को भी संबल मिला है। उनका यह प्रयास केवल एक सफल व्यवसाय नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का भी उदाहरण है।

एक नज़र में...

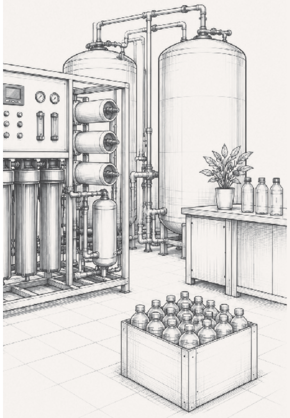

- **लाभार्थी:** साधना
- **जनपद:** इटावा
- **उद्यम:** जे.बी. वाटर सप्लाई (आर.ओ. प्लांट)
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,49,715
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, महेवा शाखा
- **रोजगार** : 10 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

सफलता हमेशा पूर्व निर्धारित रास्तों से नहीं मिलती। कभी-कभी परिस्थितियाँ हमें नई दिशा दिखाती हैं और वही दिशा जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि बन जाती है। सही मार्गदर्शन, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग किसी भी युवा को आत्मनिर्भरता की नई पहचान दिला सकता है।

शादाब खान फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

पारंपरिक जरी कला को मिला विस्तार

शादाब खान ने जरी हैंडवर्क से आत्मनिर्भरता और रोजगार की नई मिसाल बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता ने फर्रुखाबाद के शादाब खान को अपने जरी हैंडवर्क व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम पारंपरिक कारीगरी को नई पहचान देने के साथ-साथ नौ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर स्थानीय हस्तशिल्प को भी नई मजबूती प्रदान कर रहा है।

फर्रुखाबाद के निवासी शादाब खान बचपन से ही जरी कारीगरी की पारंपरिक कला से जुड़े रहे हैं। वर्षों से इस शिल्प को सीखते हुए उनके मन में इसे बड़े स्तर पर स्थापित करने और अधिक लोगों तक इसकी पहचान पहुँचाने का सपना था। हुनर और अनुभव होने के बावजूद सीमित पूंजी के कारण वे अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रहे थे।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, अमेठी जदीद शाखा से उन्हें ₹4.25 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने अपने जरी हैंडवर्क व्यवसाय को व्यवस्थित एवं आधुनिक स्वरूप में आगे बढ़ाया।

ऋण से प्राप्त धनराशि का उपयोग उन्होंने आवश्यक उपकरण, कच्चा माल और कार्यस्थल के विकास में किया। पारंपरिक जरी कढ़ाई की बारीक कला को गुणवत्ता और समयबद्ध कार्य के साथ प्रस्तुत करने के कारण उनके उत्पादों की मांग लगातार बढ़ने लगी। उनकी कारीगरी ने स्थानीय बाजार के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों के ग्राहकों का भी विश्वास जीता।

आज शादाब खान का उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और नौ लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है। उनके प्रयासों से पारंपरिक जरी कला को नई पहचान मिली है तथा कई कारीगरों को अपने कौशल के अनुरूप सम्मानजनक आजीविका प्राप्त हुई है। उनका उद्देश्य भविष्य में अपने व्यवसाय का और विस्तार कर अधिक से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना तथा स्थानीय हस्तशिल्प को व्यापक बाजार तक पहुँचाना है।

एक नज़र में...

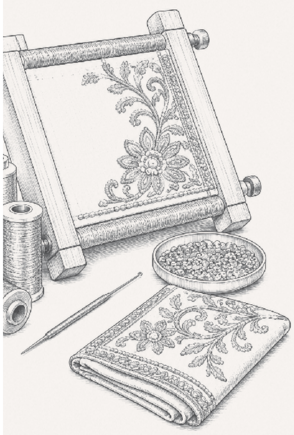

- **लाभार्थी:** शादाब खान
- **जनपद:** फर्रुखाबाद
- **उद्यम**: जरी हैंडवर्क
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक**: बैंक ऑफ बड़ौदा, अमेठी जदीद शाखा
- **रोजगार** : 9 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

पारंपरिक कौशल हमारी अमूल्य विरासत है। जब इसे आधुनिक सोच, गुणवत्तापूर्ण कार्य और सरकारी योजनाओं का सहयोग मिलता है, तो यह न केवल व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि स्थानीय कला, रोजगार और अर्थव्यवस्था को भी नई ऊँचाइयों तक पहुँचाता है।

निशा शर्मा फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

सौंदर्य से आत्मनिर्भरता

निशा शर्मा का ब्यूटी पार्लर बना महिलाओं के आत्मविश्वास और रोजगार का नया केंद्र

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹3 लाख की वित्तीय सहायता ने फतेहपुर की निशा शर्मा के स्वरोजगार के सपने को साकार किया। आज उनका निशा ब्यूटी पार्लर न केवल महिलाओं को बेहतर सौंदर्य सेवाएँ प्रदान कर रहा है, बल्कि तीन लोगों के लिए रोजगार का भी माध्यम बन चुका है।

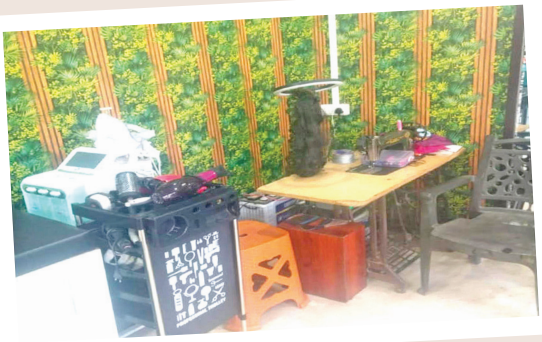

फतेहपुर की रहने वाली निशा शर्मा हमेशा से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ महिलाओं को बेहतर सौंदर्य एवं ग्रूमिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना चाहती थीं। उनके पास हुनर और आत्मविश्वास तो था, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपना ब्यूटी पार्लर शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और सभी आवश्यक औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद ₹3 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके स्वरोजगार के सपने को नई दिशा दी।

ऋण की सहायता से उन्होंने फतेहपुर के आबूनगर क्षेत्र में 'निशा ब्यूटी पार्लर' की स्थापना की। आधुनिक उपकरणों और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के साथ उन्होंने अपने पार्लर का संचालन शुरू किया। उनकी मेहनत, सेवा की गुणवत्ता और ग्राहकों के प्रति समर्पण ने कम समय में ही पार्लर को स्थानीय महिलाओं के बीच एक भरोसेमंद पहचान दिला दी।

आज उनका ब्यूटी पार्लर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और वे स्वयं आर्थिक रूप से सशक्त बनने के साथ-साथ तीन लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रही हैं। इस उद्यम ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उन्हें समाज में एक सफल महिला उद्यमी के रूप में भी पहचान दिलाई है।

निशा शर्मा मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहती हैं कि इस योजना ने उन्हें केवल वित्तीय सहायता ही नहीं दी, बल्कि अपने सपनों को साकार करने का आत्मविश्वास भी प्रदान किया।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** निशा शर्मा
- **जनपद:** फतेहपुर
- **उद्यम:** निशा ब्यूटी पार्लर, मुगल रोड, आबूनगर, फतेहपुर
- **परियोजना लागत:** ₹3,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, पटेल नगर शाखा, फतेहपुर
- **रोजगार** : 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

जब संकल्प मजबूत हो और अवसर का सही लाभ उठाया जाए, तो स्वरोजगार केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार और प्रेरणा का माध्यम बन जाता है।

सचिन कुमार | कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

सपनों के स्वाद को मिली नई पहचान

रेस्टोरेंट व्यवसाय ने सचिन कुमार को बनाया आत्मनिर्भर और रोजगारदाता

आर्थिक संसाधनों की कमी से जो सपना वर्षों तक अधूरा था, वह वित्तीय सहयोग मिलने के बाद साकार हो गया। आज मेरा रेस्टोरेंट परिवार की आय बढ़ाने के साथ-साथ तीन लोगों को रोजगार भी दे रहा है।

अपना रेस्टोरेंट खोलना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सपना था। मैं चाहता था कि अपने क्षेत्र के लोगों को स्वादिष्ट, स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराऊँ, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह सपना केवल सोच तक ही सीमित था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद मुझे ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ, जिसने मेरे सपनों को नई दिशा दी। इस सहयोग से मैंने ओसा, मंझनपुर में अपना रेस्टोरेंट शुरू किया।

शुरुआत में ग्राहकों का विश्वास जीतना चुनौती थी, इसलिए मैंने भोजन की गुणवत्ता, साफ-सफाई और बेहतर सेवा को अपनी प्राथमिकता बनाया। धीरे-धीरे लोगों का भरोसा बढ़ता गया और आज मेरा रेस्टोरेंट क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुका है। इससे मेरी आय में लगातार वृद्धि हुई है और परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से कहीं अधिक मजबूत हुई है।

सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि मेरे इस प्रयास से तीन लोगों को रोजगार भी मिला। योजना की पूरी प्रक्रिया सरल, पारदर्शी और समयबद्ध रही, जिससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। अब मेरा लक्ष्य अपने व्यवसाय का विस्तार कर और अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

एक नज़र में...

लाभार्थी: सचिन कुमार
जनपद: कौशाम्बी
उद्यम: रेस्टोरेंट
कार्यस्थल: ओसा, मंझनपुर
परियोजना लागत: ₹5,00,000
वितरित ऋण: ₹5,00,000
रोजगार सृजन: 3

इस सफ़र से सीख...

सपनों को मंज़िल तक पहुँचाने के लिए केवल मेहनत ही नहीं, सही समय पर मिला सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। अवसर का सही उपयोग ही सफलता की असली कुंजी है।

संजीदा अमरोहा, उत्तर प्रदेश

सुई-धागे से बुनी आत्मनिर्भरता की कहानी

संजीदा ने जैकेट निर्माण इकाई से बनाई अपनी नई पहचान

आर्थिक चुनौतियों के बीच शुरू हुआ एक छोटा-सा सपना आज सफल उद्यम बन चुका है। जैकेट निर्माण इकाई ने मुझे आत्मनिर्भर बनाया और छह लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित किए।

आत्मनिर्भर बनने की इच्छा तो हमेशा थी, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण अपना व्यवसाय शुरू करना आसान नहीं था। मैं चाहती थी कि ऐसा काम करूँ, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हो और दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर बन सकें। इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली, जिसने मेरे सपनों को नई दिशा दी।

योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद मुझे बैंक से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। इस सहयोग से मैंने अमरोहा के नौगावां तागा में जैकेट निर्माण इकाई की स्थापना की। शुरुआत में हर कदम नई चुनौती लेकर आया, लेकिन गुणवत्ता, समय पर काम और ग्राहकों के भरोसे ने धीरे-धीरे मेरे व्यवसाय को आगे बढ़ाया।

आज मेरी जैकेट निर्माण इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। यह उद्यम मुझे सम्मानजनक और नियमित आय देने के साथ-साथ छह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का माध्यम भी बन चुका है। सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि आज लोग मुझे एक सफल महिला उद्यमी के रूप में पहचानते हैं और मेरा सफर अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन रहा है।

आज मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने परिवार की जिम्मेदारियां निभा रही हूँ। मेरा विश्वास है कि यदि महिलाओं को सही अवसर और सहयोग मिले, तो वे न केवल अपना भविष्य बदल सकती हैं, बल्कि समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

एक नज़र में...

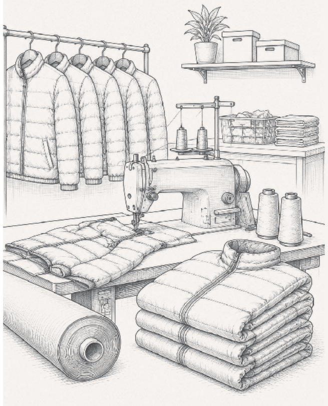

- **लाभार्थी:** संजीदा
- **जनपद:** अमरोहा
- **उद्यम** जैकेट निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,37,000
- **रोजगार सृजन:** 6

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भर बनने की शुरुआत एक साहसिक निर्णय से होती है। मेहनत और सही अवसर मिल जाएँ, तो हर महिला अपनी पहचान स्वयं बना सकती है।

नितिन बागपत, उत्तर प्रदेश

कर्मचारी से उद्यमी बनने तक का प्रेरक सफर

नितिन ने अपने रेस्टोरेंट से सपनों को दी नई उड़ान

दूसरों के रेस्टोरेंट में काम करते हुए अपना व्यवसाय शुरू करने का सपना देखा। समय पर मिले वित्तीय सहयोग ने उस सपने को साकार किया और आज मेरा रेस्टोरेंट चार युवाओं के लिए भी रोजगार का माध्यम बन चुका है।

हर अनुभव हमें आगे बढ़ने की सीख देता है। मैंने करियर की शुरुआत फ्रेंचाइज़ी रेस्टोरेंट में कर्मचारी के रूप में की। वहीं काम करते हुए मैंने रेस्टोरेंट संचालन की बारीकियां सीखीं और मन में रेस्टोरेंट खोलने का सपना संजोया। सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह सपना अधूरा रहा।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत ब्याजमुक्त ऋण और सहयोग के बारे में जानकर मैंने जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केन्द्र, बागपत से संपर्क किया। CM YUVA Fellow के मार्गदर्शन में आवेदन प्रक्रिया पूरी हुई तथा मुझे बैंक ऑफ बड़ौदा से ₹2,12,112 का ऋण प्राप्त हुआ। अवसर जिसने मेरे सपने को वास्तविकता में बदल दिया।

वित्तीय सहायता मिलने के बाद मैंने टटीरी, बागपत में 'द हंगर पॉइंट' नाम से अपना रेस्टोरेंट शुरू किया। शुरुआत में हर ग्राहक का विश्वास जीतना सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी। गुणवत्तापूर्ण भोजन, स्वच्छता और बेहतर सेवा को मैंने पहचान बनाया। आज मेरा रेस्टोरेंट संचालित हो रहा है। इससे लगभग ₹60,000 का मासिक कारोबार हो रहा है और सभी खर्चों के बाद लगभग ₹20,000 की नियमित बचत हो जाती है।

सबसे अधिक संतोष इस बात का है कि आज मैं केवल स्वयं आत्मनिर्भर नहीं बना हूँ, बल्कि चार स्थानीय युवाओं को भी रोजगार उपलब्ध करा रहा हूँ। कर्मचारी से उद्यमी बनने का यह सफर मेरे लिए मेहनत, आत्मविश्वास और सही अवसर की ताकत का प्रमाण है। भविष्य में मेरा लक्ष्य अपने व्यवसाय का विस्तार करना और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर तैयार करना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** नितिन
- **जनपद:** बागपत
- **उद्यम:** द हंगर पॉइंट (रेस्टोरेंट)
- **परियोजना लागत:** ₹2,12,112
- **वितरित ऋण:** ₹2,12,112
- **वित्तपोषण बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, बागपत
- **रोजगार सृजन:** 4
- **अनुमानित मासिक बचत:** लगभग ₹20,000

इस सफ़र से सीख...

सीखने की लगन और अवसर का सही उपयोग, एक कर्मचारी को भी सफल उद्यमी बना सकता है। सपनों को सच करने के लिए पहला कदम उठाना सबसे जरूरी होता है।

सतीश कुमार शुक्ला श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश

हर बूंद में आत्मनिर्भरता का विश्वास...

सतीश कुमार शुक्ला ने वॉटर प्लांट से बदली अपनी जिंदगी

आर्थिक अभाव के कारण वर्षों तक अपना व्यवसाय शुरू नहीं कर पाए। समय पर मिले वित्तीय सहयोग से वॉटर प्लांट की स्थापना हुई और आज यह उद्यम परिवार की आय के साथ तीन लोगों की आजीविका का भी आधार बन गया है।

आत्मनिर्भर बनने का सपना मेरे मन में हमेशा था, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपना व्यवसाय शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था। मैं चाहता था कि ऐसा काम करूँ, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हो और अपने क्षेत्र में भी एक नई पहचान बना सकूँ।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। मैंने आवेदन किया और बैंक ऑफ इंडिया, भिनगा शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस सहयोग ने मेरे सपने को नई दिशा दी और मैंने अपने गांव टेड़वा बनकटवा में वॉटर प्लांट की स्थापना की।

शुरुआत में चुनौतियाँ थीं, लेकिन गुणवत्ता और भरोसे को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास बढ़ता गया और आज मेरा वॉटर प्लांट सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इससे न केवल मेरे परिवार की आय में स्थिरता आई, बल्कि तीन स्थानीय लोगों को भी रोजगार मिला। यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मेरा उद्यम दूसरों की आजीविका का भी सहारा बन रहा है। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो महसूस होता है कि सही समय पर मिला सहयोग जीवन बदल सकता है। अब मेरा लक्ष्य अपने व्यवसाय का विस्तार करना और भविष्य में अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है।

एक नज़र में...

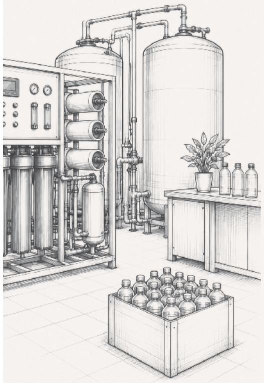

- **लाभार्थी:** सतीश कुमार शुक्ला
- **जनपद:** श्रावस्ती
- **उद्यम:** वॉटर प्लांट
- **कार्यस्थल:** टेड़वा बनकटवा, श्रावस्ती
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ इंडिया, भिनगा शाखा
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

जब मेहनत को सही अवसर का साथ मिलता है, तो छोटे सपने भी बड़ी सफलताओं में बदल जाते हैं। आत्मनिर्भरता की शुरुआत एक दृढ़ संकल्प से होती है।

चन्द्रशेखर यादव अमेठी, उत्तर प्रदेश

दूध से सपनों तक का सफर

चन्द्रशेखर यादव ने खोवा और पनीर निर्माण से बनाई नई पहचान

रोजगार की तलाश में भटक रहे चन्द्रशेखर यादव को मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उद्यमिता की नई राह दिखाई। ₹5 लाख की वित्तीय सहायता से उन्होंने खोवा एवं पनीर निर्माण इकाई स्थापित की। आज वे सफल उद्यमी होने के साथ तीन लोगों को रोजगार देकर स्थानीय डेयरी उद्योग को नई पहचान दे रहे हैं।

रोजगार की तलाश के बीच मन में हमेशा यह विश्वास था कि यदि सही अवसर मिले, तो मैं अपना व्यवसाय शुरू कर सकता हूँ। इसी दौरान विकास खंड भेटुआ में आयोजित एक जागरूकता शिविर में मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। वहीं से मेरे जीवन ने एक नई दिशा पकड़ ली।

मैंने खोवा और पनीर निर्माण इकाई स्थापित करने का निर्णय लिया और योजना के अंतर्गत आवेदन किया। भारतीय स्टेट बैंक, एच.ओ.एल. कोरवा शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त होने के बाद आवश्यक मशीनें और उपकरण खरीदे तथा अपने गांव कोरारी लच्छनशाह में इकाई की शुरुआत की।

शुरुआती दिनों में बाजार बनाना आसान नहीं था। बिक्री सीमित थी, लेकिन मैंने उत्पादों की गुणवत्ता से कभी समझौता नहीं किया। धीरे-धीरे ग्राहकों का विश्वास बढ़ा और मेरे खोवा व पनीर की मांग लगातार बढ़ने लगी। आज मेरी इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है और परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से कहीं अधिक मजबूत हुई है।

इस उद्यम की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मैं केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि तीन स्थानीय लोगों के लिए भी रोजगार का माध्यम बन सका हूँ। अब मेरा लक्ष्य उत्पादन का विस्तार कर अधिक से अधिक लोगों तक गुणवत्तापूर्ण डेयरी उत्पाद पहुँचाना और स्थानीय युवाओं के लिए नए रोजगार के अवसर सृजित करना है।

एक नज़र में...

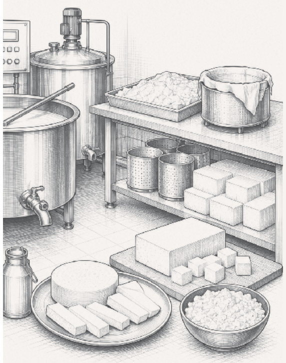

- **लाभार्थी:** चन्द्रशेखर यादव
- **जनपद:** अमेठी
- **उद्यम:** खोवा एवं पनीर निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, एच.ओ.एल. कोरवा शाखा
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

सही जानकारी, समय पर मिला सहयोग और गुणवत्ता के प्रति समर्पण किसी भी छोटे प्रयास को सफल उद्यम में बदल सकते हैं। सफलता उन्हीं को मिलती है जो अवसर मिलने पर आगे बढ़ने का साहस करते हैं।

कुश भारद्वाज बिजनौर, उत्तर प्रदेश

मेहनत को मिला स्वाद और सफलता

कुश भारद्वाज ने नट्स प्रोसेसिंग उद्योग से बनाई अपनी अलग पहचान

बढ़ती मांग को अवसर में बदलते हुए शुरू किया गया नट्स प्रोसेसिंग उद्योग आज सफल उद्यम बन चुका है। इस पहल ने मुझे आत्मनिर्भर बनाया और पाँच लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित किए।

बाजार में अच्छे गुणवत्ता वाले भुने और पैक्ड ड्राई फ्रूट्स की बढ़ती मांग को देखकर मेरे मन में हमेशा अपना खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित करने का विचार आता था। व्यवसाय की पूरी योजना तैयार थी, लेकिन पर्याप्त पूंजी न होने के कारण यह सपना आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता मिलने के बाद मैंने आधुनिक मशीनों के साथ अपनी नट्स रोस्टिंग एवं पैकिंग यूनिट की स्थापना की। रोस्टिंग मशीन, मसाला मिक्सिंग मशीन, डिजिटल वेटिंग मशीन और पैकिंग मशीन जैसे उपकरणों ने मेरे व्यवसाय को व्यवस्थित रूप से शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शुरुआत से ही मैंने गुणवत्ता, स्वच्छता और आकर्षक पैकेजिंग पर विशेष ध्यान दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरे उत्पाद स्थानीय किराना दुकानों, सुपरमार्केट और अन्य बाजारों में तेजी से पसंद किए जाने लगे। ग्राहकों की बदलती पसंद को ध्यान में रखते हुए मैंने फ्लेवर्ड और प्रीमियम नट्स की नई श्रृंखला भी बाजार में उतारी, जिससे व्यवसाय का दायरा लगातार बढ़ता गया।

आज मेरा उद्यम मुझे नियमित आय देने के साथ-साथ पाँच स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का माध्यम भी बन चुका है। यह सफर मुझे विश्वास दिलाता है कि सही सोच, समय पर मिला सहयोग और निरंतर गुणवत्ता किसी भी छोटे विचार को सफल उद्योग में बदल सकते हैं।

एक नज़र में...

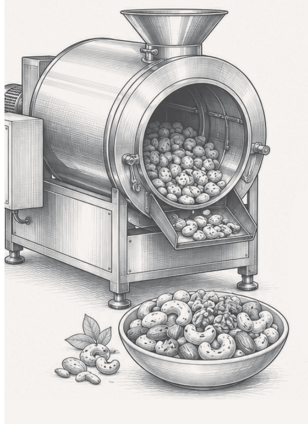

- **लाभार्थी:** कुश भारद्वाज
- **जनपद:** बिजनौर
- **उद्यम:** नट्स रोस्टिंग एवं पैकिंग यूनिट
- **परियोजना लागत:** ₹4,23,560
- **वितरित ऋण:** ₹4,23,560
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, सिविल लाइन शाखा
- **रोजगार सृजन:** 5

इस सफ़र से सीख...

बाजार की जरूरत को समझकर उठाया गया सही कदम सफलता की मजबूत नींव बनता है। गुणवत्ता और नवाचार ही किसी उद्यम को लंबे समय तक आगे बढ़ाते हैं।

दीपू प्रजापति चंदौली, उत्तर प्रदेश

नौकरी से आगे बढ़कर उद्यमिता की नई राह

दीपू प्रजापति ने रेडीमेड गारमेंट निर्माण से बदली अपनी पहचान

प्रतियोगी परीक्षाओं और नौकरी के बाद भी मन को संतोष नहीं मिला। अपने सपनों पर विश्वास किया, उद्यम शुरू किया और आज आत्मनिर्भर बनने के साथ तीन लोगों के लिए रोजगार का भी माध्यम बन गए।

शिक्षा पूरी करने के बाद मेरा सपना भी लाखों युवाओं की तरह एक अच्छी नौकरी पाने का था। मैंने सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की और पूरी मेहनत से प्रयास किए, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिली। इसके बाद मैंने एक निजी दूरसंचार कंपनी में नौकरी शुरू की। नौकरी तो मिल गई, लेकिन मन हमेशा यही कहता था कि यदि अपना कोई व्यवसाय हो, तो मैं अपनी क्षमता का बेहतर उपयोग कर सकता हूँ और दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर बना सकता हूँ।

इसी दौरान जिला उद्योग केंद्र के एक जन-जागरूकता शिविर में मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। यह मेरे लिए एक नया अवसर था। मैंने रेडीमेड गारमेंट निर्माण इकाई स्थापित करने का निर्णय लिया। विभाग के मार्गदर्शन और बैंक के सहयोग से ₹4.50 लाख का ऋण तथा ₹50,000 के स्वयं के निवेश से अपने उद्यम की शुरुआत की।

आज मेरी इकाई में लोअर और टी-शर्ट का निर्माण किया जाता है। शुरुआत में बाजार बनाना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन गुणवत्ता और ग्राहकों के भरोसे ने धीरे-धीरे मेरे व्यवसाय को नई पहचान दिलाई। आज यह उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है, जिससे मुझे नियमित आय प्राप्त हो रही है और तीन अन्य लोगों को भी रोजगार मिला है। यह केवल मेरे व्यवसाय की सफलता नहीं, बल्कि मेरे लिए समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का अवसर भी है। भविष्य में मेरा लक्ष्य उत्पादन क्षमता बढ़ाना, अपने उत्पादों को नए बाजारों तक पहुँचाना और अधिक युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना है।

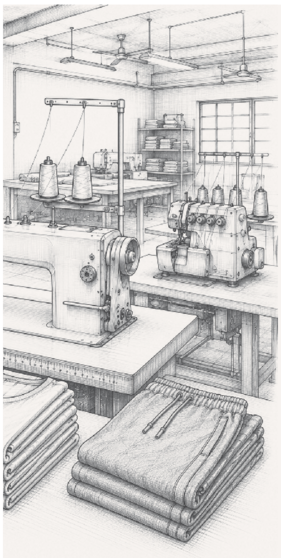

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** दीपू प्रजापति
- **जनपद:** चंदौली
- **उद्यम:** रेडीमेड गारमेंट निर्माण (लोअर एवं टी-शर्ट)
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, माझवार खास शाखा
- **रोजगार सृजन:** 3
- **अनुमानित मासिक आय** लगभग ₹15,000

इस सफ़र से सीख...

हर सपना सरकारी नौकरी से ही पूरा नहीं होता। सही अवसर, मेहनत और आत्मविश्वास के साथ उद्यमिता भी सम्मानजनक और सफल भविष्य की मजबूत राह बन सकती है।

भरत सिंह संभल, उत्तर प्रदेश

मसालों से महकी सफलता की कहानी

भरत सिंह ने मसाला निर्माण इकाई से आत्मनिर्भरता की राह चुनी

रोजगार की तलाश में भटक रहे एक युवा ने मसाला निर्माण को अपना भविष्य बनाया। आज उनका उद्यम सम्मानजनक आय का स्रोत है और आत्मनिर्भर जीवन की मजबूत नींव बन चुका है।

शिक्षा पूरी करने के बाद सबसे बड़ा सवाल यही था कि भविष्य की शुरुआत कहाँ से करूँ। नौकरी की तलाश जारी थी, लेकिन मन में हमेशा यह इच्छा थी कि अपना ऐसा काम हो, जो मुझे आत्मनिर्भर बनाए और परिवार को आर्थिक सुरक्षा दे। इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली, जिसने मेरी सोच को नई दिशा दी।

योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद विभागीय मार्गदर्शन और बैंक के सहयोग से मुझे समय पर वित्तीय सहायता मिली। इस सहयोग से मैंने मसाला मैन्युफैक्चरिंग एवं पैकेजिंग यूनिट की स्थापना की। शुरुआत छोटे स्तर से हुई, लेकिन गुणवत्ता, स्वच्छता और ग्राहकों के विश्वास को अपनी सबसे बड़ी पूंजी बनाया। धीरे-धीरे मेरा व्यवसाय आगे बढ़ने लगा और आज यह नियमित रूप से संचालित हो रहा है।

इस उद्यम ने मुझे केवल आय का साधन ही नहीं दिया, बल्कि अपने पैरों पर खड़े होने का आत्मविश्वास भी दिया है। आज मैं सम्मानजनक आजीविका अर्जित कर रहा हूँ और एक स्थानीय व्यक्ति को भी रोजगार उपलब्ध करा रहा हूँ। मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि अब मैं अवसरों की तलाश करने वाला युवा नहीं, बल्कि स्वयं अवसर बनाने वाला उद्यमी हूँ।

एक नज़र में...

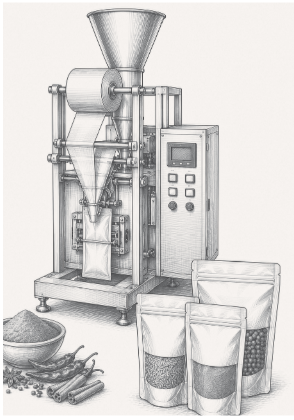

- **लाभार्थी:** भरत सिंह
- **जनपद:** संभल
- **उद्यम:** मसाला मैन्युफैक्चरिंग एवं पैकेजिंग यूनिट
- **परियोजना लागत:** ₹1,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹75,000
- **रोजगार सृजन:** 1

इस सफ़र से सीख...

छोटी शुरुआत कभी छोटी नहीं होती। दृढ़ संकल्प, सही मार्गदर्शन और निरंतर मेहनत किसी भी युवा को आत्मनिर्भर बना सकती है।

कुमारी शोभा रानी हरदोई, उत्तर प्रदेश

सुई-धागे से बुना आत्मनिर्भरता का सपना

शोभा रानी ने छोटे सिलाई कार्य को सफल बुटीक में बदला

छोटी सिलाई की दुकान से शुरुआत करने वाली शोभा रानी ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से अपने व्यवसाय का विस्तार किया। ₹5 लाख की वित्तीय सहायता से स्थापित 'शोभा बुटीक सेंटर' आज सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और चार महिलाओं को रोजगार देकर महिला उद्यमिता की प्रेरक मिसाल बन चुका है।

सिलाई मेरे लिए केवल एक काम नहीं, बल्कि अपनी पहचान बनाने का माध्यम थी। मैं एक छोटी-सी सिलाई की दुकान चलाती थी, लेकिन उससे होने वाली आय परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। मन में हमेशा यह सपना था कि अपने इस छोटे से काम को एक आधुनिक बुटीक का रूप दूँ, ताकि अपने हुनर को नई पहचान मिल सके।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत इंडियन बैंक, हरदोई से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस सहयोग से मैंने नई सिलाई मशीनें, आधुनिक उपकरण और आवश्यक संसाधन जुटाकर अपने छोटे व्यवसाय को 'शोभा बुटीक सेंटर' के रूप में विकसित किया।

आज मेरा बुटीक सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। ग्राहकों की पसंद के अनुरूप बेहतर डिज़ाइन और गुणवत्तापूर्ण कार्य के कारण मेरे काम को अच्छी पहचान मिली है। अब मुझे प्रतिदिन लगभग ₹2,000 की आय प्राप्त होती है, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। सबसे बड़ी खुशी यह है कि मेरे साथ चार स्थानीय कारीगर भी काम कर रहे हैं और उन्हें नियमित रोजगार मिल रहा है।

आज मैं गर्व के साथ कह सकती हूँ कि सही अवसर और अपने हुनर पर विश्वास ने मेरी जिंदगी बदल दी। अब मेरा लक्ष्य अपने बुटीक का और विस्तार करना तथा अधिक से अधिक महिलाओं को रोजगार और प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनने में सहयोग करना है।

एक नज़र में...

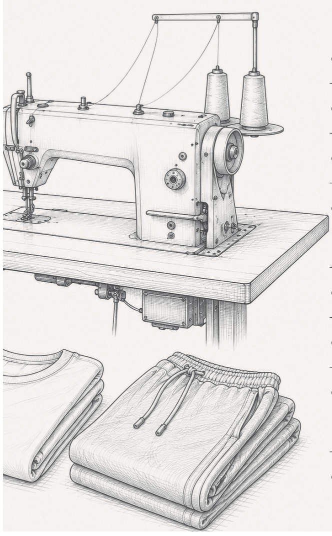

- **लाभार्थी:** कुमारी शोभा रानी
- **जनपद:** हरदोई
- **उद्यम:** शोभा बुटीक सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक, हरदोई
- **अनुमानित दैनिक आय:** लगभग ₹2,000
- **रोजगार सृजन:** 4

इस सफ़र से सीख...

हुनर तभी नई पहचान पाता है, जब उसे अवसर और आत्मविश्वास का साथ मिलता है। छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव की नींव बन सकते हैं।

एकांश चौहान | बदायूँ, उत्तर प्रदेश

कौशल को बनाया सेवा और सफलता का माध्यम

एकांश चौहान ने फिजियोथेरेपी क्लीनिक से आत्मनिर्भरता की नई राह बनाई

फिजियोथेरेपी का प्रशिक्षण तो था, लेकिन अपना क्लीनिक शुरू करने के लिए संसाधन नहीं थे। समय पर मिले सहयोग से आज मेरा क्लीनिक सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और पाँच लोगों के लिए रोजगार का माध्यम भी बन चुका है।

फिजियोथेरेपी का प्रशिक्षण और डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद मेरा सपना था कि अपना क्लीनिक स्थापित कर लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराऊँ। मेरे पास कौशल और आत्मविश्वास तो था, लेकिन पर्याप्त पूंजी न होने के कारण यह सपना आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

इसी दौरान मुझे जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र के माध्यम से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। आवेदन प्रक्रिया के दौरान मिले मार्गदर्शन और बैंक के सहयोग से मुझे ₹4.25 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस सहायता से मैंने बदायूँ में अपना फिजियोथेरेपी एवं लेजर क्लीनिक स्थापित किया।

शुरुआत से ही मेरा प्रयास रहा कि मरीजों को गुणवत्तापूर्ण उपचार, आधुनिक सुविधाएँ और भरोसेमंद सेवाएँ मिलें। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास बढ़ता गया और आज मेरा क्लीनिक सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इससे मुझे प्रतिमाह लगभग ₹60,000 की आय प्राप्त हो रही है। सबसे बड़ी संतुष्टि इस बात की है कि मेरे इस उद्यम से पाँच लोगों को भी रोजगार मिला है और वे भी अपने परिवार की आजीविका से जुड़ सके हैं।

आज मुझे गर्व है कि मेरा कौशल केवल मेरी आजीविका का साधन नहीं, बल्कि लोगों के स्वास्थ्य और समाज की सेवा का माध्यम भी बन गया है। भविष्य में मेरा लक्ष्य अपनी सेवाओं का विस्तार कर अधिक से अधिक लोगों तक बेहतर फिजियोथेरेपी सुविधाएँ पहुँचाना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** एकांश चौहान
- **जनपद:** बदायूँ
- **उद्यम:** फिजियोथेरेपी एवं लेजर क्लीनिक
- **कार्यस्थल:** ओवरब्रिज के पास, पुलिस लाइन चौराहा, बदायूँ
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, नेकपुर शाखा, बदायूँ
- **रोजगार सृजन:** 5

इस सफ़र से सीख...

जब कौशल को सही अवसर और संसाधनों का साथ मिलता है, तो वह केवल करियर नहीं, बल्कि समाज की सेवा और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार बन जाता है।

नीति दुबे सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

सौंदर्य के हुनर से आत्मनिर्भरता की पहचान

नीति दुबे ने ब्यूटी पार्लर से अपने सपनों को दिया नया आकार

अपने हुनर को व्यवसाय में बदलने का सपना आर्थिक अभाव के कारण अधूरा था। समय पर मिले सहयोग से आज मेरा ब्यूटी पार्लर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और तीन लोगों के लिए रोजगार का माध्यम भी बन चुका है।

मेरे मन में हमेशा यह इच्छा थी कि अपने हुनर के दम पर एक ऐसा ब्यूटी पार्लर स्थापित करूँ, जहाँ महिलाओं को बेहतर सेवाएँ मिलें और मुझे भी आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिले। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह सपना लंबे समय तक केवल एक इच्छा बनकर रह गया था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। मैंने आवेदन किया और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रॉबर्ट्सगंज शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहयोग से मैंने सिविल लाइंस रोड, रॉबर्ट्सगंज में अपना ब्यूटी पार्लर शुरू किया। शुरुआत में ग्राहकों का विश्वास जीतना चुनौती थी, लेकिन गुणवत्तापूर्ण सेवाओं, आधुनिक सुविधाओं और आत्मीय व्यवहार ने धीरे-धीरे मेरे पार्लर को एक नई पहचान दिला दी।

आज मेरा पार्लर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इससे मुझे सम्मानजनक आय प्राप्त हो रही है और तीन लोगों को भी रोजगार मिला है। सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि आज मैं केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं कर रही, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी अवसरों के नए द्वार खोल रही हूँ।

अब मेरा लक्ष्य अपने पार्लर का विस्तार करना और अधिक महिलाओं को प्रशिक्षण एवं रोजगार से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहयोग देना है। मेरा विश्वास है कि यदि हुनर को सही अवसर और सहयोग मिल जाए, तो हर महिला अपनी अलग पहचान बना सकती है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** नीति दुबे
- **जनपद:** सोनभद्र
- **उद्यम:** ब्यूटी पार्लर
- **कार्यस्थल:** सिविल लाइंस रोड, बढ़ौली चौराहा, रॉबर्ट्सगंज
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रॉबर्ट्सगंज शाखा
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

हुनर सबसे बड़ी पूंजी है। जब उसे अवसर, मेहनत और आत्मविश्वास का साथ मिलता है, तो वह आत्मनिर्भरता की मजबूत पहचान बन जाता है।

रितेश पोरवाल औरैया, उत्तर प्रदेश

स्वास्थ्य सेवा से आत्मनिर्भरता तक

रितेश पोरवाल ने डायग्नोस्टिक सेंटर से स्वास्थ्य सेवा और रोजगार को दी नई दिशा

बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ लोगों तक पहुँचाने का सपना आर्थिक अभाव के कारण अधूरा था। समय पर मिले वित्तीय सहयोग से आज मेरा डायग्नोस्टिक सेंटर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और दो लोगों के लिए रोजगार का भी माध्यम बन चुका है।

स्वास्थ्य सेवा मेरे लिए केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का माध्यम है। मैं हमेशा चाहता था कि लोगों को बेहतर और भरोसेमंद डायग्नोस्टिक सुविधाओं के लिए बड़े शहरों का रुख न करना पड़े। मेरा सपना था कि अपने जिले में ऐसा सेंटर स्थापित करूँ, जहाँ आधुनिक जाँच सुविधाएँ उपलब्ध हों और लोगों को समय पर गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ मिल सकें। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह सपना साकार नहीं हो पा रहा था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना ने मेरे भीतर यह विश्वास जगाया कि अब अपने सपनों को वास्तविक रूप दिया जा सकता है। आवेदन प्रक्रिया पूरी होने के बाद यूपी ग्रामीण बैंक, औरैया से ₹3.75 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने मेरे लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए और मैंने 'नीलम डायग्नोस्टिक सेंटर (Pathkind Labs Authorised Collection Centre)' की स्थापना की।

शुरुआत में लोगों का विश्वास जीतना और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की पहचान बनाना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन मैंने हर जाँच में विश्वसनीयता, पारदर्शिता और बेहतर सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। धीरे-धीरे लोगों का भरोसा बढ़ता गया और आज मेरा डायग्नोस्टिक सेंटर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। यहाँ प्रतिदिन अनेक लोग स्वास्थ्य जाँच की सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं और उन्हें समय पर विश्वसनीय रिपोर्ट उपलब्ध कराई जा रही है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** रितेश पोरवाल
- **जनपद:** औरैया
- **उद्यम:** नीलम डायग्नोस्टिक सेंटर (Pathkind Labs Authorised Collection Centre)
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,75,000
- **रोजगार सृजन:** 2

इस सफ़र से सीख...

जब सेवा का उद्देश्य मेहनत और सही अवसर से जुड़ जाता है, तो सफलता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी बन जाती है।

रेखा यादव लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हौसले ने बदली जिंदगी की तस्वीर

रेखा यादव ने अपने हुनर से बुटीक व्यवसाय को दी नई पहचान

शारीरिक दिव्यांगता और आर्थिक अभाव के बावजूद रेखा यादव ने अपने सपनों को हारने नहीं दिया। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत ₹4.37 लाख की ब्याजमुक्त वित्तीय सहायता से उन्होंने 'रेखा बुटीक' की स्थापना की। आज वे आत्मनिर्भर महिला उद्यमी हैं और तीन लोगों को रोजगार देकर अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं।

मैं रेखा यादव हूँ। शारीरिक रूप से दिव्यांग होने के बावजूद मैंने कभी अपने सपनों को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। बचपन से ही सिलाई, डिजाइनिंग और बुटीक के कार्य में मेरी गहरी रुचि थी। मेरा सपना था कि अपना स्वयं का बुटीक स्थापित करूँ, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। मैंने आवेदन किया और बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से ₹4.37 लाख का ब्याजमुक्त ऋण प्राप्त हुआ। यह सहयोग मेरे लिए केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास बढ़ाने वाला अवसर भी था। इसी सहायता से मैंने गोमती नगर, लखनऊ में 'रेखा बुटीक' की स्थापना की।

शुरुआत में चुनौतियाँ कम नहीं थीं। एक महिला और दिव्यांग होने के कारण कई लोगों को मेरी सफलता पर संदेह था, लेकिन मैंने अपने काम की गुणवत्ता, ग्राहकों की पसंद और निरंतर मेहनत को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया। धीरे-धीरे मेरे डिज़ाइन और सिलाई कार्य को लोगों ने पसंद करना शुरू किया और आज मेरा बुटीक सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम से मुझे सम्मानजनक आजीविका मिली है तथा तीन अन्य लोगों को भी रोजगार प्राप्त हुआ है।

आज मुझे विश्वास है कि शारीरिक चुनौतियाँ कभी भी सपनों की राह में बाधा नहीं बनतीं। सही अवसर, दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत से हर लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। भविष्य में मेरा लक्ष्य अपने बुटीक को एक प्रतिष्ठित ब्रांड के रूप में विकसित करना तथा अधिक महिलाओं, विशेषकर दिव्यांग महिलाओं को प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना है।

एक नज़र में...

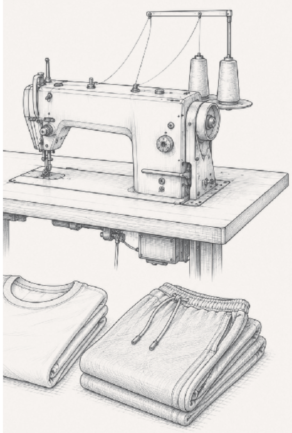

- **लाभार्थी:** रेखा यादव
- **जनपद:** लखनऊ
- **उद्यम:** रेखा बुटीक
- **कार्यस्थल:** सेक्टर-6, गोमती नगर, लखनऊ
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,37,000 (ब्याजमुक्त)
- **बैंक:** बैंक ऑफ इंडिया
- **रोजगार सृजन:** 3

इस सफ़र से सीख...

दिव्यांगता किसी व्यक्ति की क्षमता को सीमित नहीं करती, बल्कि हौसला उसे नई ऊँचाइयों तक ले जाता है। सही अवसर, आत्मविश्वास और निरंतर मेहनत से हर सपना साकार किया जा सकता है और दूसरों के लिए भी प्रेरणा बना जा सकता है।

शिवम गुप्ता | फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

रचनात्मक सोच को मिला कारोबार का नया विस्तार

शिवम गुप्ता ने एम.वी. ग्राफिक्स से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने फिरोजाबाद के शिवम गुप्ता के छोटे से व्यवसाय को नई उड़ान दी। आज उनका एम.वी. ग्राफिक्स आधुनिक प्रिंटिंग एवं ग्राफिक डिज़ाइन सेवाएँ प्रदान करने के साथ दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

फिरोजाबाद के निवासी शिवम गुप्ता ने सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों के बीच अपने व्यवसाय की शुरुआत की। ग्राफिक डिज़ाइन और प्रिंटिंग के क्षेत्र में आगे बढ़ने का उनका सपना तो था, लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में वे अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रहे थे। कम संसाधनों के कारण खर्च अधिक और आय सीमित थी, फिर भी उन्होंने अपने लक्ष्य से कभी समझौता नहीं किया।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवेदन स्वीकृत होने के बाद उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके व्यवसाय को नई दिशा दी और उन्होंने एम.वी. ग्राफिक्स को आधुनिक संसाधनों एवं नई तकनीकों से सुसज्जित किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से शिवम ने आवश्यक मशीनें, आधुनिक उपकरण और अन्य संसाधन खरीदे। इसके बाद उन्होंने ग्राफिक डिज़ाइन, डिजिटल प्रिंटिंग और अन्य प्रिंटिंग सेवाओं को बेहतर गुणवत्ता और समयबद्ध तरीके से उपलब्ध कराना शुरू किया। उनके कार्य की गुणवत्ता और ग्राहकों के प्रति प्रतिबद्धता के कारण कम समय में ही उनके व्यवसाय की पहचान मजबूत होती गई।

आज एम.वी. ग्राफिक्स सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और दो लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है। उनका व्यवसाय लगातार प्रगति कर रहा है और वे भविष्य में अपनी सेवाओं का और विस्तार करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। शिवम का मानना है कि मेहनत और सही अवसर मिलने पर कोई भी युवा अपने सपनों को सफल व्यवसाय में बदल सकता है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** शिवम गुप्ता
- **जनपद:** फिरोजाबाद
- **उद्यम:** एम.वी. ग्राफिक्स
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** पंजाब नेशनल बैंक, मोहल्ला गंज शाखा, फिरोजाबाद
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

संसाधनों की कमी सफलता की राह नहीं रोक सकती। यदि दृढ़ संकल्प, निरंतर मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही सहयोग मिल जाए, तो एक छोटा प्रयास भी सफल उद्यम का रूप ले सकता है और दूसरों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकता है।

ब्रजमोहन कुशवाह गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश

उजाले से उज्ज्वल भविष्य तक

ब्रजमोहन कुशवाह ने एलईडी लाइट निर्माण से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने गौतम बुद्ध नगर के ब्रजमोहन कुशवाह को आधुनिक एलईडी लाइट निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम सात लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भरता का प्रेरक उदाहरण बन गया है।

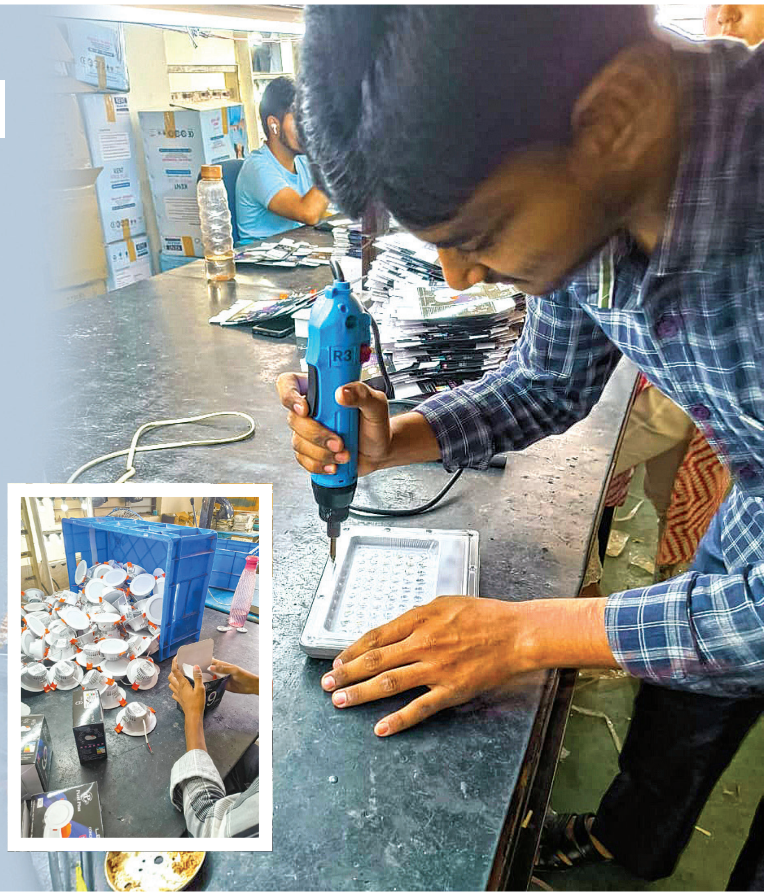

गौतम बुद्ध नगर के निवासी ब्रजमोहन कुशवाह का सपना था कि वे आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में अपना स्वयं का उद्योग स्थापित करें। उन्होंने देखा कि ऊर्जा की बचत करने वाले एलईडी उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है और यह क्षेत्र भविष्य की बड़ी संभावनाओं से जुड़ा हुआ है। इसी सोच के साथ उन्होंने एलईडी लाइट निर्माण इकाई स्थापित करने का निर्णय लिया, लेकिन आधुनिक मशीनों, उपकरणों और कच्चे माल के लिए आवश्यक पूंजी उनके पास उपलब्ध नहीं थी।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने ग्रेटर नोएडा में अपनी एलईडी लाइट निर्माण इकाई की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आधुनिक मशीनों और उत्पादन उपकरणों की व्यवस्था की तथा उच्च गुणवत्ता वाले ऊर्जा दक्ष एलईडी उत्पादों का निर्माण शुरू किया। गुणवत्ता, विश्वसनीयता और ग्राहकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए उत्पादों ने कम समय में ही बाजार में अपनी अलग पहचान बना ली। लगातार बेहतर गुणवत्ता और समयबद्ध आपूर्ति के कारण उनका व्यवसाय निरंतर प्रगति कर रहा है।

आज ब्रजमोहन कुशवाह की उत्पादन इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है और सात लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही है। उनका उद्यम स्थानीय स्तर पर औद्योगिक विकास को गति देने के साथ-साथ ऊर्जा संरक्षण के उद्देश्य को भी मजबूत कर रहा है।

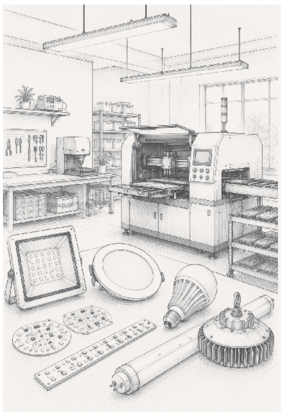

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** ब्रजमोहन कुशवाह
- **जनपद:** गौतम बुद्ध नगर
- **उद्यम:** एलईडी लाइट निर्माण
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** पंजाब नेशनल बैंक
- **रोजगार:** 7 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

आधुनिक तकनीक, नवाचार और सरकारी योजनाओं का प्रभावी उपयोग किसी भी युवा को सफल उद्यमी बना सकता है। जब तकनीक का साथ दृढ़ संकल्प से मिलता है, तो वह केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि औद्योगिक विकास और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव भी तैयार करता है।

बबीता दुबे गोंडा, उत्तर प्रदेश

हुनर का स्वाद, आत्मनिर्भरता का विश्वास

बबीता दुबे ने अचार निर्माण को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार

घर की रसोई में वर्षों से संजोया गया स्वाद आज बबीता दुबे की पहचान बन चुका है। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से उन्होंने अचार निर्माण इकाई स्थापित की, जिसने उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया और अन्य महिलाओं के लिए भी रोजगार के नए अवसर सृजित किए।

गोंडा जिले की बबीता दुबे हमेशा से मानती थीं कि यदि महिलाओं के कौशल को सही अवसर मिले, तो वे अपने परिवार ही नहीं बल्कि पूरे समाज की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। पारंपरिक तरीके से घर में अचार बनाना उनके परिवार की वर्षों पुरानी परंपरा थी। रिश्तेदार और परिचित उनके बनाए अचार की गुणवत्ता और स्वाद की सराहना करते थे, लेकिन यह हुनर कभी व्यवसाय का रूप नहीं ले सका।

सबसे बड़ी चुनौती पूंजी की थी। सीमित आय वाले परिवार में इतना निवेश संभव नहीं था कि आधुनिक मशीनें खरीदी जा सकें, अच्छी पैकेजिंग हो सके और बड़े स्तर पर उत्पादन शुरू किया जा सके। कई बार उन्होंने व्यवसाय शुरू करने का विचार बनाया, लेकिन आर्थिक परिस्थितियाँ हर बार उनके कदम रोक देती थीं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने पूरी तैयारी के साथ आवेदन किया और योजना के अंतर्गत इंडियन बैंक की मंडी समिति शाखा से ₹4.25 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके वर्षों पुराने सपने को नई दिशा दे दी।

ऋण मिलने के बाद बबीता ने अचार निर्माण की आधुनिक इकाई स्थापित की। उन्होंने स्वच्छता, गुणवत्ता और पारंपरिक स्वाद को अपनी सबसे बड़ी पहचान बनाया। स्थानीय बाजार से शुरुआत करने वाला उनका उत्पाद धीरे-धीरे आसपास के क्षेत्रों में भी लोकप्रिय होने लगा। बेहतर पैकेजिंग और ग्राहकों के विश्वास ने उनके व्यवसाय को निरंतर आगे बढ़ाया।

आज बबीता दुबे का उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उनके साथ तीन अन्य लोगों को भी नियमित रोजगार मिला है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** बबीता दुबे
- **जनपद:** गोंडा
- **उद्यम:** अचार निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक, मंडी समिति शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

घर का हुनर तभी नई पहचान बनता है, जब उसे अवसर, संसाधन और आत्मविश्वास का साथ मिल जाए। बबीता दुबे की कहानी बताती है कि परंपरा भी सफल उद्यम का आधार बन सकती है।

रीना यादव | गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

सुगंध से महक उठी सफलता की राह

रीना यादव का धूपबत्ती उद्योग बना आत्मनिर्भरता और रोजगार का सशक्त माध्यम

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने गोरखपुर की रीना यादव को अपने धूपबत्ती उद्योग की स्थापना का अवसर दिया। आज उनका उद्यम चार लोगों को रोजगार देकर स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रहा है।

गोरखपुर जनपद के रिगौली गाँव की निवासी रीना यादव हमेशा से ऐसा स्वरोजगार स्थापित करना चाहती थीं, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ अपने क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी सृजित कर सकें। सीमित संसाधनों के कारण उनका यह सपना लंबे समय तक अधूरा रहा, लेकिन उन्होंने कभी अपने प्रयासों को नहीं छोड़ा।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उन्हें ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊर्जा दी और उन्होंने रिगौली में धूपबत्ती उद्योग की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि का उपयोग उन्होंने आवश्यक मशीनों, कच्चे माल और उत्पादन संबंधी संसाधनों की व्यवस्था में किया। आधुनिक तकनीक और गुणवत्तापूर्ण निर्माण प्रक्रिया को अपनाते हुए उन्होंने अपने उद्योग का संचालन प्रारंभ किया। उनके उत्पादों की गुणवत्ता और ग्राहकों का विश्वास लगातार बढ़ता गया, जिससे उनका व्यवसाय भी तेजी से आगे बढ़ने लगा।

आज रीना यादव का धूपबत्ती उद्योग सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और वे चार लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रही हैं। उनके इस उद्यम ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि आसपास के लोगों के लिए भी रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं।

रीना यादव का कहना है कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उन्हें केवल वित्तीय सहायता ही नहीं दी, बल्कि अपने सपनों को साकार करने का आत्मविश्वास भी दिया। आज वे अन्य महिलाओं और युवाओं को भी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

एक नज़र में...

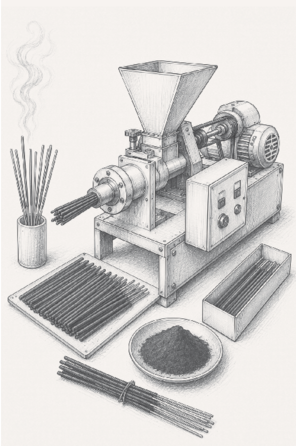

- **लाभार्थी:** रीना यादव
- **जनपद:** गोरखपुर
- **उद्यम:** धूपबत्ती उद्योग, रिगौली, गोरखपुर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

आत्मविश्वास, निरंतर परिश्रम और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किसी भी साधारण विचार को सफल उद्योग में बदल सकता है। जब एक महिला आत्मनिर्भर बनती है, तो वह केवल अपने परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की प्रगति की आधारशिला बनती है।

गुड़िया देवी हमीरपुर, उत्तर प्रदेश

स्वरोजगार की सशक्त मिसाल

गुड़िया देवी ने आटा एवं तेल उद्योग स्थापित कर आर्थिक सशक्तीकरण की मिसाल पेश की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹2.50 लाख की वित्तीय सहायता ने हमीरपुर की गुड़िया देवी को अपना आटा एवं तेल उद्योग स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम परिवार की आय बढ़ाने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन का प्रेरक उदाहरण बन गया है।

हमीरपुर की निवासी गुड़िया देवी हमेशा से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए स्वयं का व्यवसाय शुरू करना चाहती थीं। सीमित आय के कारण परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना आसान नहीं था, इसलिए उन्होंने स्वरोजगार को आत्मनिर्भर बनने का सबसे बेहतर माध्यम माना। लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में उनका यह सपना लंबे समय तक अधूरा रहा। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद इंडियन बैंक, बिनवार शाखा से ₹2.50 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने 'गुड़िया आटा एवं तेल उद्योग' की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आटा चक्की और तेल प्रसंस्करण इकाई स्थापित की। इस कार्य में उनके पति ने भी पूरा सहयोग दिया, जिससे व्यवसाय की शुरुआत सुचारु रूप से हो सकी। उन्होंने स्थानीय लोगों को शुद्ध आटा और गुणवत्तापूर्ण खाद्य तेल उपलब्ध कराना अपनी प्राथमिकता बनाया। बेहतर गुणवत्ता और भरोसेमंद सेवा के कारण धीरे-धीरे उनके उत्पादों पर ग्राहकों का विश्वास बढ़ता गया और उनका व्यवसाय निरंतर आगे बढ़ने लगा।

आज गुड़िया आटा एवं तेल उद्योग सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम से गुड़िया देवी को प्रतिमाह लगभग ₹8,000 से ₹10,000 की आय प्राप्त हो रही है। साथ ही उन्होंने एक व्यक्ति को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। इससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि स्थानीय स्तर पर भी स्वरोजगार के नए अवसर विकसित हुए हैं।

एक नज़र में...

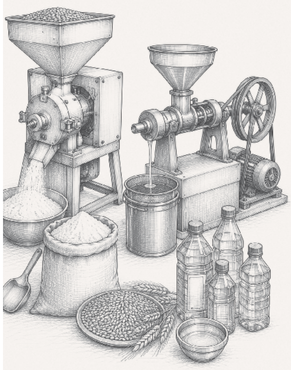

- **लाभार्थी:** गुड़िया देवी
- **जनपद:** हमीरपुर
- **उद्यम:** गुड़िया आटा एवं तेल उद्योग
- **परियोजना लागत:** ₹2,85,630
- **वितरित ऋण:** ₹2,50,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक, बिनवार शाखा
- **रोजगार:** 1 व्यक्ति
- **मासिक आय:** ₹8,000–₹10,000

इस सफ़र से सीख...

सही मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं का सहयोग और निरंतर मेहनत छोटे उद्यमों को भी सफलता की बड़ी कहानी में बदल सकते हैं। महिला उद्यमिता न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करती है, बल्कि पूरे समाज के विकास की नई राह भी खोलती है।

वंशिका सिंह हापुड़, उत्तर प्रदेश

डिजिटल कनेक्टिविटी से आत्मनिर्भरता तक

वंशिका सिंह ने ब्रॉडबैंड नेटवर्क सेवा से सफलता का नया आधार बनाया

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता ने वंशिका को अपना ब्रॉडबैंड नेटवर्क सेवा उद्यम स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों तक तेज़ और विश्वसनीय इंटरनेट पहुँचाने के साथ-साथ चार लोगों को रोजगार देकर डिजिटल सशक्तिकरण की नई मिसाल बन गया है।

हापुड़ की निवासी वंशिका सिंह ने बदलते समय के साथ डिजिटल कनेक्टिविटी की बढ़ती आवश्यकता को एक नए अवसर के रूप में देखा। आज शिक्षा, व्यापार, ऑनलाइन सेवाओं और संचार के लिए तेज़ एवं विश्वसनीय इंटरनेट अनिवार्य हो चुका है। इसी आवश्यकता को समझते हुए उन्होंने अपने क्षेत्र में ब्रॉडबैंड नेटवर्क सेवा शुरू करने का निर्णय लिया। हालांकि नेटवर्क उपकरण, केबल और तकनीकी संसाधनों की व्यवस्था के लिए पर्याप्त पूंजी न होने के कारण उनका सपना साकार नहीं हो पा रहा था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद पंजाब नेशनल बैंक से ₹4.50 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक उपकरणों के साथ 'वंशिका सिंह केबल नेटवर्क ब्रॉडबैंड सर्विस' की स्थापना की। ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने नेटवर्क उपकरण, ऑप्टिकल फाइबर केबल तथा अन्य आवश्यक तकनीकी संसाधनों की व्यवस्था की। धीरे-धीरे उनके नेटवर्क का विस्तार हुआ और क्षेत्र के अनेक परिवारों, विद्यार्थियों, दुकानदारों तथा छोटे व्यवसायों को तेज़ और विश्वसनीय इंटरनेट सुविधा मिलने लगी। गुणवत्तापूर्ण सेवा और त्वरित तकनीकी सहायता के कारण उनके ग्राहकों का विश्वास लगातार बढ़ता गया।

आज उनका ब्रॉडबैंड नेटवर्क सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और चार स्थानीय युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। ये युवा नेटवर्क इंस्टॉलेशन, केबल बिछाने, तकनीकी रखरखाव और ग्राहक सेवाओं से जुड़े कार्यों का संचालन कर रहे हैं।

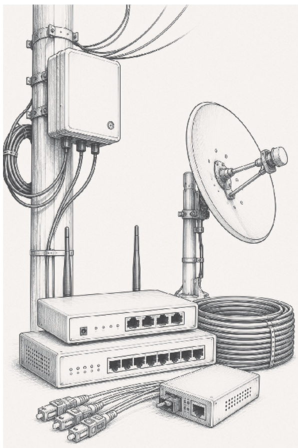

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** वंशिका सिंह
- **जनपद:** हापुड़
- **उद्यम:** वंशिका सिंह केबल नेटवर्क ब्रॉडबैंड सर्विस
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** पंजाब नेशनल बैंक
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

तकनीक और उद्यमिता का सही मेल समाज में व्यापक परिवर्तन ला सकता है। जब नवाचार, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग एक साथ मिलता है, तो स्वरोजगार के साथ-साथ शिक्षा, रोजगार और डिजिटल विकास के नए अवसर भी सृजित होते हैं।

अनुराग अग्रहरी जौनपुर, उत्तर प्रदेश

सौर ऊर्जा से रोशन सफलता का सफर

अनुराग अग्रहरी ने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं सर्विस से बनाई सफलता की नई पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने जौनपुर के अनुराग अग्रहरी को सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सर्विस का आधुनिक उद्यम स्थापित करने का अवसर दिया। आज वे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित कर रहे हैं।

जौनपुर के निवासी अनुराग अग्रहरी ने समय रहते यह समझ लिया था कि भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा है। बढ़ती ऊर्जा जरूरतों और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को देखते हुए उन्होंने सोलर ऊर्जा के क्षेत्र में अपना उद्यम स्थापित करने का निर्णय लिया। उनके पास तकनीकी समझ और काम करने का उत्साह था, लेकिन आधुनिक उपकरणों और संसाधनों के लिए आवश्यक पूंजी उपलब्ध नहीं होने के कारण उनका सपना आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र, जौनपुर के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, सिपाह शाखा से उन्हें ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सर्विस का अपना उद्यम स्थापित किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से अनुराग ने सोलर पैनलों की स्थापना, रखरखाव और तकनीकी सेवाओं के लिए आवश्यक आधुनिक उपकरण एवं संसाधन खरीदे। गुणवत्तापूर्ण कार्य, समयबद्ध सेवा और तकनीकी दक्षता के कारण कम समय में ही उनके कार्य को ग्राहकों का विश्वास मिलने लगा। घरों, दुकानों, संस्थानों और अन्य प्रतिष्ठानों में सोलर पैनल स्थापना की बढ़ती मांग के साथ उनका व्यवसाय भी निरंतर प्रगति करता गया। आज अनुराग अग्रहरी का उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। वे दो स्थानीय युवाओं को रोजगार उपलब्ध करा रहे हैं और सभी व्यावसायिक खर्चों के बाद उन्हें लगभग ₹30,000 या उससे अधिक की शुद्ध मासिक आय प्राप्त हो रही है।

एक नज़र में...

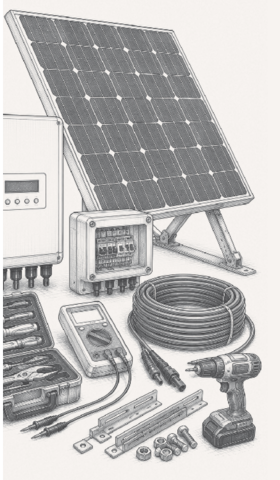

- **लाभार्थी:** अनुराग अग्रहरी
- **जनपद:** जौनपुर
- **उद्यम:** सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सर्विस, ओलंदगंज, जौनपुर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, सिपाह शाखा
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति
- **मासिक आय:** लगभग ₹30,000 या उससे अधिक

इस सफ़र से सीख...

हरित ऊर्जा पर्यावरण संरक्षण के साथ आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव है। आधुनिक तकनीक, दूरदृष्टि और सरकारी योजनाओं का सहयोग युवाओं को सफल उद्यमी बनाकर समाज को टिकाऊ विकास की दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

प्रतिभा डोंगरे झाँसी, उत्तर प्रदेश

कला को बनाया आजीविका का सशक्त माध्यम

प्रतिभा डोंगरे ने 'रचनात्मक आर्ट्स' के माध्यम से सपनों को दिया नया आकार

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹2.43 लाख की वित्तीय सहायता ने झाँसी की प्रतिभा डोंगरे को अपनी रचनात्मक कला को सफल उद्यम का रूप देने का अवसर दिया। आज उनका 'रचनात्मक आर्ट्स' दो लोगों को रोजगार देकर स्थानीय हस्तशिल्प को नई पहचान दे रहा है।

झाँसी की निवासी प्रतिभा डोंगरे बचपन से ही कला और रचनात्मकता के प्रति विशेष रुचि रखती थीं। वर्षों तक उन्होंने पेंटिंग, हस्तशिल्प, सजावटी वस्तुओं और प्रदर्शनी सामग्री के निर्माण का कार्य किया। उनके बनाए उत्पादों की गुणवत्ता और कलात्मकता की सराहना तो होती थी, लेकिन सीमित संसाधनों और आधुनिक उपकरणों के अभाव में वे अपने कार्य को बड़े स्तर तक नहीं पहुँचा पा रही थीं। उनका सपना था कि उनकी कला केवल शौक न रहकर एक सफल उद्यम का रूप ले।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, झाँसी से उन्हें ₹2.43 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक उपकरण, कच्चा माल तथा आवश्यक संसाधनों के साथ अपने 'रचनात्मक आर्ट्स' उद्यम का विस्तार किया।

आज प्रतिभा डोंगरे विभिन्न प्रकार की हस्तनिर्मित उपहार सामग्री, सजावटी उत्पाद, कलात्मक वस्तुएँ, प्रदर्शनी सामग्री और क्रिएटिव आर्टवर्क तैयार कर रही हैं। उनके उत्पादों की मौलिकता, आकर्षक डिज़ाइन और उत्कृष्ट गुणवत्ता ने उन्हें स्थानीय बाजार के साथ-साथ विभिन्न प्रदर्शनियों और विशेष आयोजनों में भी अलग पहचान दिलाई है। लगातार बढ़ती मांग के कारण उनका व्यवसाय निरंतर प्रगति कर रहा है। व्यवसाय के विस्तार के साथ प्रतिभा डोंगरे ने दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। उनका मानना है कि कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सम्मानजनक आजीविका और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार भी बन सकती है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** प्रतिभा डोंगरे
- **जनपद:** झाँसी
- **उद्यम:** रचनात्मक आर्ट्स
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹2,43,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, झाँसी
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

प्रतिभा तब अपनी वास्तविक पहचान बनाती है, जब उसे अवसर, संसाधन और आत्मविश्वास का साथ मिलता है। रचनात्मकता को उद्यमिता से जोड़कर न केवल आत्मनिर्भर बना जा सकता है, बल्कि समाज में रोजगार, नवाचार और महिला सशक्तिकरण की नई संभावनाएँ भी विकसित की जा सकती हैं।

प्रांजुल कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश

छोटे कारोबार से बड़ी सफलता तक

प्रांजुल ने मोबाइल शॉप के माध्यम से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने कानपुर देहात के प्रांजुल को अपने मोबाइल शॉप एवं मोबाइल रिपेयरिंग व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम आधुनिक मोबाइल सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ स्वरोजगार की प्रेरक मिसाल बन चुका है।

कानपुर देहात के विशायकपुर, रनिया निवासी प्रांजुल हमेशा से तकनीक के क्षेत्र में अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करना चाहते थे। उनका मानना था कि आज के समय में मोबाइल फोन लोगों की दैनिक आवश्यकता बन चुका है और गुणवत्तापूर्ण मोबाइल बिक्री एवं रिपेयरिंग सेवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है। हालांकि सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण वे अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रहे थे।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, रनिया शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने अपने मोबाइल शॉप एवं मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर को आधुनिक सुविधाओं के साथ विकसित किया। ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने मोबाइल हैंडसेट, एक्सेसरीज़, रिपेयरिंग उपकरण तथा अन्य आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की। इसके बाद ग्राहकों को मोबाइल बिक्री, रिपेयरिंग और तकनीकी सेवाएँ बेहतर गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता के साथ उपलब्ध कराना शुरू किया। उनके कार्य की गुणवत्ता और ईमानदार सेवा के कारण कम समय में ही ग्राहकों का विश्वास बढ़ा और उनका व्यवसाय निरंतर आगे बढ़ने लगा।

आज प्रांजुल का मोबाइल शॉप सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम के माध्यम से उन्होंने एक व्यक्ति को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। उनका मानना है कि स्वरोजगार केवल स्वयं की आर्थिक प्रगति का माध्यम नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी सम्मानजनक आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने का प्रभावी साधन है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** प्रांजुल
- **जनपद:** कानपुर देहात
- **उद्यम:** मोबाइल शॉप एवं मोबाइल रिपेयरिंग
- **कार्यस्थल:** मुबारकपुर, विशायकपुर, रनिया, कानपुर देहात
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, रनिया शाखा
- **रोजगार:** 1 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

तकनीक के क्षेत्र में अवसरों की कोई कमी नहीं है। सही मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं का सहयोग और निरंतर मेहनत किसी भी छोटे व्यवसाय को सफल उद्यम में बदल सकती है।

प्रभनूर कौर कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

मिठास को बनाया आत्मनिर्भरता का नया स्वाद

प्रभनूर कौर की 'स्वीट स्कल्प्ट बाय कौर' ने जुनून को सफल उद्यम में बदला

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता ने कानपुर नगर की प्रभनूर कौर के उद्यमी बनने के सपने को नई पहचान दी। आज उनका 'SWEET SCULPT BY KAURS' स्वाद, गुणवत्ता और रचनात्मकता का पर्याय बन चुका है तथा दो लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रहा है।

कानपुर नगर की निवासी प्रभनूर कौर हमेशा से बेकिंग और केक डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाना चाहती थीं। स्वाद के साथ रचनात्मकता को जोड़कर लोगों के विशेष अवसरों को यादगार बनाना उनका सपना था। उन्होंने घर से छोटे स्तर पर केक तैयार करने का कार्य शुरू किया, लेकिन सीमित संसाधनों और पूंजी की कमी के कारण अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रही थीं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उन्हें ₹4.25 लाख का ऋण स्वीकृत हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके व्यवसाय को नई गति प्रदान की और उन्होंने अपने ब्रांड 'Sweet Sculpt by Kaurs' को पेशेवर रूप से विकसित किया।

ऋण की सहायता से उन्होंने आधुनिक बेकिंग उपकरण, आवश्यक मशीनें और गुणवत्तापूर्ण संसाधन खरीदे, जिससे उनके उत्पादों की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। आज वे आकर्षक और कस्टमाइज्ड केक तैयार कर ग्राहकों की पसंदीदा उद्यमी बन चुकी हैं। गुणवत्ता, समयबद्ध सेवा और ग्राहकों के विश्वास ने उनके व्यवसाय को लगातार आगे बढ़ाया है।

आज 'Sweet Sculpt by Kaurs' कानपुर नगर में अपनी अलग पहचान बना चुका है। इस उद्यम के माध्यम से प्रभनूर कौर न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रही हैं। उनका मानना है कि सही अवसर, निरंतर मेहनत और सरकारी योजनाओं का सहयोग किसी भी सपने को सफल उद्यम में बदल सकता है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** प्रभनूर कौर
- **जनपद:** कानपुर नगर
- **उद्यम**: Sweet Sculpt by Kaurs, 126/F-26, गोविंद नगर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक**: पंजाब एंड सिंध बैंक
- **रोजगार**: 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

प्रतिभा तब सबसे अधिक चमकती है, जब उसे सही अवसर और संसाधनों का साथ मिलता है। सरकारी योजनाओं का प्रभावी उपयोग, निरंतर सीखने की इच्छा और गुणवत्तापूर्ण कार्य किसी भी छोटे प्रयास को सफल उद्यम में बदल सकता है।

विशाल सिंह कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

हरित ऊर्जा से आत्मनिर्भरता तक

विशाल सिंह ने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन से सफलता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹3.05 लाख की वित्तीय सहायता ने कुशीनगर के विशाल सिंह को रिन्यूएबल एनर्जी सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस का सफल उद्यम स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका व्यवसाय हरित विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

कुशीनगर के निवासी विशाल सिंह का विश्वास था कि भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा है। बढ़ती ऊर्जा जरूरतों और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को देखते हुए उन्होंने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस के क्षेत्र में अपना व्यवसाय स्थापित करने का निर्णय लिया। उनके पास तकनीकी समझ और काम करने का उत्साह था, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण आधुनिक उपकरणों और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था करना उनके लिए आसान नहीं था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, पड़रौना शाखा से ₹3.05 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने विशाल एंटरप्राइजेज के माध्यम से रिन्यूएबल एनर्जी सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सेवाओं की शुरुआत की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से विशाल सिंह ने सोलर पैनलों की स्थापना, रखरखाव और तकनीकी सेवाओं के लिए आवश्यक उपकरण एवं संसाधनों की व्यवस्था की। गुणवत्तापूर्ण कार्य, समयबद्ध सेवा और तकनीकी दक्षता के कारण उनके कार्य को ग्राहकों का विश्वास मिलने लगा। घरों, दुकानों, संस्थानों और अन्य प्रतिष्ठानों में सोलर ऊर्जा समाधान उपलब्ध कराते हुए उन्होंने कम समय में ही अपनी अलग पहचान बना ली।

आज उनका उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और तीन लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

एक नज़र में...

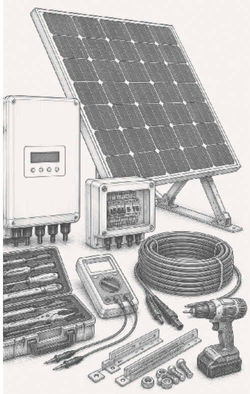

- **लाभार्थी:** विशाल सिंह
- **जनपद:** कुशीनगर
- **उद्यम:** विशाल एंटरप्राइजेज (रिन्यूएबल एनर्जी सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस)
- **कार्यस्थल:** कुबेरस्थान रोड, छावनी पड़रौना, कुशीनगर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,05,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, पड़रौना शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

नई तकनीक, दृढ़ संकल्प और सरकारी योजनाओं का सहयोग एक साथ मिलता है, तो साधारण प्रयास भी समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

सावित्री देवी लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश

हुनर बना आत्मनिर्भरता की पहचान

सावित्री देवी का टेलरिंग सेंटर बना सशक्तिकरण की मिसाल

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से लखीमपुर खीरी की सावित्री देवी ने अपने टेलरिंग सेंटर का विस्तार कर सिलाई-कढ़ाई के हुनर को सफल उद्यम में बदल दिया।

लखीमपुर खीरी की निवासी सावित्री देवी सीमित आय वाले परिवार से आती हैं। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों को देखते हुए उन्होंने अपने सिलाई-कढ़ाई के हुनर को आजीविका का माध्यम बनाने का निर्णय लिया। उनके पास मेहनत और कौशल तो था, लेकिन संसाधनों की कमी के कारण वे अपने कार्य को बड़े स्तर पर आगे नहीं बढ़ा पा रही थीं।

शुरुआत में उन्होंने स्वयं सहायता समूह के सहयोग से एक सिलाई मशीन खरीदी और घर से ही छोटे स्तर पर सिलाई का कार्य शुरू किया। उनके काम की गुणवत्ता और मेहनत के कारण धीरे-धीरे ग्राहकों का विश्वास बढ़ने लगा। इसी बीच उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के सहयोग से उन्हें आर्थिक सहायता प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने अपने टेलरिंग सेंटर का विस्तार किया और बेहतर मशीनों तथा आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की।

व्यवसाय के विस्तार के बाद उनके कार्य की गति और गुणवत्ता दोनों में उल्लेखनीय सुधार आया। आज वे महिलाओं और बच्चों के विभिन्न प्रकार के परिधानों की सिलाई का कार्य सफलतापूर्वक कर रही हैं। बढ़ते ग्राहकों के कारण उनके उद्यम को लगातार नई पहचान मिल रही है और उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹12,000 से ₹15,000 की आय प्राप्त हो रही है। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है और बच्चों की शिक्षा एवं अन्य आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा किया जा रहा है।

सावित्री देवी के मार्गदर्शन से अनेक महिलाएँ स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ रही हैं और अपने परिवार की आय बढ़ाने में योगदान दे रही हैं।

एक नज़र में...

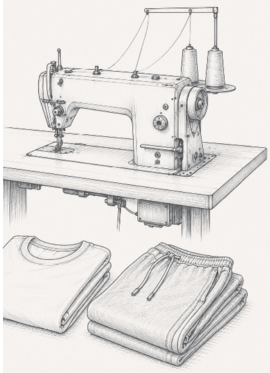

- **लाभार्थी:** सावित्री देवी
- **जनपद:** लखीमपुर खीरी
- **उद्यम:** टेलरिंग सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹20,000
- **वितरित ऋण:** ₹20,000
- **मासिक आय:** ₹12,000–₹15,000
- **रोजगार:** स्वरोजगार एवं महिलाओं को प्रशिक्षण

इस सफ़र से सीख...

एक महिला की आत्मनिर्भरता केवल उसके जीवन को नहीं बदलती, बल्कि पूरे परिवार और समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। हुनर, आत्मविश्वास और सही अवसर का संगम छोटे प्रयासों को भी बड़ी सफलता में बदल सकता है।

राहुल महोबा, उत्तर प्रदेश

डिजिटल सेवाओं से बदली जीवन की दिशा

राहुल ने कंप्यूटर सेंटर स्थापित कर आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने महोबा के राहुल को आधुनिक कंप्यूटर सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका केंद्र डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ-साथ पाँच लोगों को रोजगार देकर ग्रामीण युवाओं के लिए प्रेरणा का केंद्र बन गया है।

महोबा जनपद के श्रीनगर निवासी राहुल का सपना था कि वे अपने क्षेत्र के युवाओं को आधुनिक डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराएँ और स्वयं भी आत्मनिर्भर बनें। वे जानते थे कि आज के समय में शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, ऑनलाइन आवेदन और सरकारी सेवाओं के लिए कंप्यूटर एवं इंटरनेट सुविधाओं का महत्व लगातार बढ़ रहा है। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण वे आधुनिक सुविधाओं से युक्त कंप्यूटर सेंटर स्थापित नहीं कर पा रहे थे।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद इंडियन बैंक, श्रीनगर शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित कंप्यूटर सेंटर की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से राहुल ने नए कंप्यूटर, प्रिंटर, इंटरनेट नेटवर्क तथा अन्य आवश्यक डिजिटल उपकरण खरीदे। इसके बाद उन्होंने ऑनलाइन आवेदन, दस्तावेज़ प्रिंटिंग, स्कैनिंग, कंप्यूटर शिक्षा तथा अन्य डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध करानी शुरू कीं। गुणवत्तापूर्ण सेवाओं और ग्राहकों के प्रति समर्पित कार्यशैली के कारण उनके केंद्र को कम समय में ही स्थानीय लोगों का विश्वास प्राप्त हुआ।

आज राहुल का कंप्यूटर सेंटर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और पाँच लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। इस उद्यम ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि क्षेत्र के युवाओं के लिए रोजगार और डिजिटल सेवाओं की नई संभावनाएँ भी विकसित की हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** राहुल
- **जनपद:** महोबा
- **उद्यम**: कंप्यूटर सेंटर
- **कार्यस्थल:** श्रीनगर, जनपद महोबा
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक**: वित्तपोषण इंडियन बैंक, श्रीनगर शाखा
- **रोजगार**: 5 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

डिजिटल युग में तकनीक ही सबसे बड़ी ताकत है। सही मार्गदर्शन, सरकारी योजनाओं का सहयोग और निरंतर मेहनत किसी भी युवा को आत्मनिर्भर बनाकर समाज में रोजगार और विकास के नए अवसर पैदा कर सकती है।

चंदन सिंह मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

नवाचार के स्वाद को मिला उद्यमिता का साथ

चंदन सिंह ने सॉफ्टी आइसक्रीम कोन निर्माण इकाई से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने मैनपुरी के चंदन सिंह को सॉफ्टी आइसक्रीम कोन निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के माध्यम से स्थानीय बाजार की मांग पूरी कर रहा है।

मैनपुरी के निवासी चंदन सिंह हमेशा से ऐसा व्यवसाय शुरू करना चाहते थे, जिसकी बाजार में निरंतर मांग बनी रहे और जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ दूसरों के लिए भी रोजगार का माध्यम बन सके। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में बढ़ती संभावनाओं को देखते हुए उन्होंने सॉफ्टी आइसक्रीम कोन निर्माण के क्षेत्र में अपना उद्योग स्थापित करने का निर्णय लिया। लेकिन आधुनिक मशीनों और उत्पादन इकाई की स्थापना के लिए आवश्यक पूंजी का अभाव उनके सपनों की सबसे बड़ी बाधा था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्र के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ इंडिया, जागीर शाखा, मैनपुरी से उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने तारापुर, मैनपुरी में आधुनिक सॉफ्टी आइसक्रीम कोन निर्माण इकाई की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से चंदन सिंह ने उत्पादन के लिए आधुनिक मशीनें, आवश्यक उपकरण और अन्य संसाधनों की व्यवस्था की। उन्होंने शुरुआत से ही गुणवत्ता, स्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया और समय पर आपूर्ति को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाया। उनके उत्पादों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता के कारण स्थानीय आइसक्रीम विक्रेताओं के बीच उनकी पहचान तेजी से बनी। बढ़ती मांग के साथ उनके उत्पादों की नियमित आपूर्ति शुरू हुई और उनका व्यवसाय निरंतर प्रगति करता गया।

आज उनकी इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। सभी व्यावसायिक खर्चों के बाद उन्हें लगभग ₹30,000 की शुद्ध मासिक आय प्राप्त हो रही है।

एक नज़र में...

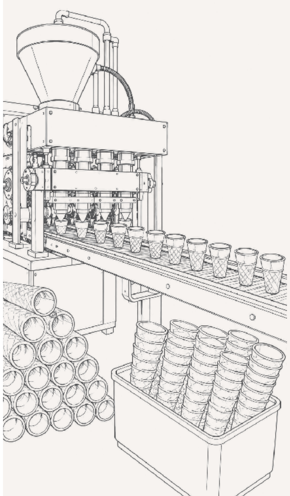

- **लाभार्थी:** चंदन सिंह
- **जनपद:** मैनपुरी
- **उद्यम**: सॉफ्टी आइसक्रीम कोन निर्माण इकाई
- **कार्यस्थल:** तारापुर, मैनपुरी
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक**: बैंक ऑफ इंडिया, जागीर शाखा, मैनपुरी
- **रोजगार**: 2 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹30,000

इस सफ़र से सीख...

गुणवत्ता, नवाचार और ईमानदारी से संचालित उद्योग स्थायी सफलता, रोजगार सृजन व अर्थव्यवस्था मजबूत बनाता है।

सुजाता चौधरी मथुरा, उत्तर प्रदेश

धागों से बुनी आत्मनिर्भरता की कहानी

सुजाता चौधरी ने टेक्सटाइल निवाड़ निर्माण इकाई से सफलता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने मथुरा की सुजाता चौधरी को टेक्सटाइल निवाड़ निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम गुणवत्तापूर्ण निवाड़ का उत्पादन कर स्थानीय उद्योग को मजबूती देने के साथ-साथ छह लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

मथुरा की निवासी सुजाता चौधरी हमेशा से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं। उनके भीतर अपना उद्योग स्थापित करने का दृढ़ संकल्प था, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण यह सपना साकार नहीं हो पा रहा था। वे ऐसा उद्यम शुरू करना चाहती थीं, जिससे न केवल उनका परिवार आर्थिक रूप से सशक्त बने, बल्कि अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर मिल सकें।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग कार्यालय पहुँचकर योजना के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। अधिकारियों के मार्गदर्शन में उनका ऋण आवेदन पंजाब एंड सिंध बैंक, मथुरा कैंट शाखा को भेजा गया। बैंक और जिला उद्योग कार्यालय के बेहतर समन्वय तथा पूर्ण सहयोग से उन्हें ₹5 लाख का ऋण स्वीकृत एवं वितरित किया गया। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने टेक्सटाइल निवाड़ निर्माण इकाई की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से सुजाता चौधरी ने उत्पादन के लिए आवश्यक मशीनें, उपकरण और कच्चे माल की व्यवस्था की। गुणवत्तापूर्ण निवाड़ का निर्माण शुरू होने के बाद उनके उत्पादों को स्थानीय बाजार में अच्छी पहचान मिलने लगी। बेहतर गुणवत्ता, समय पर आपूर्ति और ग्राहकों के विश्वास के कारण उनका व्यवसाय लगातार आगे बढ़ता गया और उनकी इकाई क्षेत्र में एक भरोसेमंद नाम बन गई।

आज उनकी टेक्सटाइल निवाड़ निर्माण इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹20,000 से ₹25,000 की आय प्राप्त हो रही है तथा उनके उद्यम से छह लोगों को रोजगार भी मिला है।

एक नज़र में...

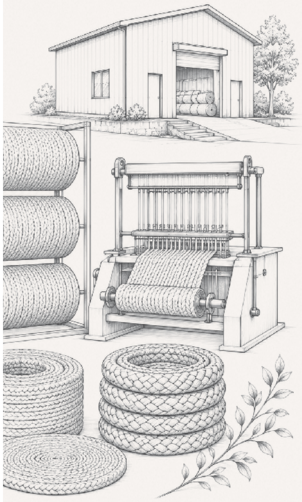

- **लाभार्थी:** सुजाता चौधरी
- **जनपद:** मथुरा
- **उद्यम:** टेक्सटाइल निवाड़ निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** पंजाब एंड सिंध बैंक, मथुरा कैंट शाखा
- **रोजगार:** 6 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹20,000–₹25,000

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भरता का मार्ग साहस, कौशल और सही अवसर से प्रशस्त होता है। सरकारी सहयोग और आत्मविश्वास से छोटा उद्योग भी अनेक परिवारों की आजीविका बनता।

करन गोस्वामी मेरठ, उत्तर प्रदेश

सौर ऊर्जा नवाचार से मिली सफलता की नई रोशनी

करन ने HRITVIKA ENTERPRISES के माध्यम से तकनीक को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता ने मेरठ के करन गोस्वामी को HRITVIKA ENTERPRISES की स्थापना का अवसर दिया। आज उनकी इकाई सोलर इनवर्टर की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक प्रोटेक्शन डिवाइस का निर्माण कर रही है।

मेरठ के निवासी करन गोस्वामी ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग (डिप्लोमा) की पढ़ाई पूरी करने के बाद लगभग छह वर्षों तक सोलर एनर्जी क्षेत्र में नौकरी की। इस दौरान उन्होंने सौर ऊर्जा उपकरणों, उनकी तकनीक और बाजार की जरूरतों को गहराई से समझा। हालांकि नौकरी से मिलने वाली आय उनके परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। उनके मन में हमेशा यह विचार रहता था कि यदि अपने अनुभव का उपयोग स्वयं के उद्योग में किया जाए, तो वे न केवल बेहतर आय अर्जित कर सकते हैं, बल्कि कुछ नया भी विकसित कर सकते हैं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन किया। आवेदन प्रक्रिया पूरी होने के बाद पंजाब नेशनल बैंक, जागृति विहार शाखा से उन्हें ₹4,25,000 का ब्याजमुक्त ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके वर्षों पुराने सपने को साकार करने का अवसर दिया और उन्होंने मेरठ के भोपाल विहार, गढ़ रोड स्थित HRITVIKA ENTERPRISES की स्थापना की।

अपनी तकनीकी विशेषज्ञता और नवाचार की सोच के साथ करन गोस्वामी ने ऐसी सोलर इनवर्टर प्रोटेक्शन डिवाइस का निर्माण शुरू किया, जो सोलर इनवर्टर एवं घरेलू विद्युत उपकरणों को विद्युत उतार-चढ़ाव और अर्थिंग संबंधी समस्याओं से सुरक्षित रखने में मदद करती है। इससे इनवर्टर और अन्य उपकरणों की कार्यक्षमता तथा आयु दोनों बढ़ती हैं। गुणवत्तापूर्ण निर्माण और विश्वसनीय प्रदर्शन के कारण उनके उत्पादों को ग्राहकों ने तेजी से स्वीकार किया।

एक नज़र में...

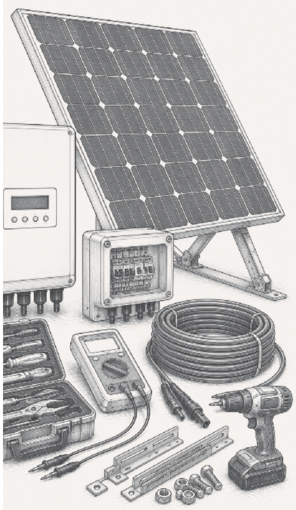

- **लाभार्थी:** करन गोस्वामी
- **जनपद:** मेरठ
- **फर्म:** HRITVIKA ENTERPRISES, भोपाल विहार, गढ़ रोड, मेरठ
- **उद्यम:** सोलर इनवर्टर प्रोटेक्शन डिवाइस निर्माण
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,25,000
- **बैंक:** पंजाब नेशनल बैंक, जागृति विहार शाखा
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹50,000

इस सफ़र से सीख...

सही मार्गदर्शन और दृढ़ संकल्प किसी भी युवा को नौकरी करने वाले से रोजगार देने वाला उद्यमी बना सकते हैं।

इंद्रजीत कुमार मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश

अनुभव से उद्यम तक...

इंद्रजीत कुमार ने टेंट हाउस व्यवसाय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया

सालों का अनुभव था, लेकिन संसाधनों की कमी विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा थी। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान से मिली आर्थिक सहायता ने इंद्रजीत कुमार के टेंट हाउस व्यवसाय को नई गति दी। आज उनका उद्यम न केवल बेहतर आय का स्रोत है, बल्कि पाँच लोगों के लिए स्थायी रोजगार का माध्यम भी बन चुका है।

मिर्ज़ापुर के इंद्रजीत कुमार टेंट हाउस का व्यवसाय कर रहे थे। क्षेत्र में पहचान थी, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण वे ग्राहकों की आवश्यकता पूरी नहीं कर पाते थे। शादी-विवाह, सामाजिक कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों में पर्याप्त टेंट सामग्री तथा उपकरण न होने से उन्हें कई बड़े ऑर्डर छोड़ने पड़ते थे। व्यवसाय का विस्तार उनकी प्राथमिकता था, लेकिन पूंजी जुटाना आसान नहीं था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और जिला उद्योग केंद्र तथा बैंक के सहयोग से उनका ऋण स्वीकृत हुआ।

₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता मिलने के बाद उन्होंने नई टेंट सामग्री, आधुनिक सजावटी उपकरण, कुर्सियाँ, टेबल, लाइटिंग और अन्य आवश्यक संसाधन खरीदे। इससे उनके व्यवसाय की क्षमता कई गुना बढ़ गई। अब वे छोटे कार्यक्रमों के साथ बड़े आयोजनों की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने लगे। व्यवसाय के विस्तार से उनकी आय बढ़ी, प्रतिष्ठा मजबूत हुई और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के कारण नए ऑर्डर लगातार मिलने लगे। बढ़ते कार्यभार को देखते हुए उन्होंने पाँच लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया। इससे उनका उद्यम आगे बढ़ा और स्थानीय युवाओं को सम्मानजनक आजीविका का अवसर मिला।

इंद्रजीत कुमार का मानना है कि सरकारी योजनाएँ तभी सार्थक होती हैं, जब उनका लाभ सही व्यक्ति तक पहुँचे। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उनके अनुभव को नई दिशा दी और व्यवसाय को अगले स्तर तक ले जाने का अवसर प्रदान किया। आज उनका टेंट हाउस इस विश्वास का प्रतीक है कि आर्थिक सहयोग मिलने से छोटे उद्यम भी बड़ी पहचान बना सकते हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** इंद्रजीत कुमार
- **जनपद:** मिर्ज़ापुर
- **उद्यम:** टेंट हाउस
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक
- **रोजगार:** 5 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

अनुभव सफलता की नींव रखता है, लेकिन सही संसाधन उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाते हैं। इंद्रजीत कुमार की कहानी बताती है कि समय पर मिला सहयोग वर्षों की मेहनत को नई पहचान दे सकता है।

राकेश कुमार मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

डिजिटल सेवाओं से बदली जिंदगी

राकेश कुमार ने साइबर कैफे स्थापित कर आत्मनिर्भरता की नई राह बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹2.05 लाख की वित्तीय सहायता ने मुरादाबाद के राकेश कुमार को अपने साइबर कैफे का आधुनिकीकरण करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम आधुनिक डिजिटल सेवाएँ प्रदान करने के साथ-साथ दो लोगों को रोजगार देकर स्थानीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है।

मुरादाबाद के निवासी राकेश कुमार लंबे समय से एक छोटे साइबर कैफे का संचालन कर रहे थे। सीमित संसाधनों और पुराने उपकरणों के कारण ग्राहकों को तेज़ और गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराना उनके लिए चुनौती बन गया था। पुराने कंप्यूटर और तकनीकी सीमाओं के कारण आय भी अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो पा रही थी। इसके बावजूद उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने का संकल्प नहीं छोड़ा।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेशन रोड शाखा, मुरादाबाद से ₹2.05 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके व्यवसाय को नई दिशा दी और साइबर कैफे को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करने का अवसर प्रदान किया।

ऋण की सहायता से राकेश कुमार ने नए कंप्यूटर, प्रिंटर तथा अन्य आवश्यक डिजिटल उपकरण खरीदे। इसके बाद उनके साइबर कैफे में ऑनलाइन आवेदन, दस्तावेज़ प्रिंटिंग, स्कैनिंग, इंटरनेट सेवाएँ तथा अन्य डिजिटल सुविधाएँ पहले से अधिक तेज़ और बेहतर गुणवत्ता के साथ उपलब्ध होने लगीं। बेहतर सेवाओं के कारण ग्राहकों का विश्वास बढ़ा और उनका व्यवसाय लगातार प्रगति करने लगा। आज उनका साइबर कैफे सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है तथा दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। आधुनिक तकनीक और बेहतर सेवा के कारण उनकी आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** राकेश कुमार
- **जनपद:** मुरादाबाद
- **उद्यम:** साइबर कैफे
- **परियोजना लागत:** ₹2,05,000
- **वितरित ऋण:** ₹2,05,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेशन रोड शाखा, मुरादाबाद
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

बदलते समय के साथ तकनीक को अपनाना और सरकारी योजनाओं का सही उपयोग किसी भी छोटे व्यवसाय को नई पहचान दिला सकता है। दृढ़ संकल्प, निरंतर मेहनत और सही अवसर मिलने पर आत्मनिर्भरता का सपना आसानी से साकार किया जा सकता है।

राखी मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

आत्मविश्वास ने बदली तक़दीर

राखी ने ब्यूटी पार्लर से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने मुजफ्फरनगर की राखी को अपना आधुनिक ब्यूटी पार्लर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम उन्हें सम्मानजनक आय देने के साथ-साथ चार अन्य लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है और महिला आत्मनिर्भरता की प्रेरक मिसाल बन चुका है।

मुजफ्फरनगर की निवासी राखी हमेशा से आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं। उन्हें सौंदर्य एवं सौंदर्य-सेवा के क्षेत्र में विशेष रुचि थी और वे अपने हुनर के बल पर एक ऐसा ब्यूटी पार्लर स्थापित करने का सपना देखती थीं, जहाँ महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण उनका यह सपना लंबे समय तक केवल एक इच्छा बनकर रह गया।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधी कॉलोनी शाखा, मुजफ्फरनगर से उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक सुविधाओं से युक्त अपना ब्यूटी पार्लर स्थापित किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से राखी ने आधुनिक ब्यूटी उपकरण, कॉस्मेटिक सामग्री और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की। उन्होंने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण ब्यूटी एवं ग्रूमिंग सेवाएँ प्रदान करने के साथ अपनी कार्यकुशलता को लगातार बेहतर बनाया। उत्कृष्ट सेवा, विनम्र व्यवहार और ग्राहकों की संतुष्टि को प्राथमिकता देने के कारण उनका पार्लर शीघ्र ही स्थानीय क्षेत्र में एक भरोसेमंद पहचान बन गया। समय के साथ महिलाओं का विश्वास बढ़ता गया और उनका व्यवसाय निरंतर प्रगति करता रहा।

आज राखी का ब्यूटी पार्लर सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। वे प्रतिदिन लगभग ₹1,500 की आय अर्जित कर रही हैं तथा उनके उद्यम के माध्यम से चार अन्य लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** राखी
- **जनपद:** मुजफ्फरनगर
- **उद्यम:** ब्यूटी पार्लर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधी कॉलोनी शाखा, मुजफ्फरनगर
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भरता की शुरुआत अवसर से नहीं, बल्कि स्वयं पर विश्वास से होती है। जब उस विश्वास को सही समय पर वित्तीय सहयोग और उचित मार्गदर्शन मिल जाता है, तो वह न केवल एक महिला का जीवन बदलता है, बल्कि पूरे समाज में महिला सशक्तिकरण और आत्मविश्वास की नई मिसाल स्थापित करता है।

मो. फरमान पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

एक ई-रिक्शा से बदली जीवन की दिशा

मो. फरमान ने स्वरोजगार अपनाकर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया कदम

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹2 लाख की वित्तीय सहायता ने पीलीभीत के मो. फरमान को ई-रिक्शा संचालन के माध्यम से सम्मानजनक आजीविका का अवसर प्रदान किया। आज वे पर्यावरण-अनुकूल परिवहन सेवा उपलब्ध कराने के साथ आत्मनिर्भर जीवन जी रहे हैं।

पीलीभीत के निवासी मो. फरमान का मानना था कि आत्मनिर्भर बनने के लिए हमेशा बड़े उद्योग या भारी निवेश की आवश्यकता नहीं होती। यदि व्यक्ति के पास मेहनत करने का जज़्बा और सही अवसर हो, तो छोटे स्तर का स्वरोजगार भी जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है। आर्थिक चुनौतियों के कारण वे लंबे समय तक स्थायी आय के स्रोत की तलाश में रहे, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण स्वयं का कार्य शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेशन रोड शाखा, पीलीभीत से ₹2,00,000 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उन्हें अपने सपने को साकार करने का अवसर दिया और उन्होंने ई-रिक्शा संचालन का कार्य शुरू किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने ई-रिक्शा खरीदा और स्थानीय स्तर पर यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक तथा पर्यावरण-अनुकूल परिवहन सेवा उपलब्ध करानी शुरू की। समय की पाबंदी, विनम्र व्यवहार और विश्वसनीय सेवा के कारण उन्होंने कम समय में ही लोगों का विश्वास जीत लिया। नियमित आय मिलने से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार आया और जीवन में स्थिरता आई।

आज मो. फरमान का स्वरोजगार सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस कार्य के माध्यम से वे स्वयं के लिए सम्मानजनक रोजगार सुनिश्चित कर चुके हैं और अपने परिवार की आवश्यकताओं को आत्मविश्वास के साथ पूरा कर रहे हैं। उनका मानना है कि छोटे स्तर का व्यवसाय भी निरंतर मेहनत और ईमानदारी के साथ बड़े बदलाव का आधार बन सकता है।

एक नज़र में...

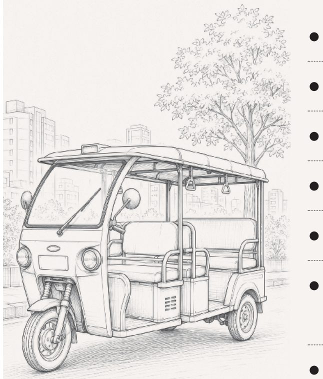

- **लाभार्थी:** मो. फरमान
- **जनपद:** पीलीभीत
- **उद्यम**: ई-रिक्शा संचालन
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹2,00,000
- **बैंक**: बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेशन रोड शाखा, पीलीभीत
- **रोजगार**: 1 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भरता की शुरुआत अवसर से नहीं, बल्कि स्वयं पर विश्वास से होती है। जब उस विश्वास को सही समय पर वित्तीय सहयोग और उचित मार्गदर्शन मिल जाता है, तो वह न केवल एक महिला का जीवन बदलता है, बल्कि पूरे समाज में महिला सशक्तिकरण और आत्मविश्वास की नई मिसाल स्थापित करता है।

आशीष यादव प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

कंप्यूटर कौशल बना आत्मनिर्भरता की पहचान

आशीष यादव ने साइबर कैफे और कंप्यूटर सेंटर से बनाई नई पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने प्रतापगढ़ के आशीष यादव को साइबर कैफे एवं कंप्यूटर सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका केंद्र डिजिटल सेवाओं, कंप्यूटर प्रशिक्षण और रोजगार का विश्वसनीय केंद्र बन चुका है।

प्रतापगढ़ के निवासी आशीष यादव ने कंप्यूटर शिक्षा प्राप्त करने के बाद लंबे समय तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की। उनका सपना सरकारी नौकरी प्राप्त कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाना था। उन्होंने पूरी मेहनत और लगन से प्रयास किए, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण थीं, फिर भी उन्होंने हार मानने के बजाय अपने कौशल को स्वरोजगार में बदलने का निर्णय लिया।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, प्रतापगढ़ से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके जीवन को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक सुविधाओं से युक्त साइबर कैफे एवं कंप्यूटर सेंटर की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से आशीष यादव ने आधुनिक कंप्यूटर, प्रिंटर, स्कैनर, इंटरनेट सुविधा तथा अन्य आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था की। उन्होंने अपने केंद्र में ऑनलाइन आवेदन, दस्तावेज़ प्रिंटिंग एवं स्कैनिंग, डिजिटल भुगतान, सरकारी एवं शैक्षणिक ऑनलाइन सेवाओं के साथ-साथ कंप्यूटर प्रशिक्षण जैसी सुविधाएँ भी शुरू कीं। गुणवत्तापूर्ण सेवाओं, पारदर्शी कार्यशैली और ग्राहकों के प्रति समर्पण के कारण उनका केंद्र शीघ्र ही क्षेत्र के लोगों के लिए भरोसेमंद डिजिटल सेवा केंद्र बन गया।

आज उनका उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और पाँच स्थानीय युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। उनके केंद्र से विद्यार्थियों, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं और आम नागरिकों को एक ही स्थान पर अनेक डिजिटल सुविधाएँ मिल रही हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** आशीष यादव
- **जनपद:** प्रतापगढ़
- **उद्यम:** साइबर कैफे एवं कंप्यूटर सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, प्रतापगढ़
- **रोजगार:** 5 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

जीवन में हर प्रयास का परिणाम नौकरी नहीं होता, लेकिन हर अनुभव नई दिशा अवश्य देता है। सही मार्गदर्शन, तकनीकी कौशल और सरकारी सहयोग के साथ युवा स्वयं सफल उद्यमी बनकर न केवल अपना भविष्य संवार सकते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार के नए अवसर सृजित कर सकते हैं।

तैय्यबा बानो प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

हुनर को मिला उद्यमिता का नया आयाम

तैय्यबा बानो ने 'तैय्यबा बुटीक' से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने प्रयागराज की तैय्यबा बानो को अपने 'तैय्यबा बुटीक' का विस्तार करने का अवसर दिया। आज उनका बुटीक पारंपरिक शिल्प और आधुनिक फैशन डिज़ाइन का सुंदर संगम प्रस्तुत करते हुए गुणवत्तापूर्ण परिधान तैयार कर रहा है।

प्रयागराज की निवासी तैय्यबा बानो का सपना था कि वे अपने हुनर को एक सफल व्यवसाय का रूप दें। उन्हें बचपन से ही फैशन डिजाइनिंग, सिलाई और कढ़ाई में विशेष रुचि थी। वे ऐसा बुटीक स्थापित करना चाहती थीं, जहाँ पारंपरिक भारतीय शिल्प और आधुनिक फैशन का सुंदर समन्वय देखने को मिले। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण वे अपने व्यवसाय का विस्तार नहीं कर पा रही थीं।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केंद्र के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, महेवा शाखा से उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई उड़ान दी और उन्होंने अपने 'तैय्यबा बुटीक' का विस्तार किया। ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आधुनिक सिलाई मशीनें, आवश्यक उपकरण तथा उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों और डिजाइनिंग सामग्री की व्यवस्था की। इसके बाद उन्होंने महिलाओं के लिए कॉटन, सिल्क, पार्टी वियर, एथनिक परिधान तथा कस्टमाइज्ड डिजाइनिंग जैसी सेवाएँ शुरू कीं। उनकी रचनात्मकता, उत्कृष्ट सिलाई और ग्राहकों की पसंद के अनुरूप तैयार किए गए डिज़ाइनों ने कम समय में ही उनके बुटीक को स्थानीय स्तर पर विशेष पहचान दिला दी।

आज 'तैय्यबा बुटीक' सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम के माध्यम से दो स्थानीय महिलाओं को रोजगार भी प्राप्त हुआ है। इससे न केवल तैय्यबा बानो के परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि अन्य महिलाओं को भी सम्मानजनक आजीविका का अवसर मिला है।

एक नज़र में...

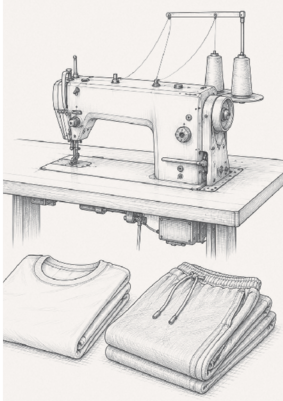

- **लाभार्थी:** तैय्यबा बानो
- **जनपद:** प्रयागराज
- **उद्यम:** तैय्यबा बुटीक
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, महेवा शाखा
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

प्रतिभा और परिश्रम जब सही अवसर तथा वित्तीय सहयोग से जुड़ते हैं, तो वे केवल एक सफल व्यवसाय ही नहीं बनाते, बल्कि महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और आत्मनिर्भर समाज की मजबूत नींव भी रखते हैं।

हरिओम रामपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा को बनाया परिवर्तन का माध्यम

हरिओम ने टैलेंट इम्प्रूवमेंट एजुकेशन इंस्टीट्यूट से युवाओं के सपनों को दी नई उड़ान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.37 लाख की वित्तीय सहायता ने रामपुर के हरिओम को टैलेंट इम्प्रूवमेंट एजुकेशन इंस्टीट्यूट स्थापित करने का अवसर दिया।

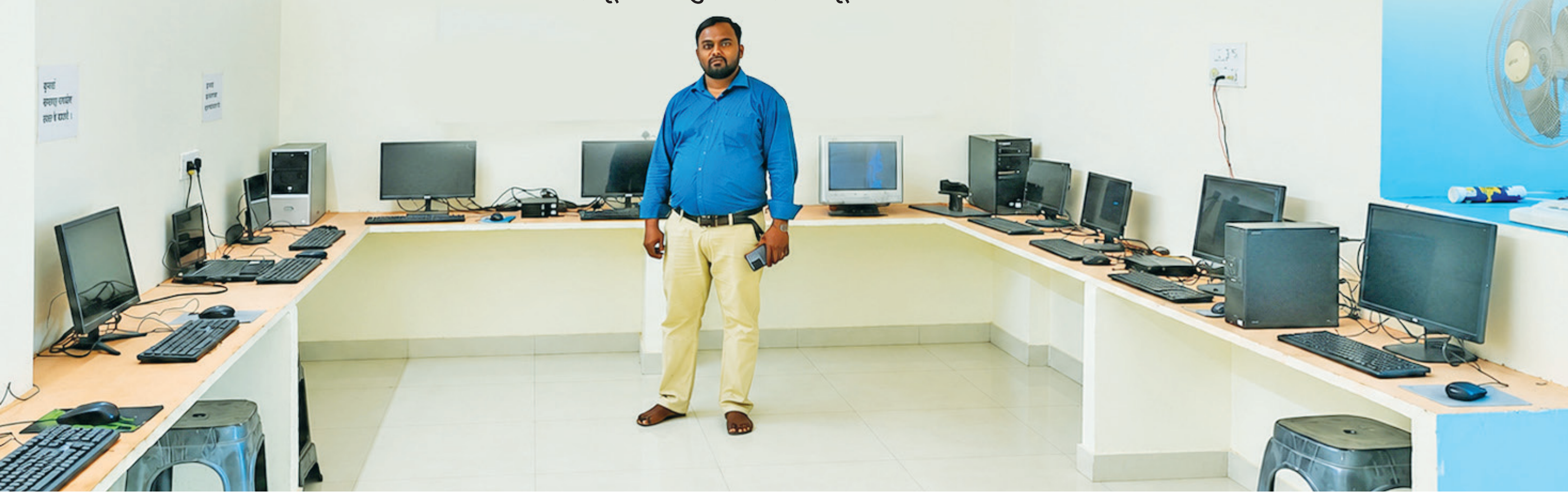

रामपुर के निवासी हरिओम का विश्वास था कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास किसी भी युवा के जीवन को नई दिशा दे सकते हैं। वे लंबे समय से ऐसा संस्थान स्थापित करना चाहते थे, जहाँ विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ आधुनिक कौशल आधारित प्रशिक्षण भी मिल सके। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों और बेरोजगारी के कारण उनका यह सपना वर्षों तक अधूरा रहा।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद यूनियन बैंक से ₹4,37,500 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई उड़ान दी और उन्होंने टैलेंट इम्प्रूवमेंट एजुकेशन इंस्टीट्यूट की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से हरिओम ने कंप्यूटर, अध्ययन सामग्री, फर्नीचर तथा आधुनिक शिक्षण संसाधनों की व्यवस्था की। संस्थान में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कौशल विकास, कंप्यूटर शिक्षा और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों की शुरुआत की गई। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, अनुशासित वातावरण और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देने के कारण कम समय में ही संस्थान ने क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना ली।

आज उनका संस्थान सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है और तीन स्थानीय युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। बढ़ती छात्र संख्या के साथ संस्थान निरंतर प्रगति कर रहा है। हरिओम का लक्ष्य भविष्य में अपने संस्थान का विस्तार कर अधिक विद्यार्थियों तक आधुनिक शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और करियर मार्गदर्शन की सुविधाएँ पहुँचाना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** हरिओम
- **जनपद:** रामपुर
- **उद्यम:** टैलेंट इम्प्रूवमेंट एजुकेशन इंस्टीट्यूट
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,37,500
- **बैंक:** यूनियन बैंक
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

शिक्षा सबसे बड़ा निवेश है और ज्ञान सबसे बड़ी पूंजी। जब शिक्षा को उद्यमिता से जोड़ा जाता है, तब उसका लाभ केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे समाज के विकास, रोजगार सृजन और नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनता है।

अखिलेश कुमार संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश

स्वच्छता उत्पाद निर्माण से बदली जीवन की दिशा

अखिलेश कुमार ने वॉशिंग पाउडर निर्माण इकाई स्थापित कर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने संत कबीर नगर के अखिलेश कुमार को वॉशिंग पाउडर निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया।

संत कबीर नगर के निवासी अखिलेश कुमार लंबे समय से स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का सपना देख रहे थे और ऐसा उद्योग स्थापित करना चाहते थे, जो स्थानीय ज़रूरतें पूरी करे और रोजगार के नए अवसर भी सृजित करे, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण यह आसान नहीं था।

इसी दौरान उन्हें जिला उद्योग केंद्र से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। आवेदन पर उन्हें बड़ौदा यूपी बैंक, भिटवा शाखा से ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने वॉशिंग पाउडर निर्माण इकाई की स्थापना की। ऋण की धनराशि से अखिलेश कुमार ने उत्पादन के लिए आवश्यक मशीनें, उपकरण और कच्चा माल जुटाया और उच्च गुणवत्ता वाले वॉशिंग पाउडर का निर्माण शुरू किया। बेहतर गुणवत्ता, उचित मूल्य और समय पर आपूर्ति से उत्पादों ने स्थानीय बाजार में जल्द पहचान बनाई और ग्राहकों का भरोसा जीता।

आज उनका उद्योग सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। इस उद्यम से तीन स्थानीय युवाओं को रोजगार मिला है और सभी खर्चों के बाद उन्हें लगभग ₹30,000 की शुद्ध मासिक आय हो रही है। भविष्य में वे उत्पादों का विस्तार कर अधिक बाजारों तक पहुँचने और स्थानीय स्तर पर और रोजगार सृजित करने का लक्ष्य रखते हैं।

अखिलेश कुमार का मानना है कि इस अभियान ने उन्हें आर्थिक सहायता के साथ अपने पैरों पर खड़े होने और दूसरों को रोजगार देने का आत्मविश्वास दिया। वे युवाओं से आग्रह करते हैं कि अच्छा विचार और मेहनत का ज़ज़्बा हो, तो सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर सपनों को साकार करें।

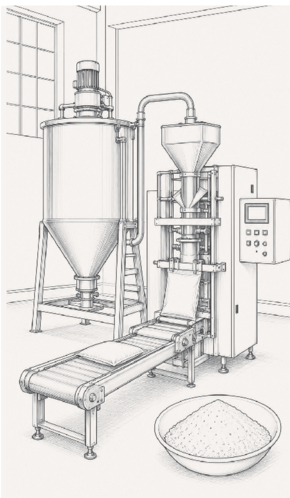

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** अखिलेश कुमार
- **जनपद:** संत कबीर नगर
- **उद्यम:** वॉशिंग पाउडर निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** बड़ौदा यूपी बैंक, भिटवा शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹30,000

इस सफ़र से सीख...

स्थानीय उद्योग केवल उत्पादों का निर्माण नहीं करते, बल्कि रोजगार, आत्मनिर्भरता और क्षेत्रीय आर्थिक विकास की मजबूत नींव भी रखते हैं। सही मार्गदर्शन, सरकारी सहयोग और दृढ़ संकल्प किसी भी युवा को नौकरी तलाशने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला उद्यमी बना सकता है।

मंजीत सिंह शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

हौसलों ने दिव्यांगता को बनाया शक्ति

मंजीत सिंह ने ट्रैवल एवं टूरिज्म सेवा से आत्मनिर्भरता की नई राह बनाई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹1.85 लाख की वित्तीय सहायता ने शाहजहाँपुर के मंजीत सिंह को ट्रैवल एवं टूरिज्म सेवा शुरू करने का अवसर दिया। 60 प्रतिशत दिव्यांग होने के बावजूद उन्होंने अपने आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और मेहनत के बल पर न केवल स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि तीन अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित किए।

शाहजहाँपुर के निवासी मंजीत सिंह ने जीवन की शुरुआत से ही अनेक चुनौतियों का सामना किया। 60 प्रतिशत दिव्यांगता के कारण रोजगार के अवसर सीमित थे और शिक्षा पूरी करने के बाद भी उन्हें अपनी योग्यता के अनुरूप काम नहीं मिल सका। आर्थिक कठिनाइयों ने परिस्थितियों को और कठिन बना दिया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उनका विश्वास था कि यदि अवसर मिले तो वे स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सम्मानजनक जीवन जी सकते हैं। इसी दौरान सीएम युवा फेलो के माध्यम से उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र से संपर्क कर योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, सिधौली शाखा से उन्हें ₹1,85,000 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊर्जा दी और उन्होंने ट्रैवल एवं टूरिज्म सेवा की शुरुआत की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने अपने व्यवसाय के लिए आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की और यात्रियों को सुरक्षित, विश्वसनीय तथा समयबद्ध सेवाएँ उपलब्ध करानी शुरू कीं। ईमानदार कार्यशैली, बेहतर ग्राहक सेवा और समर्पण के कारण कम समय में ही उनका व्यवसाय आगे बढ़ने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने ग्राहकों का विश्वास अर्जित किया और उनके उद्यम की पहचान मजबूत होती गई।

आज मंजीत सिंह का ट्रैवल एवं टूरिज्म व्यवसाय सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उनके उद्यम से तीन लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है। वे मानते हैं कि शारीरिक चुनौतियाँ व्यक्ति की क्षमता को सीमित नहीं कर सकतीं, यदि उसके भीतर आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प और सही अवसर उपलब्ध हों।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** मंजीत सिंह
- **जनपद:** शाहजहाँपुर
- **उद्यम:** ट्रैवल एवं टूरिज्म सेवा
- **परियोजना लागत:** ₹2,25,500
- **वितरित ऋण:** ₹1,85,000
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, सिधौली शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

दिव्यांगता सफलता की राह में बाधा नहीं, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति की परीक्षा होती है। आत्मविश्वास, निरंतर प्रयास और सरकारी योजनाओं का सही सहयोग किसी भी चुनौती को अवसर में बदल सकता है तथा आत्मनिर्भर जीवन की नई राह खोल सकता है।

मैनू शामली, उत्तर प्रदेश

हुनर से आत्मनिर्भरता तक

मैनू ने हैंड बैग निर्माण इकाई से बनाई सफलता की नई पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली वित्तीय सहायता ने शामली की मैनू को अपने हैंड बैग निर्माण इकाई की स्थापना का अवसर दिया। आज उनका उद्यम महिला आत्मनिर्भरता का सशक्त उदाहरण बन चुका है और स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी सृजित कर रहा है।

शामली जनपद की निवासी मैनू पहले बेरोजगार थीं और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए रोजगार की तलाश कर रही थीं। वे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थीं, लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण स्वयं का व्यवसाय शुरू करना उनके लिए संभव नहीं हो पा रहा था। उनका सपना था कि वे अपने कौशल के आधार पर ऐसा कार्य शुरू करें, जिससे सम्मानजनक आय अर्जित करने के साथ दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर सकें।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद भारतीय स्टेट बैंक, शामली शाखा से ₹1,39,700 की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। इस सहयोग ने उनके जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने हैंड बैग निर्माण इकाई की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आवश्यक मशीनें, कच्चा माल और अन्य संसाधनों की व्यवस्था की। इसके बाद उन्होंने विभिन्न डिज़ाइन के आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण हैंड बैग तैयार करना शुरू किया। उनके उत्पादों की गुणवत्ता और मेहनत के कारण स्थानीय बाजार में उन्हें अच्छी पहचान मिलने लगी। धीरे-धीरे ग्राहकों का विश्वास बढ़ा और उनका व्यवसाय निरंतर आगे बढ़ता गया।

आज मैनू की हैंड बैग निर्माण इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है। उनके उद्यम से दो लोगों को रोजगार भी मिला है तथा उन्हें प्रतिदिन लगभग ₹900 की आय प्राप्त हो रही है। इस व्यवसाय ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है और उन्हें आत्मनिर्भर जीवन जीने का आत्मविश्वास दिया है।

एक नज़र में...

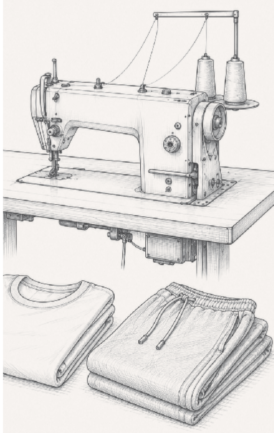

- **लाभार्थी:** मैनू
- **जनपद:** शामली
- **उद्यम:** हैंड बैग निर्माण इकाई
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹1,39,700
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, शामली शाखा
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹900

इस सफ़र से सीख...

हुनर तभी वास्तविक सफलता में बदलता है, जब उसे सही अवसर, वित्तीय सहयोग और आत्मविश्वास का साथ मिले। छोटे स्तर से शुरू किया गया उद्यम भी महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और आत्मनिर्भरता की बड़ी मिसाल बन सकता है।

पूजा सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश

सेवा की गुणवत्ता बनी सफलता की पहचान...

पूजा ने लॉन्ड्री एवं ड्राई क्लीनिंग सेवा से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता ने सिद्धार्थनगर की पूजा को आधुनिक लॉन्ड्री एवं ड्राई क्लीनिंग केंद्र स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम गुणवत्तापूर्ण सेवाओं, ग्राहकों के विश्वास और उत्कृष्ट प्रबंधन के बल पर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना चुका है।

सिद्धार्थनगर की निवासी पूजा हमेशा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं और ऐसा व्यवसाय शुरू करना चाहती थीं, जो लोगों की दैनिक आवश्यकताओं से जुड़ा हो। पर्याप्त पूंजी के अभाव में यह सपना साकार नहीं हो पा रहा था। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। जिला उद्योग केंद्र के मार्गदर्शन में आवेदन के बाद इंडियन ओवरसीज बैंक, नौगढ़ शाखा से उन्हें ₹4.50 लाख का ऋण प्राप्त हुआ, जिससे उन्होंने आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों से सुसज्जित लॉन्ड्री एवं ड्राई क्लीनिंग केंद्र की स्थापना की।

ऋण की धनराशि से उन्होंने वॉशिंग मशीन, ड्राई क्लीनिंग उपकरण, स्टीम प्रेस तथा अन्य आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की और कपड़ों की धुलाई, ड्राई क्लीनिंग, प्रेस तथा विशेष परिधानों की देखभाल जैसी सेवाएँ शुरू कीं। ग्राहकों की संतुष्टि, समयबद्ध सेवा और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता के कारण प्रतिष्ठान ने कम समय में स्थानीय लोगों का विश्वास अर्जित कर लिया।

आज पूजा का लॉन्ड्री एवं ड्राई क्लीनिंग केंद्र सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उद्यम से तीन लोगों को रोजगार मिला है, और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तथा बढ़ते ग्राहकों के कारण उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹40,000 से ₹60,000 तक की आय हो रही है। इससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है और वे व्यवसाय का विस्तार करने की दिशा में कार्यरत हैं।

पूजा का मानना है कि इस अभियान ने उन्हें आर्थिक सहायता के साथ आत्मनिर्भर बनने का आत्मविश्वास दिया। वे चाहती हैं कि अधिक से अधिक महिलाएँ सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर स्वरोजगार अपनाएँ और अपने सपनों को साकार करें।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** पूजा
- **जनपद:** सिद्धार्थनगर
- **उद्यम:** लॉन्ड्री एवं ड्राई क्लीनिंग सेवा
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** इंडियन ओवरसीज बैंक, नौगढ़ शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय:** ₹40,000–₹60,000

इस सफ़र से सीख...

सही अवसर, सरकारी सहयोग और दृढ़ संकल्प के साथ कोई भी महिला आत्मनिर्भर बनकर न केवल अपना जीवन बदल सकती है, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार और प्रेरणा का स्रोत बन सकती है।

एकर्ष अवस्थी सीतापुर, उत्तर प्रदेश

हरित ऊर्जा के लिए मजबूत आधार

एकर्ष अवस्थी ने सोलर पैनल स्ट्रक्चर निर्माण से नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹3.32 लाख की वित्तीय सहायता ने सीतापुर के एकर्ष अवस्थी को सोलर पैनल स्ट्रक्चर निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र को गति देने के साथ-साथ चार लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

सीतापुर के निवासी एकर्ष अवस्थी हमेशा कुछ नया और भविष्य की आवश्यकताओं से जुड़ा व्यवसाय स्थापित करना चाहते थे। बढ़ती सौर ऊर्जा परियोजनाओं और स्वच्छ ऊर्जा की आवश्यकता को देखते हुए उन्होंने सोलर पैनल स्ट्रक्चर निर्माण के क्षेत्र में काम करने का निर्णय लिया। लेकिन आधुनिक मशीनों और आवश्यक संसाधनों के लिए पर्याप्त पूंजी उपलब्ध न होने के कारण उनका सपना आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

इसी दौरान उन्होंने एक समाचार पत्र में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के बारे में पढ़ा। योजना की जानकारी मिलने के बाद उन्होंने जिला उद्योग केंद्र से संपर्क किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी कर आवेदन किया। उनका आवेदन स्वीकृत हुआ तथा भारतीय स्टेट बैंक, एडीबी शाखा से ₹3.32 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके उद्यम की मजबूत नींव रखी। ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से एकर्ष अवस्थी ने सोलर पैनलों के लिए मजबूत और गुणवत्तापूर्ण स्ट्रक्चर निर्माण इकाई स्थापित की। उन्होंने आधुनिक उपकरणों और बेहतर उत्पादन प्रणाली के साथ कार्य शुरू किया। सौर ऊर्जा परियोजनाओं की बढ़ती मांग के कारण उनके उत्पादों को स्थानीय बाजार में अच्छा प्रतिसाद मिला। गुणवत्ता और समय पर आपूर्ति की बदौलत उनका व्यवसाय लगातार आगे बढ़ता गया और ग्राहकों का विश्वास भी मजबूत होता गया।

आज उनका उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है तथा चार लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रहा है। एकर्ष का लक्ष्य भविष्य में अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाकर अधिक से अधिक सौर ऊर्जा परियोजनाओं से जुड़ना और अपने उत्पादों को व्यापक बाजार तक पहुँचाना है।

एक नज़र में...

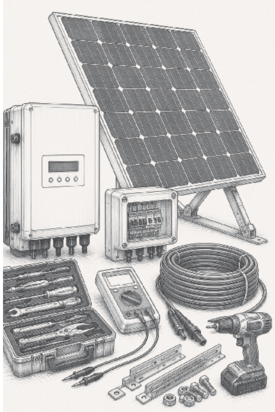

- **लाभार्थी:** एकर्ष अवस्थी
- **जनपद:** सीतापुर
- **उद्यम:** सोलर पैनल स्ट्रक्चर निर्माण
- **परियोजना लागत:** ₹3,32,000
- **वितरित ऋण:** ₹3,32,000
- **बैंक:** भारतीय स्टेट बैंक, एडीबी शाखा
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

हरित ऊर्जा से जुड़े उद्योग केवल आर्थिक प्रगति का माध्यम नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की मजबूत नींव भी हैं। सही मार्गदर्शन, सरकारी सहयोग और दृढ़ संकल्प के साथ युवा आधुनिक तकनीकों को अपनाकर आत्मनिर्भरता और रोजगार सृजन की नई मिसाल कायम कर सकते हैं।

रमाकांति उन्नाव, उत्तर प्रदेश

आत्मविश्वास ने बदली जिंदगी की तस्वीर

रमाकांति ने फोटो स्टूडियो एवं प्रिंटिंग व्यवसाय से बनाई आत्मनिर्भरता की नई पहचान

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.37 लाख की वित्तीय सहायता ने उन्नाव की रमाकांति को अपना फोटो स्टूडियो एवं प्रिंटिंग व्यवसाय स्थापित करने का अवसर दिया।

उन्नाव जनपद के पुरवा क्षेत्र की निवासी रमाकांति पहले किसी नियमित व्यवसाय से जुड़ी नहीं थीं। परिवार की आय सीमित होने के कारण वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं, लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में अपना व्यवसाय शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था। उनका सपना था कि वे ऐसा उद्यम स्थापित करें, जिससे सम्मानजनक आजीविका के साथ दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित हों।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा, पुरवा शाखा से ₹4,37,500 का ऋण प्राप्त किया। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने फोटो स्टूडियो एवं प्रिंटर्स की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने आधुनिक कैमरे, कंप्यूटर, प्रिंटर तथा अन्य आवश्यक उपकरण खरीदे। इसके बाद उन्होंने फोटोग्राफी, फोटो प्रिंटिंग, दस्तावेज़ प्रिंटिंग तथा अन्य डिजिटल सेवाएँ प्रारंभ कीं। गुणवत्तापूर्ण सेवाओं और ग्राहकों के प्रति समर्पण के कारण उनके व्यवसाय को स्थानीय लोगों का विश्वास मिला और धीरे-धीरे उनकी पहचान एक भरोसेमंद सेवा प्रदाता के रूप में स्थापित हो गई।

आज रमाकांति का फोटो स्टूडियो एवं प्रिंटर्स सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उनके उद्यम से तीन लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है। इससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी विकसित हुए हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** रमाकांति
- **जनपद:** उन्नाव
- **उद्यम:** फोटो स्टूडियो एवं प्रिंटर्स
- **कार्यस्थल:** पुरवा, उन्नाव
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,37,500
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, पुरवा शाखा
- **रोजगार:** 3 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

जब एक महिला अपने सपनों पर विश्वास करके आगे बढ़ती है, तो वह केवल अपना भविष्य नहीं बदलती, बल्कि अपने परिवार और समाज के लिए भी नई संभावनाओं के द्वार खोलती है।

रेनू वर्मा सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश

हरित ऊर्जा को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार

रेनू वर्मा ने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन सेवा से बदली अपनी आर्थिक तस्वीर

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹2.33 लाख की वित्तीय सहायता ने सुल्तानपुर की रेनू वर्मा को सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सर्विस शुरू करने का अवसर दिया।

सुल्तानपुर की निवासी रेनू वर्मा हमेशा से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं। वे ऐसा व्यवसाय शुरू करना चाहती थीं, जो न केवल उनके परिवार की आय बढ़ाए, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं से भी जुड़ा हो। स्वच्छ ऊर्जा के बढ़ते महत्व को देखते हुए उन्होंने सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस के क्षेत्र में कार्य करने का निर्णय लिया। हालांकि सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण उनका यह सपना लंबे समय तक अधूरा रहा।

इसी दौरान जिला उद्योग कार्यालय, सुल्तानपुर द्वारा आयोजित एक जागरूकता शिविर में उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र के मार्गदर्शन में योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद यूपी ग्रामीण बैंक, मोतीगंज शाखा से उन्हें ₹2,33,333 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने अपने उद्यम की शुरुआत की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से रेनू वर्मा ने सोलर पैनलों की स्थापना, रखरखाव तथा आवश्यक तकनीकी सेवाओं के लिए जरूरी उपकरण और संसाधन जुटाए। गुणवत्तापूर्ण सेवा, समय पर कार्य और ग्राहकों के प्रति समर्पण के कारण उनके कार्य को धीरे-धीरे स्थानीय स्तर पर अच्छी पहचान मिलने लगी। आज वे घरों, दुकानों और अन्य प्रतिष्ठानों में सौर ऊर्जा आधारित प्रणालियों की स्थापना एवं रखरखाव का कार्य सफलतापूर्वक कर रही हैं।

वर्तमान में उनके उद्यम से उन्हें लगभग ₹11,000 प्रतिमाह की नियमित आय प्राप्त हो रही है। साथ ही उन्होंने दो लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। इससे न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि क्षेत्र में हरित ऊर्जा के प्रति जागरूकता और स्वरोजगार के नए अवसर भी विकसित हुए हैं।

एक नज़र में...

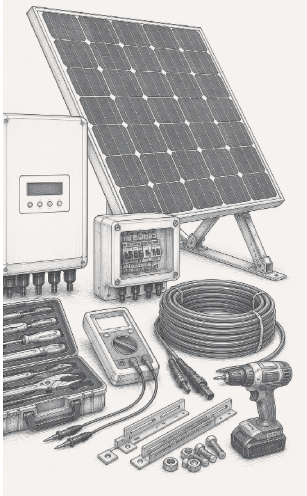

- **लाभार्थी:** रेनू वर्मा
- **जनपद:** सुल्तानपुर
- **उद्यम:** सोलर पैनल इंस्टॉलेशन एवं मेंटेनेंस सर्विस
- **परियोजना लागत:** ₹2,33,333
- **वितरित ऋण:** ₹2,33,333
- **बैंक:** यूपी ग्रामीण बैंक, मोतीगंज शाखा
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति
- **मासिक आय:** लगभग ₹11,000

इस सफ़र से सीख...

हरित ऊर्जा केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक आजीविका का भी सशक्त आधार बन सकती है।

ऋषिका सिंह वाराणसी, उत्तर प्रदेश

वेलनेस से आत्मनिर्भरता

ऋषिका सिंह का 'सुमंगलम वेलनेस सेंटर' बना स्वास्थ्य सेवाओं का भरोसेमंद केंद्र

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली वित्तीय सहायता ने वाराणसी की ऋषिका सिंह के सपने को नई उड़ान दी। आज उनका सुमंगलम वेलनेस सेंटर न केवल गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कर रहा है, बल्कि चार लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

समाज सेवा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सार्थक योगदान देने का सपना लेकर आगे बढ़ीं वाराणसी की ऋषिका सिंह ने हमेशा यह महसूस किया कि लोगों को बेहतर, भरोसेमंद और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना समय की आवश्यकता है। इसी सोच के साथ उन्होंने 'सुमंगलम वेलनेस सेंटर' स्थापित करने का निर्णय लिया। हालांकि, सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण इस सपने को साकार करना आसान नहीं था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत आवेदन करने के बाद उन्हें ₹4,80,278 का ऋण स्वीकृत हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी और उन्होंने आधुनिक सुविधाओं से युक्त सुमंगलम वेलनेस सेंटर की स्थापना की।

आज उनके सेंटर में लोगों को स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न सेवाएँ, फिजियोथेरेपी तथा वेलनेस सुविधाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध हो रही हैं। गुणवत्तापूर्ण सेवाओं और समर्पित कार्यशैली के कारण कम समय में ही सेंटर ने लोगों का विश्वास जीत लिया है।

वर्तमान में ऋषिका सिंह का उद्यम प्रतिमाह लगभग ₹35,000 की आय अर्जित कर रहा है। इसके साथ ही उन्होंने चार लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया है, जिससे कई परिवारों की आजीविका भी मजबूत हुई है।

ऋषिका सिंह का मानना है कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उन्हें केवल आर्थिक सहायता ही नहीं दी, बल्कि अपने सपनों को साकार करने का आत्मविश्वास भी दिया। आज वे आत्मनिर्भर बनकर समाज की सेवा कर रही हैं और अन्य युवाओं, विशेषकर महिलाओं को भी स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** ऋषिका सिंह
- **जनपद:** वाराणसी
- **उद्यम:** सुमंगलम वेलनेस सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹4,80,278
- **वितरित ऋण:** ₹4,80,278
- **बैंक:** बैंक ऑफ बड़ौदा, इंडस्ट्रियल ई-शाखा, वाराणसी
- **रोजगार:** 4 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

सही मार्गदर्शन, मजबूत संकल्प और सरकारी योजनाओं का प्रभावी उपयोग किसी भी सपने को सफल उद्यम में बदल सकता है। आत्मनिर्भर बनकर न केवल अपनी जिंदगी बदली जा सकती है, बल्कि दूसरों के लिए भी रोजगार और प्रेरणा के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

मंजीत भारती देवरिया, उत्तर प्रदेश

डिजिटल सेवाओं से आत्मनिर्भरता की नई पहचान

मंजीत भारती ने जन सेवा केंद्र और ऑनलाइन ज़ोन से रोजगार का नया रास्ता बनाया

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के सहयोग से देवरिया के मंजीत भारती ने मंजीत जन सेवा केंद्र एवं ऑनलाइन ज़ोन की स्थापना कर स्वरोजगार का सपना साकार किया। आज उनका केंद्र नागरिकों को विभिन्न डिजिटल एवं ऑनलाइन सेवाएँ उपलब्ध कराने के साथ उन्हें सम्मानजनक आय का स्थायी स्रोत भी प्रदान कर रहा है।

देवरिया के निवासी मंजीत भारती पहले एक निजी संस्थान में अकाउंटेंट के रूप में कार्य करते थे। उन्हें नियमित वेतन तो मिलता था, लेकिन उनका सपना हमेशा अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने का था। वे चाहते थे कि ऐसा कार्य शुरू करें, जिसमें वे स्वतंत्र रूप से काम करने के साथ लोगों की भी मदद कर सकें। सीमित आय और पूंजी के अभाव के कारण यह सपना लंबे समय तक अधूरा रहा। इसी दौरान उन्हें लोगों के माध्यम से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली।

योजना के बारे में अधिक जानने के लिए वे जिला उद्योग केंद्र पहुँचे, जहाँ उन्हें पूरी प्रक्रिया की जानकारी दी गई। इसके बाद उन्होंने योजना के अंतर्गत पंजीकरण कराया और उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक के सहयोग से ऋण प्राप्त किया। इस वित्तीय सहायता ने उनके आत्मविश्वास को नई ऊर्जा दी और उन्होंने पूर्वा चौराहा, किया शोरूम के निकट, देवरिया में 'मंजीत जन सेवा केंद्र एवं ऑनलाइन ज़ोन' की स्थापना की।

व्यवसाय शुरू होने के बाद उन्होंने नागरिकों को विभिन्न ऑनलाइन सरकारी सेवाएँ, आवेदन, प्रमाण-पत्र, डिजिटल भुगतान, दस्तावेज़ प्रिंटिंग एवं अन्य ई-गवर्नेंस सेवाएँ उपलब्ध करानी शुरू कीं। उनकी पारदर्शी कार्यशैली, समयबद्ध सेवा और ग्राहकों के प्रति समर्पण के कारण उनका केंद्र शीघ्र ही स्थानीय लोगों के लिए एक भरोसेमंद डिजिटल सेवा केंद्र बन गया।

आज मंजीत भारती का जन सेवा केंद्र सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उन्हें लगभग ₹15,000 की मासिक आय प्राप्त हो रही है और वे लगातार अपने व्यवसाय का विस्तार कर रहे हैं। उनका मानना है कि डिजिटल सेवाओं का क्षेत्र ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार की अपार संभावनाएँ प्रदान करता है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** मंजीत भारती
- **जनपद:** देवरिया
- **उद्यम:** जन सेवा केंद्र एवं ऑनलाइन डिजिटल सेवाएँ
- **फर्म का नाम:** मंजीत जन सेवा केंद्र एवं ऑनलाइन ज़ोन
- **कार्यस्थल:** पूर्वा चौराहा, किया शोरूम के निकट, देवरिया
- **परियोजना लागत:** ₹2,00,000
- **बैंक:** उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक
- **शुद्ध मासिक आय:** लगभग ₹15,000

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भर बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है स्वयं पर विश्वास और सही अवसर का सदुपयोग।

रेखा देवी आर्या हाथरस, उत्तर प्रदेश

पर्यावरण संरक्षण को बनाया आत्मनिर्भरता का आधार...

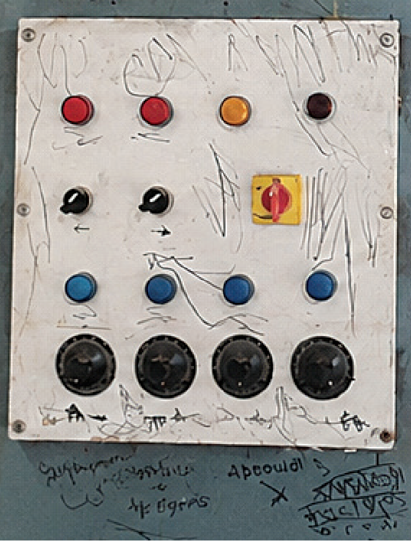

रेखा देवी आर्या ने पेपर दोना-पत्तल निर्माण से महिला उद्यमिता की नई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने हाथरस की रेखा देवी आर्या को पेपर दोना-पत्तल निर्माण इकाई स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों का निर्माण कर प्लास्टिक मुक्त भारत की मुहिम को मजबूती देने के साथ-साथ आठ लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है।

हाथरस की निवासी रेखा देवी आर्या कई वर्षों से दोना-पत्तल के ट्रेडिंग व्यवसाय से जुड़ी हुई थीं। बाजार की मांग और ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझने का उन्हें अच्छा अनुभव था। जब सरकार द्वारा थर्मोकोल और प्लास्टिक से बने दोना-पत्तलों पर प्रतिबंध लगाया गया, तब उन्होंने इस बदलाव को चुनौती नहीं, बल्कि एक नए अवसर के रूप में देखा। उन्होंने निर्णय लिया कि अब पर्यावरण-अनुकूल पेपर बेस्ड दोना-पत्तल का निर्माण कर अपने व्यवसाय को नई दिशा देंगी। हालाँकि निर्माण इकाई स्थापित करने के लिए आवश्यक पूंजी उनके पास उपलब्ध नहीं थी। इसी दौरान उन्हें जिला उद्योग केंद्र, हाथरस के माध्यम से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत विभाग और बैंक के सहयोग से उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई उड़ान दी और उन्होंने आधुनिक पेपर दोना-पत्तल निर्माण इकाई की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से रेखा देवी आर्या ने आवश्यक मशीनें, उपकरण और कच्चे माल की व्यवस्था कर उत्पादन प्रारंभ किया। गुणवत्तापूर्ण, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों के कारण उनके निर्मित पेपर दोना-पत्तलों को बाजार में अच्छी स्वीकार्यता मिली। बढ़ती मांग के साथ उनका व्यवसाय निरंतर विस्तार करता गया और उनकी इकाई स्थानीय स्तर पर एक भरोसेमंद निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित हो गई।

आज उनकी इकाई सफलतापूर्वक संचालित हो रही है और आठ स्थानीय लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा रही है। इस उद्यम ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

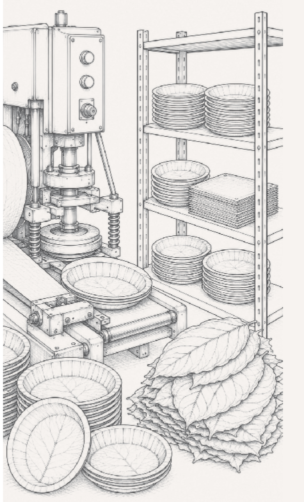

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** रेखा देवी आर्या
- **जनपद:** हाथरस
- **उद्यम:** पेपर दोना-पत्तल निर्माण इकाई
- **कार्यस्थल:** जलेसर रोड, गढ़ी गिरधरा, नगला खान, पोस्ट गंगचौली, हाथरस
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **रोजगार:** 8 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

सही सोच, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और सरकारी योजनाओं के सहयोग से कोई भी युवा या महिला आत्मनिर्भर बनकर रोजगार सृजन और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

ज्योति जाटव जालौन, उत्तर प्रदेश

गृहिणी से सफल उद्यमी बनने तक का प्रेरक सफर

ज्योति जाटव ने 'ज्योति ब्यूटी पार्लर' से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.50 लाख की वित्तीय सहायता ने जालौन की ज्योति जाटव को अपने 'ज्योति ब्यूटी पार्लर' का विस्तार करने का अवसर दिया।

जालौन की निवासी ज्योति जाटव एक साधारण गृहिणी थीं। परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए उनके मन में हमेशा यह इच्छा रहती थी कि वे स्वयं का कोई व्यवसाय शुरू करें, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें और परिवार की आय में भी योगदान दे सकें। सीमित संसाधनों के कारण उनके लिए अपने सपनों को साकार करना आसान नहीं था।

इसी दौरान उन्हें जिला उद्योग केंद्र (डीआईसी) कार्यालय के माध्यम से मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने पर इंडियन बैंक, मुख्य शाखा, उरई से उन्हें ₹4.50 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहयोग ने उनके सपनों को नई दिशा दी।

ऋण की सहायता से ज्योति जाटव ने अपने 'ज्योति ब्यूटी पार्लर' को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया। उन्होंने आवश्यक मशीनें, फर्नीचर और सौंदर्य सेवाओं से संबंधित उपकरण खरीदे, जिससे ग्राहकों को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ उपलब्ध कराना संभव हुआ। उनकी मेहनत, व्यवहार कुशलता और सेवा की गुणवत्ता के कारण उनका पार्लर धीरे-धीरे क्षेत्र की महिलाओं के बीच एक भरोसेमंद पहचान बन गया।

आज उनका व्यवसाय सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। वे लगभग ₹40,000 प्रतिमाह की आय अर्जित कर रही हैं और अपने उद्यम के माध्यम से दो अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान कर रही हैं। एक समय केवल गृहिणी के रूप में घर की जिम्मेदारियाँ संभालने वाली ज्योति आज आत्मनिर्भर महिला उद्यमी बनकर अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** ज्योति जाटव
- **जनपद:** जालौन
- **फर्म का नाम:** ज्योति ब्यूटी पार्लर
- **उद्यम:** ब्यूटी पार्लर एवं ब्यूटी सेवाएँ
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,50,000
- **बैंक:** इंडियन बैंक, मुख्य शाखा, उरई
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

जब आत्मविश्वास, कौशल और सरकारी योजनाओं का सहयोग एक साथ मिल जाए, तो एक गृहिणी भी सफल उद्यमी बनकर न केवल अपनी पहचान बना सकती है, बल्कि दूसरों के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित कर सकती है।

दक्ष कुमार शर्मा कासगंज, उत्तर प्रदेश

मोबाइल तकनीक से गढ़ी आत्मनिर्भरता की नई पहचान

दक्ष कुमार शर्मा ने मोबाइल रिपेयरिंग व्यवसाय से सफलता की नई मिसाल कायम की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.15 लाख की वित्तीय सहायता ने कासगंज के दक्ष कुमार शर्मा को अपना मोबाइल रिपेयरिंग एवं सर्विस सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम न केवल उन्हें सम्मानजनक आजीविका प्रदान कर रहा है, बल्कि एक अन्य युवक को भी रोजगार देकर स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार को नई दिशा दे रहा है।

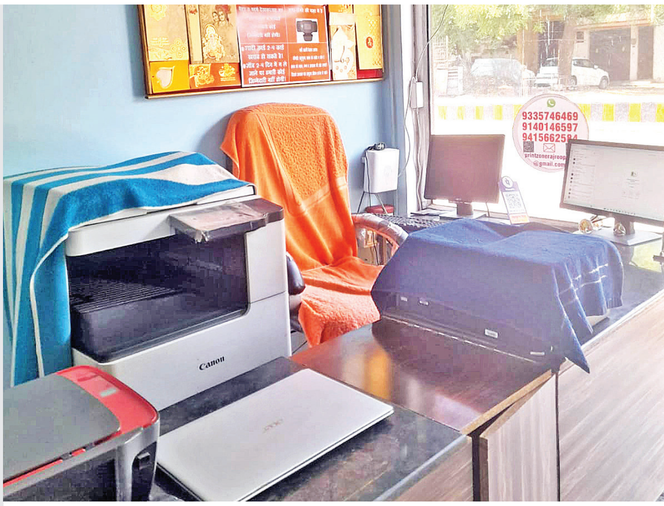

कासगंज के निवासी दक्ष कुमार शर्मा हमेशा से अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर जीवन जीना चाहते थे। उन्हें मोबाइल रिपेयरिंग का अच्छा ज्ञान था और वे इस कौशल को व्यवसाय का रूप देना चाहते थे। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण आधुनिक उपकरणों और आवश्यक संसाधनों के साथ अपना सर्विस सेंटर शुरू करना संभव नहीं हो पा रहा था।

एक दिन विकास भवन में लगे एक विज्ञापन के माध्यम से उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। योजना के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने पूरे विश्वास के साथ ऋण के लिए आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने पर उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, सोरों शाखा से उन्हें ₹4,15,000 का ऋण प्राप्त हुआ। इस वित्तीय सहायता ने उनके सपनों को नई उड़ान दी और उन्होंने अपना मोबाइल रिपेयरिंग एवं सर्विस सेंटर स्थापित किया।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से दक्ष कुमार शर्मा ने आधुनिक रिपेयरिंग उपकरण, आवश्यक मशीनें तथा अन्य तकनीकी संसाधनों की व्यवस्था की। उन्होंने मोबाइल फोन की मरम्मत, सॉफ्टवेयर अपडेट, हार्डवेयर रिपेयरिंग और अन्य तकनीकी सेवाएँ उपलब्ध करानी शुरू कीं। गुणवत्तापूर्ण सेवा, उचित शुल्क और ग्राहकों के विश्वास के कारण उनकी दुकान शीघ्र ही क्षेत्र में एक भरोसेमंद मोबाइल सर्विस सेंटर के रूप में पहचान बनाने लगी।

इस उद्यम के माध्यम से उन्होंने एक अन्य युवक को भी रोजगार उपलब्ध कराया है, जिससे कुल दो लोगों की आजीविका सुनिश्चित हुई है। वे भविष्य में अपने व्यवसाय का विस्तार कर मोबाइल एक्सेसरीज़ और अन्य डिजिटल सेवाओं को भी जोड़ने की योजना बना रहे हैं, ताकि अधिक लोगों को रोजगार और बेहतर सेवाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** दक्ष कुमार शर्मा
- **जनपद:** कासगंज
- **कार्यस्थल:** मोहल्ला कटरा मठ, सोरों, जनपद कासगंज
- **उद्यम:** मोबाइल रिपेयरिंग एवं सर्विस सेंटर
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹4,15,000
- **बैंक:** उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, सोरों शाखा
- **रोजगार:** 2 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

कौशल सबसे बड़ी पूंजी तब बनता है, जब उसे अवसर और वित्तीय सहयोग मिले। दृढ़ संकल्प व सरकारी योजनाएँ युवाओं को सफल उद्यमी बनाती हैं।

रचना पांडेय | ललितपुर, उत्तर प्रदेश

सफलता का खूबसूरत सफर

रचना ने ‘रचना ब्यूटी पार्लर’ से आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम की

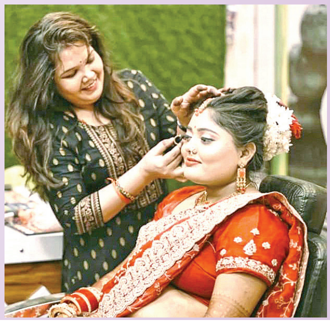

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹5 लाख की वित्तीय सहायता ने ललितपुर की रचना पांडेय को अपने ‘रचना ब्यूटी पार्लर’ का विस्तार करने का अवसर दिया। आज उनका पार्लर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है, उनकी आय दोगुनी हो चुकी है और वे महिला आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक मिसाल बन गई हैं।

ललितपुर की निवासी रचना पांडेय का जीवन संघर्ष, सीखने की लगन और आत्मविश्वास का प्रेरणादायक उदाहरण है। एक समय ऐसा था जब वे अपने परिवार के साथ गाँव में रहकर घरेलू कार्यों में व्यस्त रहती थीं। समय के साथ बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारियाँ बढ़ीं, जिसके कारण परिवार को ललितपुर शहर में आकर बसना पड़ा। नई जगह पर उन्होंने यह संकल्प लिया कि वे परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों में भी अपना योगदान देंगी।

इसी सोच के साथ रचना पांडेय ने ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण लिया। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने अपने पति के सहयोग से किराये के मकान के एक छोटे से कमरे में ‘रचना ब्यूटी पार्लर’ की शुरुआत की। शुरुआती दौर आसान नहीं था। सीमित संसाधनों, कम ग्राहकों और आर्थिक चुनौतियों के बीच उन्होंने लगातार मेहनत की, नई तकनीकें सीखीं और अपने काम की गुणवत्ता को बेहतर बनाती रहीं। उनके पति का सहयोग इस पूरे सफर में उनकी सबसे बड़ी ताकत बना।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र, ललितपुर पहुँचकर योजना की विस्तृत जानकारी प्राप्त की और आवेदन किया। आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ललितपुर शाखा से उन्हें ₹5 लाख का ऋण प्राप्त हुआ। इस आर्थिक सहयोग ने उनके व्यवसाय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया।

ऋण की सहायता से रचना पांडेय ने अपने पार्लर में आधुनिक मशीनें, फर्नीचर और नवीनतम सौंदर्य उपकरणों की व्यवस्था की। बेहतर वातावरण और उन्नत सेवाओं के कारण ग्राहकों की संख्या लगातार बढ़ने लगी।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** रचना पांडेय
- **जनपद:** ललितपुर
- **फर्म:** रचना ब्यूटी पार्लर
- **उद्यम:** ब्यूटी पार्लर एवं ब्यूटी सेवाएँ
- **परियोजना लागत:** ₹5,00,000
- **वितरित ऋण:** ₹5,00,000
- **बैंक:** सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ललितपुर शाखा
- **मासिक आय:** लगभग ₹35,000–₹40,000

इस सफ़र से सीख...

सफलता परिस्थितियों की मोहताज नहीं होती, बल्कि सीखने की का परिणाम होती है। जब परिवार का सहयोग और सरकारी योजनाओं का संबल साथ हो, तो हर महिला आत्मनिर्भर बनकर अपने सपनों को नई उड़ान दे सकती है।

श्यामा शर्मा लखनऊ, उत्तर प्रदेश

पशु प्रेम को बनाया सफल उद्यम

श्यामा शर्मा ने पेट ग्रूमिंग सेवा से आत्मनिर्भरता की नई पहचान बनाई

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹4.25 लाख की वित्तीय सहायता ने लखनऊ की श्यामा शर्मा को आधुनिक पेट ग्रूमिंग सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज उनका उद्यम पालतू पशुओं की ग्रूमिंग, स्वास्थ्य देखभाल और पोषण संबंधी सेवाएँ प्रदान कर रहा है तथा दो लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के साथ प्रतिमाह ₹50,000–₹60,000 की आय अर्जित कर रहा है।

लखनऊ की निवासी श्यामा शर्मा ने बदलती जीवनशैली और पालतू पशुओं की बढ़ती देखभाल की आवश्यकता को एक नए व्यावसायिक अवसर के रूप में पहचाना। उनका उद्देश्य ऐसा आधुनिक केंद्र स्थापित करना था, जहाँ पालतू पशुओं को एक ही स्थान पर ग्रूमिंग, स्वास्थ्य संबंधी परामर्श और बेहतर देखभाल की सुविधाएँ उपलब्ध हो सकें। लेकिन पर्याप्त पूंजी के अभाव में यह सपना साकार करना आसान नहीं था।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया। आवेदन से लेकर ऋण स्वीकृति तक जिला उद्योग केंद्र और बैंक का उन्हें पूरा सहयोग मिला। योजना के तहत ₹4,25,000 का ऋण प्राप्त होने के बाद उन्होंने लखनऊ के गोमती ग्रीन्स, गोमती नगर एक्सटेंशन में आधुनिक पेट ग्रूमिंग सेंटर की स्थापना की।

ऋण से प्राप्त धनराशि के माध्यम से उन्होंने ग्रूमिंग के लिए आधुनिक उपकरण, आवश्यक संसाधन और ग्राहकों के लिए बेहतर सुविधाओं की व्यवस्था की। आज उनके केंद्र में पालतू पशुओं के ग्रूमिंग, साफ-सफाई, कोट केयर, डाइट संबंधी परामर्श तथा आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सक (डॉक्टर) की सेवाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं। गुणवत्तापूर्ण सेवाओं और पशुओं के प्रति संवेदनशील व्यवहार के कारण उनका केंद्र कम समय में ही पालतू पशु मालिकों के बीच एक भरोसेमंद पहचान बना चुका है।

आज श्यामा शर्मा का उद्यम सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। उन्हें प्रतिमाह लगभग ₹50,000 से ₹60,000 की आय प्राप्त हो रही है तथा उनके साथ दो लोगों को रोजगार भी मिला है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी**: श्यामा शर्मा
- **जनपद**: लखनऊ
- **उद्यम**: पेट ग्रूमिंग सेंटर
- **कार्यस्थल**: गोमती ग्रीन्स, गोमती नगर एक्सटेंशन, लखनऊ
- **परियोजना लागत**: ₹5,00,000
- **वितरित ऋण**: ₹4,25,000
- **वित्तपोषण बैंक**: गोमती ग्रीन्स, गोमती नगर एक्सटेंशन शाखा*
- **रोजगार सृजन**: 2 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय**: लगभग ₹50,000–₹60,000

इस सफ़र से सीख...

नवाचार आधारित व्यवसाय ने आत्मनिर्भरता, रोजगार सृजन और बेहतर सेवाओं के नए अवसर सृजित किए।

लक्ष्मीना महराजगंज, उत्तर प्रदेश

ई-रिक्शा से आत्मनिर्भरता की नई राह...

लक्ष्मीना ने स्वरोजगार अपनाकर सम्मानजनक जीवन की नई शुरुआत की

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली ₹1.98 लाख की वित्तीय सहायता ने महराजगंज की लक्ष्मीना को ई-रिक्शा संचालन के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया। आज वे स्वयं सम्मानजनक आजीविका अर्जित कर अपने परिवार की आर्थिक मजबूती का आधार बनी हैं।

महराजगंज जनपद के ग्राम कोहड़वल, करमहवा, नौतनवा की निवासी लक्ष्मीना आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करना चाहती थीं। सीमित संसाधनों के कारण उनके लिए स्वयं का कोई रोजगार शुरू करना आसान नहीं था। वे ऐसा कार्य करना चाहती थीं, जिससे नियमित आय प्राप्त हो और सम्मान के साथ अपने परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकें। इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और आवश्यक प्रक्रिया पूरी होने के बाद ₹1,98,000 का ऋण प्राप्त किया। इस वित्तीय सहायता ने उनके जीवन को नई दिशा दी और उन्होंने ई-रिक्शा खरीदकर स्वरोजगार की शुरुआत की।

ऋण से प्राप्त सहायता के माध्यम से लक्ष्मीना ने अपना ई-रिक्शा खरीदा और स्थानीय क्षेत्र में यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक और समयबद्ध परिवहन सेवा उपलब्ध करानी शुरू की। अपनी मेहनत, ईमानदारी और लगन के बल पर उन्होंने कम समय में लोगों का विश्वास अर्जित किया। आज उनका ई-रिक्शा नियमित रूप से संचालित हो रहा है और यही उनके परिवार की आजीविका का प्रमुख आधार बन चुका है।

लक्ष्मीना का मानना है कि महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल आय का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का आधार भी है। वे कहती हैं कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान ने उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर दिया, जिसके लिए वे माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी तथा योजना से जुड़े सभी जिला एवं बैंक अधिकारियों की हृदय से आभारी हैं।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी**: लक्ष्मीना
- **जनपद**: महराजगंज
- **उद्यम**: ई-रिक्शा संचालन
- **कार्यस्थल**: ग्राम कोहड़वल, करमहवा, नौतनवा, महराजगंज
- **परियोजना लागत**: ₹2,00,000
- **वितरित ऋण**: ₹1,98,000
- **रोजगार सृजन**: 1 व्यक्ति

इस सफ़र से सीख...

आत्मनिर्भरता की शुरुआत छोटे कदमों से होती है। दृढ़ संकल्प, मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही लाभ किसी भी व्यक्ति—विशेषकर महिलाओं—को आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर सम्मानजनक जीवन की नई राह दिखा सकता है।

दुर्गेश यादव मऊ, उत्तर प्रदेश

तकनीकी कौशल से मिली आत्मनिर्भरता की नई ऊर्जा

दुर्गेश यादव ने बैटरी एवं इनवर्टर रिपेयरिंग व्यवसाय से बदली अपनी जिंदगी

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के तहत मिली वित्तीय सहायता ने मऊ के दुर्गेश यादव को बैटरी एवं इनवर्टर रिपेयरिंग सेंटर स्थापित करने का अवसर दिया। आज वे अपनी तकनीकी दक्षता के बल पर सम्मानजनक आजीविका अर्जित कर रहे हैं और बेरोजगारी से आत्मनिर्भरता तक का प्रेरणादायक सफर तय कर चुके हैं।

मऊ के निवासी दुर्गेश यादव बेरोजगारी की समस्या से जूझते रहे। उनके पास कौशल था, लेकिन आर्थिक संसाधनों के अभाव में वे अपना व्यवसाय शुरू नहीं कर पा रहे थे। रोजगार न होने के कारण वे परिवार पर निर्भर थे और आत्मनिर्भर बनने की इच्छा उन्हें लगातार प्रेरित करती रही।

इसी दौरान उन्हें मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। उन्होंने जिला उद्योग कार्यालय, मऊ से संपर्क कर आवश्यक दस्तावेजों के साथ आवेदन किया। विभाग के मार्गदर्शन और सहयोग से उनका ऋण स्वीकृत हुआ, जिससे उन्हें बैटरी एवं इनवर्टर रिपेयरिंग सेंटर स्थापित करने का अवसर मिला। बैटरी मरम्मत, इनवर्टर रिपेयरिंग तथा संबंधित तकनीकी सेवाएँ शुरू कीं। गुणवत्तापूर्ण कार्य, समय पर सेवा और ईमानदार व्यवहार के कारण उनका व्यवसाय आगे बढ़ा स्थानीय विश्वास मजबूत हुआ।

आज उनका व्यवसाय सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। जहाँ पहले उनकी कोई नियमित आय नहीं थी, वहीं अब वे लगभग ₹18,000 प्रतिमाह की आय अर्जित कर रहे हैं। इस स्वरोजगार ने उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ आत्मसम्मान भी दिया है। भविष्य में वे अपने व्यवसाय का विस्तार कर तकनीकी सेवाएँ जोड़ने और ग्राहकों तक सेवाएँ पहुँचाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे हैं।

दुर्गेश यादव मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस योजना ने उन्हें केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि सम्मानपूर्वक अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर भी दिया। वे युवाओं से आग्रह करते हैं कि यदि उनके पास कोई कौशल है, तो सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर उसे सफल उद्यम में निस्संदेह अवश्य बदलें।

एक नज़र में...

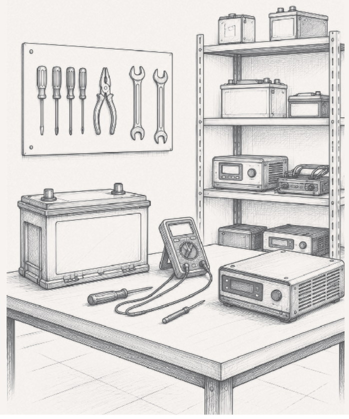

- **लाभार्थी**: दुर्गेश यादव
- **जनपद**: मऊ
- **उद्यम**: बैटरी एवं इनवर्टर रिपेयरिंग सेंटर
- **रोजगार सृजन**: 1 व्यक्ति
- **शुद्ध मासिक आय**: लगभग ₹18,000

इस सफ़र से सीख...

बेरोजगारी अंत नहीं, बल्कि नई शुरुआत का अवसर हो सकती है। कौशल, मेहनत और सरकारी योजनाओं का सही सहयोग किसी भी युवा को आत्मनिर्भर बनाकर सम्मानजनक जीवन की नई दिशा दे सकता है।

राकेश कुमार गाजीपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा से आत्मनिर्भरता तक का प्रेरक सफर

राकेश कुमार ने कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र से युवाओं के भविष्य को दी नई दिशा

आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने का सपना अधूरा था। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत ₹3 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त कर राकेश कुमार ने अपना कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर शुरू किया। आज वे युवाओं को डिजिटल कौशल प्रदान कर आत्मनिर्भरता की प्रेरक मिसाल बन चुके हैं।

मैं गाजीपुर जनपद के अगस्ता सलामतपुर का निवासी हूँ। हमेशा से मेरा विश्वास था कि शिक्षा और डिजिटल कौशल ही युवाओं के भविष्य को नई दिशा दे सकते हैं। मेरा सपना था कि अपने क्षेत्र में एक ऐसा कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करूँ, जहाँ युवाओं को आधुनिक तकनीकी शिक्षा मिले और उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हों। लेकिन सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण इस सपने को साकार करना संभव नहीं हो पा रहा था।

इसी दौरान मुझे मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की जानकारी मिली। मैंने योजना के अंतर्गत आवेदन किया और पंजाब नेशनल बैंक, तुलसीसागर शाखा से ₹3 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। इस सहयोग ने मेरे सपनों को नई उड़ान दी। प्राप्त राशि से मैंने आवश्यक कंप्यूटर, फर्नीचर और अन्य संसाधनों की व्यवस्था कर अपना कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किया।

शुरुआत में विद्यार्थियों तक अपनी सेवाओं की जानकारी पहुँचाना और उनका विश्वास जीतना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, अनुशासित वातावरण और विद्यार्थियों के बेहतर परिणामों ने मेरे संस्थान को नई पहचान दिलाई। यहाँ अनेक युवा डिजिटल शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर की मजबूत नींव रख रहे हैं। इस उद्यम से मुझे सम्मानजनक आय प्राप्त हो रही है और लगभग ₹1 लाख प्रतिमाह का कारोबार विकसित हो चुका है।

मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि मैं केवल स्वयं आत्मनिर्भर नहीं बना, बल्कि दो अन्य लोगों को भी रोजगार उपलब्ध करा सका हूँ। भविष्य में मेरा लक्ष्य अपने प्रशिक्षण केंद्र में और अधिक व्यावसायिक एवं डिजिटल कौशल आधारित पाठ्यक्रम जोड़ना, आधुनिक तकनीकों को शामिल करना तथा अधिक से अधिक ग्रामीण युवाओं को रोजगारोन्मुख शिक्षा उपलब्ध कराना है।

एक नज़र में...

- **लाभार्थी:** राकेश कुमार
- **जनपद:** गाजीपुर
- **उद्यम:** कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर
- **कार्यस्थल:** अगस्ता सलामतपुर, पोस्ट–फतेहुल्लाहपुर, गाजीपुर
- **परियोजना लागत:** ₹3.00 लाख
- **वितरित ऋण:** ₹3.00 लाख
- **बैंक:** पंजाब नेशनल बैंक, तुलसीसागर शाखा
- **रोजगार सृजन:** 2
- **अनुमानित मासिक आय:** लगभग ₹1,00,000

इस सफ़र से सीख...

सही अवसर, समय पर मिला सहयोग और निरंतर प्रयास किसी भी युवा के सपनों को सफल उद्यम में बदल सकते हैं।

देहली
मुबारकपुर
पंचायत सहायक
eDistrict Home page
Inbox
Status/Ack. Receipt
Pending Applications
MIS Reports
Family e-Passbook (Assisted Discovery Platform-ADP)
Lenovo

TRI SQUARE
1/140, Vivek Khand,
Gomti Nagar,
Lucknow – 226010
E-mail : info@trif.in
Web : www.trif.in

उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन निदेशालय
उत्तर प्रदेश सरकार

आयुक्त एवं निदेशक उद्योग
उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन निदेशालय, कानपुर
मिशन निदेशक, मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान मिशन कार्यालय,
8 कैण्ट रोड, कैसरबाग, लखनऊ-226001
ई-मेल: cmmyuva@gmail.com | वेबसाइट: https://cmyuva.org.in